शनि के उपाय

ज्योतिष शास्त्र में शनि को प्राकृतिक अशुभ या क्रूर ग्रह मानकर इसकी टेढ़ी-मेढ़ी सीधी चालों से भय माना जाता रहा है। लेकिन कई लग्नों वाले जातकों पर इसका चमत्कारिक रूप से शुभ प्रभाव भी पड़ता है



शनि के उपाय एवम् टोटके

Shani ke Upay Awam Totke

आपकी कुण्डली में यदि शनि अशुभ स्थिति में है और निरन्तर अशुभ फल प्रदान कर रहा है तो कौन से उपाय करना चाहिए। शनि के प्रकोप से जातक अपना बचाव कैसे करे?...... आदि समस्याओं का समाधान प्रस्तुत पुस्तक में दिया गया है जातक इस पुस्तक में दिये गये चमत्कारी उपायों का प्रयोग करके शुभत्व प्राप्त कर सकते हैं।

अमरजीत यादव

विश्व प्रसिद्ध धार्मिक एवं ज्योतिष की पुस्तकों के सिद्धहस्त लेखक

प्रकाशक

☎ 2212696

महामाया पब्लिकेशन्ज़

नज़दीक चौक अड्डा टांडा,

जालन्धर-8

मूल्य 40/-

Published by :

MAHAMAYA PUBLICATIONS

MAHAMAYA PUBLICATIONS

Near Chowk Adda Tanda,
Jalandhar - 144 008 (Pb.)
Phone : 2212696

Writer :

अमरजीत यादव

विश्व प्रसिद्ध धार्मिक एवं ज्योतिष की पुस्तकों के सिद्धहस्त लेखक

विशेष सहयोग :

विनीत शर्मा (Astrologer)

दुकान न. 2/17, मोहल्ला न. 3,
मूल राज रोड, जालन्धर छावनी
फोन : 0181-2262837



Typesetting by :

Sunshine Computers
Jalandhar City.

Printed by :

Rachna Printing Press
Jalandhar City.

शनि से आतंकित क्यों ?

शनि का नाम सुनकर ही लोगों के अन्दर एक प्रकार का अनजाना सा भय जाग उठता है। शनि को लोग अत्यन्त क्रूर मानते हैं। आम जनता में यह धारणा बन चुकी है कि शनि की अशुभ दृष्टि जिस पर पड़ती है उसका सर्वनाश हो जाता है। अनेक प्रकार के दुःख, रोग-व्याधि, धन-हानि, लड़ाई-झगड़े आदि होने लगते हैं किन्तु यह पूर्ण सत्य नहीं है क्योंकि कोई भी देवता क्रूर नहीं होता। हां यह अवश्य है कि मानव यदि अनुचित कर्म करता है तो उसे देवता प्रताड़ित करते हैं। प्रताड़ित करने का उद्देश्य यह होता है कि वह (व्यक्ति) अनुचित कर्मो को छोड़कर सत्कर्म करे।

ठीक उसी प्रकार ग्रहों की स्थिति है। सौर मण्डल में नौ ग्रह माने गये हैं। उन नौ ग्रहों में एक 'शनिग्रह' भी है। यह अपनी भीषणता के लिए जगत विख्यात है। यही नहीं कि यह जातक को हर प्रकार से हानि ही देता है बल्कि यह कहना उचित होगा कि जातक के जन्म के समय शनिग्रह की जो स्थिति (शुभ या अशुभ) होगी उसी अनुसार जातक को फल प्रदान करता है। यदि जातक की जन्मकुण्डली में शनि शुभ भाव में विराजमान हो तो जातक को राजा बना देता है। धन-सम्पत्ति मोटर-वाहन, मकान, सन्तान आदि सभी से परिपूर्ण कर देता है। अशुभ होने पर दुःख, धन-हानि, रोग, दरिद्रता आदि अनेक प्रकार की विषम स्थितियां उत्पन्न कर देता है।

उपरोक्त विषम स्थितियां उत्पन्न होने पर मानव घबराहट और चिन्ता से ग्रस्त हो जाता है। ऐसी विकट स्थिति से उबरने हेतु ही मैंने ज्योतिष की अनेक दुर्लभ पुस्तकों का अध्ययन किया और उन्हीं पुस्तकों से संकलन करके 'शनि के उपाय एवम् टोटके' नामक इस पुस्तक का सृजन किया। शनि के कोप से बचाव हेतु इस पुस्तक में ज्योतिषीय विद्या पर आधारित अनेक चमत्कारिक उपाय एवम् टोटके दिये गये हैं जिन्हें उपयोग में लाकर आप शनि के प्रकोप से मुक्त हो सकते हैं। **प्रस्तुत पुस्तक, ज्योतिष की दुर्लभ पुस्तकों से संकलित है।**

किसी प्रकार के सहयोग एवम् परामर्श की आवश्यकता पड़ने पर मुझसे भी पत्राचार कर सकते हैं।

विशेष सहयोग
विनीत शर्मा
दुकान न. 2/17, मोहल्ला न. 3,
मूल राज रोड, जालन्धर छावनी

आपका
अमरजीत यादव
VPO. जमुहाई
जौनपुर (उ. प्र.)
PIN 222001

विषय सूची

ग्रहों की चाल और आपका जीवन

सौरमण्डल से स्थित नवग्रहों, नक्षत्रों तथा राशियों का मानव जीवन पर पूरा प्रभाव पड़ता है। इतना ही नहीं, ग्रहों तथा राशियों का मानव जीवन पर पूरा प्रभाव पड़ता है। इतना ही नहीं, ग्रहों के अनुकूल एवम् प्रतिकूल प्रभाव के कारण ही वर्षा, तूफान, महामारी, अकाल एवम् अन्य अनेक प्रकार की सुखद तथा दुःख पूर्ण घटनाएं घटित होती हैं। नक्षत्रों के प्रभाव से ही मानव जीवन में उतार-चढ़ाव आता है।

बालक (बच्चे) का जन्म जिस समय होता है, उस समय कौन सा काल था, किस लग्न में बालक का जन्म हुआ, उस समय का मुहूर्त, राशि, काल आदि की गणना करके ज्योतिषाचार्य बालक अथवा उस व्यक्ति की 'जन्म कुण्डली' बनाते हैं। जन्म कुण्डली के लिए निश्चित समय (जन्म-समय) तिथि (तारीख) का ज्ञान होना परम आवश्यक है अन्यथा 'कुण्डली' त्रुटिपुर्ण हो सकती है इसमें ज्यतिषाचार्य (कुण्डली बनाने वाले विद्वान का कोई दोष न होगा। कुण्डली देखकर यह ज्ञात हो जाता है कि जातक (जिसकी कुण्डली है) पर कौन सा ग्रह उसके सम्पूर्ण जीवन में विशेष प्रभावी होगा।

प्रश्न बनता है कि—'जन्म-कुण्डली' क्या है ?

पाठकों-'जन्म-कुण्डली' वह दर्पण है जो सम्बन्धित व्यक्ति के भूत, भविष्य और वर्तमान-अर्थात् तीनों कालों को उजागर करके दर्पण के मानिन्द (भांति) उस व्यक्ति के सामने रख देते हैं कि किस समय तुम आर्थिक स्थिति सम्पन्न होंगे, कब तुम्हारा भाग्योदय होगा, कब तुम धनवान बनोगे, कौन सा ग्रह तुम्हारे सम्पूर्ण जीवन में विशेष प्रभावी रहेगा, कब तुम्हारे सामने कठिन घड़ियां आयेंगी तथा तुम्हारी आयु कितनी है ? आदि सैकड़ों-हजारों सवालों के जवाब जन्म-कुण्डली से मिलेंगे किन्तु शुद्ध और सम्पूर्ण विवरण जानने के लिए कुण्डली का शुद्ध होना अति आवश्यक है।

पाठक बन्धुओं के मन यह जिज्ञासा उत्पन्न होगी कि क्या जन्म-कुण्डली भी अशुद्ध होती है ?

जी हां! जन्म-कुण्डली भी अशुद्ध होती है। जन्म-कुण्डली अशुद्ध होने के निम्नलिखित कारणों में से कोई एक कारण हो सकता है।

1. जन्म समय, जन्मस्थान, जन्मतिथि, वर्ष आदि का सही ज्ञान न होना जैसे किसी बालक का जन्म (जिसकी कुण्डली बनवाना चाहते हैं या बनवा चुके हैं) कितने बजकर कितने मिनट पर हुआ। उस दिन कौन सी तिथि (DATE) थी। जन्म-स्थान का सही निर्णय नहीं है तो भी कुण्डली निर्माण में अशुद्धता आती है।

2. अल्पज्ञानी अथवा अज्ञानी ज्योतिषाचार्य से कुण्डली बनवाना, क्योंकि आज के दौर में राह चलते हुए आपको अनेको ऐसे ज्योतिष-कार्यालय के बोर्ड लगे हुए दिखायी देंगे जो लोगों को लूटकर अपनी झोली भरने का धंधा करते हैं। कुछ सही ज्योतिष-विद्वान हैं भी तो उनकी पहचान कर पाना कठिन हैं क्योंकि जो ठगने वाले ज्योतिषी हैं वे कुण्डली बनवाने के उद्देश्य से आये व्यक्ति को अपनी मीठी-मीठी बातों के झांसे में लेकर ठग लेते हैं और बेचारे विद्वान ज्योतिषी के पास वे पहुंच ही नहीं पाते

3. जन्म-कुण्डली जब भी बनवायें तो किसी योग्य ज्योतिषाचार्य से ही बनवायें जिससे कि जन्म कुण्डली शुद्ध और खरी हो जो आपका भविष्य दर्शन कराये।

ग्रह बोलते हैं (STARS TELL)

ज्योतिष के कथानुसार 'ग्रह बोलते हैं'—क्या वास्तव में ग्रह बोलते हैं यह बहुत सी अहम प्रश्न है, जिसका जवाब है-हां! ग्रह बोलते हैं। अब सवाल बनता है—कैसे ?

जीवन में अनेक प्रकार की घटनाएं घटित होती है। कई उतार-चढ़ाव आते हैं। जीवन-मरण, लाभ-हानि आदि सभी कुछ के विषय में नभ-मण्डल (आकाशीय) में स्थित तारे-सितारे और नक्षत्र ही तो बताते हैं। कभी-कभी लोगों के जीवन में किसी दिन कोई अप्रिय घटना घटित हो जाती है या एक्सीडेन्ट में घायल हो जाता है तो अनायास ही उसके मुंह से निकल जाता है कि आज के ग्रह खराब थे। यह अनायास नहीं निकलता बल्कि सत्यता स्वत: मुख से उद्‌भाषित होती है। ग्रहों का प्रभाव राशियों पर पूर्णरूप से पड़ता है जिसके अनुसार मानव का दैनिक जीवन सुखमय एवम् अस्त-व्यस्त होता है। ग्रहों की चाल और तारों-सितारों की स्थिति पर ही मनुष्य का जीवन प्रभावित होता है। समयानुसार किसी व्यक्ति के लिए जो ग्रह भाग्यशाली होता है, वही ग्रह दूसरे मनुष्य के लिए शुभ नहीं होता। कुण्डली के खानों में स्थिति के अनुसार ही ग्रह फलाफल देते हैं।

नोट—पाठकों—

कुण्डली में शनि ग्रह की शुभ-अशुभ स्थिति, क्रूर-दृष्टि, आदि के विषय में चर्चा करने से पहले ग्रह-नक्षत्र, ग्रहों की स्थिति, भाव, राशियों आदि के विषय में लिखना उचित समझते हैं जिससे कि हमारे पाठकों को, जिन्हें ज्योतिष के विषय में ज्ञान नहीं है, वे भी आसानी से इस पुस्तक की गूढ़ता और रहस्य को भली-भांति

समझ सके और उपाय कर सकें। इस पुस्तक के लेखन का मूल उद्देश्य यही है कि आपको शनिग्रह दोष निवारण हेतु किसी ज्योतिषाचार्य या तांत्रिक आदि के पास जाने की आवश्यकता न महसूस हो। आप स्वयं 'शनिग्रह दोष निवारण' कर सकें।

ग्रह-नक्षत्रों का ज्ञान

ग्रहों एवम् नक्षत्रों आदि के विषय में ज्ञान कराये बिना यदि पाठकों को सीधे विषय वस्तु (MAIN TOPIC) पर ले जाया जाये तो यह उचित नहीं होगा क्योंकि ज्योतिष की गूढ़ता उनके समझ में नहीं आयेगी इसीलिए पाठकों की सुविधा हेतु हम ग्रह-नक्षत्रों के विषय में लिख रहे हैं—

ग्रह नौ होते हैं—

1. सूर्य 2. चन्द्र 3. मंगल 4. बुध 5. वृहस्पति 6. शुक्र 7. शनि 8. राहु 9. केतु

राहु एवम् केतु भारतीय ज्योतिष के अनुसार छाया ग्रह माने गये हैं।

ग्रहों की स्थिति

भारतीय ज्योतिष के अनुसार ग्रहों का स्वतंत्र अस्तित्व है। पृथ्वी से बहुत दूर होने के बाद भी ये पृथ्वी वासियों पर अपना पूरा प्रभाव छोड़ते हैं। ऊपर वर्णित नौ ग्रहों में से चन्द्र, राहु तथा केतु को छोड़कर बाकी सभी ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं। ग्रहों का भ्रमण पश्चिम से पूर्व की ओर होता है किन्तु राहु और केतु हमेशा उल्टे चलते है। सूर्य और चन्द्रमा कभी उल्टी दिशा में नहीं चलते और न ही कभी अस्त होते हैं। क्योंकि सूर्य अग्नि ग्रह है और ग्रहों का राजा भी है तथा चन्द्र मंत्री है। चन्द्र को सूर्य से कम माना गया है फिर भी ज्योतिष में इसकी शक्ति उच्च कोटि की है किन्तु सूर्य के निकट आकर चन्द्र की शक्ति घट जाती है। शेष अन्य ग्रह सूर्य के निकट आने पर अस्त हो जाते हैं और सूर्य से पांचवें भाव में आने पर वक्री हो जाते है किन्तु चन्द्र वक्री नहीं होता। वक्री होने का तात्पर्य है कि सूर्य के प्रकाश के निकट पहुँचने पर सीधा चलने के बजाय उल्टा चलना शुरु कर देते हैं। जब कोई ग्रह सूर्य से 15 अंश के कोण पर पहुँचता है तो वह अस्त हो जाता है किन्तु जब कोई ग्रह वक्री होता है तो उसका कार्यकाल बढ़ जाता है।

इन नौ ग्रहों में सभी शुभ ग्रह की श्रेणी में नहीं आते, इनके कार्यानुसार ग्रहों को भारतीय ज्योतिष ने श्रेणी विशेष में रखा है।

शुभ ग्रह-बुध, वृहस्पति, शुक्र एवम् पूर्ण चन्द्र शुभ ग्रह माने गये हैं।

पाप ग्रह-मंगल, शनि, राहु-केतु तथा क्षीण चन्द्र पाप ग्रह हैं।

क्रूर ग्रह-सूर्य।

बुध ग्रह की विशेषता-यह स्वभाव से शुभ ग्रह है किन्तु इसकी कुछ अलग भी विशेषताएं हैं। यह शुभ ग्रहों से साथ शुभ तथा पाप ग्रहों के साथ पाप ग्रह बन जाता है।

ग्रह तत्व

ग्रह	तत्व
सूर्य	अग्नि
चन्द्रमा	जल
मंगल	अग्नि
शनि	वायु
बुध	पृथ्वी
वृहस्पति	आकाश
शुक्र	जल

ग्रहों के लिंग भेद

पुरुष ग्रह	स्त्री ग्रह	नपुंसक ग्रह
सूर्य	चन्द्र	बुध
मंगल	शुक्र	शनि
वृहस्पति		

ग्रहों की दिशा

सूर्य-पूर्व दिशा का स्वामी है।
शनि-पश्चिम दिशा का स्वामी है।
बुध-उत्तर दिशा का स्वामी है।
मंगल-दक्षिण दिशा का स्वामी है।
शुक्र-अग्नि कोण का स्वामी है।
राहु-नैत्रऋत्य कोण का स्वामी है।
चन्द्रमा-वायु कोण का स्वामी है।
गुरु-ईशान कोण का स्वामी है।

ग्रह-लोक

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार पूर्व जन्म में जातक किस लोक में था तथा मृत्यु के पश्चात् किस लोक में जायेगा। इसका विचार करने के लिए ग्रहों के लोकों का उपयोग होता है।

गुरु-स्वर्ग का अधिपति

शुक्र-पितृलोक का अधिपति

चन्द्रमा-पाताल लोक का अधिपति

बुध-मृत्युलोक का अधिपति

मंगल-नर्क का अधिपति

सूर्य-नर्क का अधिपति

शनि-विनाश का अधिपति

राशियों के स्वामी ग्रह

राशियाँ	स्वामी ग्रह
मेष	मंगल
वृष	शुक्र
मिथुन	बुध
कर्क	चन्द्रमा
सिंह	सूर्य
कन्या	बुध
तुला	शुक्र
वृश्चिक	मंगल
धनु	गुरु
मकर	शनि
कुम्भ	शनि
मीन	गुरु

राशियों के अनुसार अक्षर तालिका

क्रम सं.	राशि	राशि अक्षर
1.	मेष	चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ
2.	वृष	इ, ऊ, ए, ओ, वा, वी बू, वे, वो
3.	मिथुन	का, की, कू, घ, ङ, छ, के को, हा
4.	कर्क	ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो
5.	सिंह	मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे
6.	कन्या	हो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे,पो
7.	तुला	रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते
8.	वृश्चिक	तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू
9.	धनु	ये, यो, भो, भी, भू, धा, फा, ढा, भ
10.	मकर	जा, जे, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी
11.	कुम्भ	गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा
12.	मीन	दो, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची

नक्षत्र और उनके स्वामी ग्रह

क्रम सं.	नक्षत्र	स्वामी ग्रह	नामाक्षर
1.	अश्विनी	केतु	चू, चे, चो, ला
2.	भरणी	शुक्र	ली, लू, ले, लो
3.	कृत्तिका	सूर्य	अ, इ, ऊ, ए
4.	रोहिणी	चन्द्रमा	ओ, वा, वी, वू
5.	मृगशिरा	मंगल	वे, वो, का, की
6.	आर्द्रा	राहु	कू, घ, ड, छ
7.	पुनर्वसु	गुरु	के, को, हा, ही
8.	पुष्य	शनि	हू, हे, हो, ज
9.	अश्लेषा	बुध	डी, डू, डे, डो
10.	मघा	केतु	मा, मी, मू, मे
11.	पूर्वा फाल्गुनी	शुक्र	मो, टा, टी, टू
12.	उत्तर फा.	सूर्य	टे, टो, पा, षी
13.	हस्त	चन्द्रमा	पू, ष, ण, ठ
14.	चित्रा	मंगल	पे, पो, रा, री
15.	स्वाति	राहु	र, रे, रो, ता
16.	विशाखा	गुरु	ति, तू, ते, तो
17.	अनुराधा	शनि	ना, नी, नू, ने
18.	ज्येष्ठा	बुध	नो, या, यि, यू
19.	मूल	केत	चे, चो, भा, भि
20.	पूर्वाषाढ़ा	शुक्र	भू, ध, फ, ढ़
21.	उत्तराषाढ़ा	सूर्य	भे, भो, ज, जि
22.	श्रवण	चन्द्रमा	खि, खू, खे, खो
23.	घनिष्ठा	मंगल	ग, गी, गू, गे
24.	शतभिषा	राहु	गो, स, सि, सू
25.	पूर्वा भाद्र पद	गुरु	से, सो, दा, दी
26.	उत्तरा भाद्रपद	शनि	दू, थ, झ, ञ
27.	रेवती	केतु	दे, दो, च, चि

ग्रहों का राशियों से सम्बन्ध

ग्रह	राशियाँ
सूर्य	सिंह
चन्द्र	कर्क
मंगल	मेष, वृश्चिक
बुध (राहु)	मिथुन, कन्या
गुरु (केतु)	धनु, मीन
शुक्र	वृष, तुला
शनि	मकर, कुम्भ

कुछ विशेष शब्दों का ज्ञान

ज्योतिष की भाषा में कुछ ऐसे शब्द प्रयुक्त होते हैं जिनका अर्थ समझ पाना सामान्य पाठकों के ज्ञान की परिधि से परे होता है। ज्योतिष के विद्वानों के लिए वे शब्द सामान्य होते हैं। इस पुस्तक का सृजन (रचना) मैं इस उद्देश्य से कर रहा हूँ कि सामान्य पाठक इस पुस्तक को पढ़कर पूर्ण रुप से लाभान्वित हों। उन्हें बार-बार ज्योतिषियों के चक्कर न लगाने पड़े अर्थात् जन्म कुण्डली में स्वयं वे ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति और उनके शुभ-अशुभ प्रभाव को जान सकें।

राशि-जन्म काल (समय) में चन्द्रमा जिस राशि में होता है।

लग्न-राशि का उदय काल, जन्म कुण्डली के प्रथम भाव को लग्न कहते हैं।

होरा-ग्रहों की तत्कालीन स्थिति द्वारा प्राणियों के सुख-दुःख लाभ-हानि आदि का निर्णय जिसके द्वारा प्राप्त होता है उसे 'होरा' कहते हैं।

चन्द्र वर्ष-354 दिनों में चन्द्रमा, पृथ्वी का एक चक्कर लगाता है। चन्द्रमा को अमावस्या से पूर्णिमा और पूर्णिमा से अमावस्या की स्थिति में पहुँचने में 30 दिन (1 माह) का समय लगता है। यदि चन्द्रमा के 30 दिनों की गणना को लें तो 12 महीनों में 30 से गुणा करने से 360 दिन बनते हैं। इन 12 महीनों में 6 महीने (माह) तीस दिन के हिसाब से तथा शेष छः महीने 29 दिन के हिसाब से जोड़ने पर 354 दिन प्राप्त होते हैं।

सूर्य वर्ष-365 दिन के वर्ष को सूर्य वर्ष कहते हैं। 15 घड़ी, 32 पल और 57 विषला, जिसमें पृथ्वी सूर्य का एक पूरा चक्कर लगाती है। कैलेन्डर वर्ष के

अनुसार 365 दिन 6 घंटे का एक वर्ष माना गया है। इन 6 घंटों को चार वर्ष तक जोड़ने पर चौथे वर्ष एक दिन बढ़ जाता है। जिसे 'लीप ईयर' (Leap Year) या लौंद वर्ष कहते हैं। सूर्य वर्ष और चन्द्र वर्ष के 11 दिनों के अन्तर को समाप्त करने हेतु जिस मास का आयोजन किया जाता है उसे 'अधिक मास' कहते हैं।

पक्ष-एक माह में दो पक्ष 15-15 दिन के होते हैं जिन्हें कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष कहते हैं।

कृष्ण पक्ष-पूर्णिमा से चन्द्रमा का अमावस्या की ओर अग्रसर होना 'कृष्ण पक्ष' कहलाता है। इसे 'बदि' भी कहते हैं।

शुक्ल पक्ष-चन्द्रमा का अमावस्या से पूर्णिमा की ओर अग्रसर होना 'शुक्ल पक्ष' कहलाता है इसे 'शुदि' भी कहते हैं।

तिथि-अमावस्या से पूर्णिमा और पूर्णिमा से अमावस्या की ओर जाने के क्रमानुसार समय को तिथि कहते हैं।

तिथियों के नाम इस प्रकार हैं-

1. प्रथमा (प्रतिपदा)
2. द्वितीया
3. तृतीया
4. चतुर्थी
5. पंचमी
6. षष्ठी
7. सप्तमी
8. अष्टमी
9. नवमी
10. दशमी
11. एकादशी
12. द्वादशी
13. त्रयोदशी
14. चतुर्दशी
15. पूर्णिमा या अमावस्या

तिथियों के स्वामी

तिथियों के शुभ अशुभ प्रभाव को जानने के लिए उसके स्वामी का भी विचार किया जाता है।

तिथि	स्वामी	तिथि	स्वामी
प्रथमा (प्रतिपदा)	अग्नि	नवमी	दुर्गा
द्वितीया	ब्रह्मा	दशमी	काल
तृतीया	पार्वती	एकादशी	विश्वदेवा
चतुर्थी	गणपति	द्वादशी	विष्णु
पंचमी	सर्प	त्रयोदशी	कामदेव
षष्ठी	कार्तिकेय	चतुर्दशी	शंकर
सप्तमी	सूर्य	पूर्णिमा	चन्द्रमा
अष्टमी	शिव	अमावस्या	पितर

हिन्दी महीनों के नाम

ज्यादातर लोगों को अंग्रेजी महीनों का नाम ज्ञान होता है। हिन्दी माह का ज्ञान हर किसी को नहीं होता। पाठकों की सुविधा और पुस्तक में हिन्दी महीनों की उपयोगिता को ध्यान में रखकर हिन्दी महीनों की नामावली लिख रहे हैं-

1. चैत्र 2. वैशाख 3. ज्येष्ठ 4. आषाढ़ 5. श्रावण 6. भाद्रपद (भादों) 7. आश्विन (क्वार) 8. कार्तिक 9. मार्गशीर्ष (अगहन) 10. पौष 11. माघ 12. फाल्गुन।

करण-तिथि के 'अर्द्ध-भाग' (आधा) को 'करण' कहते हैं अर्थात् एक तिथि में दो करण होते हैं। कुल 11 करण होते हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं-

1. वव 2. वालच 3. कौलव 4. तैंतिल 5. गर 6. वणिज 7. विष्ट 8. शकुनि 9. चतुष्पद 10. नाग 11. किस्तुघ्न

योग-सूर्य एवम् चन्द्रमा के स्पष्ट स्थानों को जोड़कर, उनकी कलायें बनाकर उसमें 800 से भाग देने पर योगों की संख्या का निर्णय किया जाता है। जो शेष बचता है उससे यह निर्णय किया जाता है कि वर्तमान योग की कितनी कलायें बीत गयी है। शेष को 800 में से घटाने पर 'गम्य-कलायें' बचती है। सत्ताइस योग भारतीय ज्योतिष के अनुसार बतलाये गये हैं-

1. विष्कम्भ	10. गण्ड	19. परिधि
2. प्रीति	11. वृद्धि	20. शिव
3. आयुष्मान	12. ध्रुव	21. सिद्ध
4. सौभाग्य	13. व्याघात	22. साध्य
5. शोभन	14. हर्षण	23. शुभ
6. अति गण्ड	15. वज्र	24. शुक्ल
7. सुकर्मा	16. सिद्धि	25. ब्रह्म
8. घृति	17. व्यतीपात	26. ऐन्द्र
9. सूल	18. वरीयान	27. वधूति

उच्च और नीच ग्रह

उच्च ग्रह पूर्ण रुप से बली एवम् शुभ होते हैं तथा अपना शुभत्व फल शत-प्रतिशत प्रदान करते हैं जबकि नीच ग्रह अशुभ एवम् निर्बल होते हैं वे अशुभ फल देते हैं।

किन राशियों में कौन सा ग्रह उच्च होता है तथा किन राशियों में कौन सा ग्रह नीच होता है। नीचे लिख रहे हैं-

राशि	उच्च ग्रह	राशि	नीच ग्रह
मेष	सूर्य	मेष	शनि
वृष	चन्द्र	मिथुन	केतु
मिथुन	राहु	वृश्चिक	चन्द्र
कर्क	गुरु	मकर	गुरु
कन्या	बुध	मीन	बुध
तुला	शनि		
धनु	केतु		
मकर	मंगल		
मीन	शुक्र		

ग्रह जिस भाव का उच्च होता है उसके सामने अर्थात् सातवें भाव में उसका शत्रु ग्रह स्थित हो तो उसका उच्च फल नहीं मिलता।

सूर्य के साथी ग्रह और धार्मिक ग्रह

साथी ग्रह-जब ग्रह निज भाव को छोड़कर किसी अन्य ग्रह के भाव में स्थित हो तो वह 'साथी-ग्रह' कहलाता है। उदाहरणार्थ-गुरु बारहवें भाव का स्वामी है यदि वह पहले भाव में स्थित हो और पहले भाव का स्वामी मंगल बारहवें भाव में स्थित हो तो 'गुरु और मंगल' साथी ग्रह कहे जायेंगे।

धार्मिक ग्रह-राहु-केतु चौथे भाव में या केन्द्र के साथ किसी भाव में और शनि ग्यारहवें भाव में हो तो पापी ग्रह (राहु-शनि-केतु) का कुप्रभाव नहीं होगा क्योंकि ये ग्रह धार्मिक हो जायेंगे।

यह आवश्यक नहीं कि पापी ग्रह जातकों को शुभत्व ही प्रदान करे परन्तु कुप्रभाव भी नहीं देंगे।

ग्रहों के वल

1. स्थान बल-जो ग्रह उच्च, सम, मित्रगृही तथा दृष्टि कोणस्थ होता है वह ग्रह बली कहलाता है। चन्द्रमा व शुक्र, वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, गुरु, शनि, मेष, मिथुन, सिंह, धनु, कुम्भ में स्थान बली कहलाते हैं।

2. दिग्बल–लग्न में बुध व गुरु चतुर्थ भाव में, शुक्र और चन्द्रमा सप्तम भाव में, दशवें भाव में सूर्य व मंगल हो तो दिग्बली कहलाते हैं।

3. कालबल–रात्रि में जन्में जातक की कुण्डली में चन्द्रमा शनि और मंगल, दिन में जन्म लेने वाले जातक की कुण्डली में सूर्य बुध और शुक्र 'कालबली' कहलाते हैं।

4. चेष्टाबल–मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष, मिथुन राशियों में सूर्य, चन्द्रमा, गुरु, चन्द्रमा-मंगल-गुरु, चन्द्रमा-शनि साथ-साथ बैठे हों तो चेष्टा बली कहलाते हैं।

स्वगृही ग्रह और स्पष्ट ग्रह

अपनी राशि में स्थित ग्रह 'स्वगृही' कहलाते हैं अर्थात् सूर्य पांचवें भाव में, चन्द्र चौथे भाव में, बुध तीसरे अथवा छठे भाव में, गुरु नौवें बारहवें भाव में, शुक्र दूसरे और सातवें भाव में, शनि दशवें अथवा ग्यारहवें भाव में स्थित हो तो 'स्वगृही' कहलाते हैं। जो ग्रह अपना पूर्ण प्रभाव दे रहा हो (बिना शत्रु ग्रह के प्रभाव के) वे स्पष्ट ग्रह कहे जाते है। स्पष्ट ग्रह पूर्ण रुप से समर्थ होने के कारण स्पष्ट और पूर्ण प्रभाव देते हैं।

राहु-केतु का फलाफल विचार

राहु बारहवें भाव में नीच होता है और उसका कारक भाव भी है तथा केतु छठे भाव में नीच होता है और उसका कारक भाव भी है। राहु तथा गुरु एक भाव में शत्रु नहीं है। राहु-गुरु की युति हो तो गुरु मौन रहेगा अर्थात् किसी प्रकार शुभ-अशुभ फल नहीं देगा।

राहु, बुध का मित्र है। राहु-बुध की युति छठे भाव में हो तो शुभ फल देता है किन्तु बारहवें भाव में ये स्थित हो तो अशुभ फल देता है।

केतु छठे भाव में और राहु बारहवें भाव में नीच होता है और भाव के स्वामी भी। उनकी शंकित परिस्थितियों के लिए जब राहु को बुध और केतु को गुरु की सहायता मिलती है अर्थात् राहु तीसरे या छठे भाव में, केतु नौवें या बारहवें भाव में स्थित हों तो दोनों उच्च होंगे। भाव छः का स्वामी बुध और केतु को माना गया है। जब छठा भाव खाली हो और बुध तीसरे भाव में हो तो छठे भाव का स्वामी केतु होता है किन्तु बुध तीसरे में हो और छठा भाव रिक्त हो तो बुध और केतु में से दोनों में जो शुभ होगा, वही स्वामी होगा।

बारहवें भाव का स्वामी राहु और गुरु को माना गया है। जब बारहवाँ भाव

रिक्त (खाली) हो तथा गुरु नौवें भाव में न हो तो बारहवें भाव के लिए दोनों का स्वामी बुध होगा।

बुध-राहु बारहवें भाव में नीच का होगा क्योंकि बारहवाँ भाव उसके शत्रु ग्रह गुरु का है। जब बुध से केतु छठे भाव में हो तो उच्च होगा क्योंकि यह बुध की अपनी राशि है। गुरु के भाव (खाना) में राहु-गुरु के साथ अशुभ फल देता है। बुध के भाव में केतु भी अशुभ फल देगा। किन्तु गुरु और केतु की युति हो तो केतु उच्च फल अर्थात् शुभ फल देगा। केतु-गुरु के साथ बराबर का फल देता है।

ग्रहों का मैत्री चक्र

ग्रहों की मित्रता दो प्रकार की होती है-

1. नैसर्गिक मैत्री 2. तात्कालिक मैत्री

ग्रहों की मित्रता, इनके साथ सम व्यवहार करने वाले ग्रह और शत्रु ग्रह कौन-कौन से हैं-

मैत्री चक्र बनाने से पहले ग्रहों के संकेताक्षर पाठकगण समझ लें।

सू-सूर्य	मं.-मंगल	श.-शनि
चं-चन्द्र	बु.-बुध	रा.-राहु
रा-राहु	वृ.-वृहस्पति	
के.-केतु	शु.-शुक्र	

नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	मित्र ग्रह	सम ग्रह	शत्रु ग्रह
सूर्य	चं. मं. बु.	बु.	शु. श. रा.
चन्द्र	सू. बु.	श. शु. वृ. मं.	रा. के.
मंगल	सू. चं. बृं.	बु. रा. के.	श. शु.
बुध	सू. शु. रा.	मं. श. के.	चं. बु.
गुरु	सू. चं. मं.	रा. श. के.	बु. शु.
शुक्र	बु. श. रा.	बृ. मं. के.	सू. चं.
शनि	बु. श. रा.	बृ. के.	सू. मं. चं.
राहु	बु. शु. श.	बृ. के.	सू. मं. चं.
केतु	शु. श. बु.	बृ. रा.	सू. मं. चं.

ग्रहों की तात्कालिक मैत्री और शत्रुता

प्रत्येक ग्रह अपने से दूसरे, तीसरे, चौथे, दशवें, ग्यारहवें, बारहवें में स्थित (बैठे) ग्रह का तात्कालिक मित्र होता है तथा अपने से पाँचवें, छठे, सातवें, आठवें, और नवें भाव में बैठे ग्रह का तात्कालिक शत्रु होता है। ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री और तात्कालिक मैत्री के आधार पर 'पंचधा मैत्री चक्र' बनाया जाता है। उदाहरण स्वरुप किसी कुण्डली विशेष का 'पंचधा मैत्री चक्र' इस प्रकार होगा।

पंचधा मैत्री चक्र

ग्रह	अधिमित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधिशत्रु
सूर्य	चं.	बु.	मं. गु. शु.	—	रा.
चन्द्र	सू. बु.	मं. शु.	श. के	श. गु. रा.	—
मंगल	चं.	बु. रा. के.	के.	—	श.
बुध	सू.	मं. शु.	सू. वृ. शु.	के.	शु.
बृहस्पति	(गुरु)	रा. श.	शु. रा. च.	के.	बु. शु.
शुक्र	श.	मं.	सू. चं. मं.	गु. के.	—
शनि	बु. शु. रा.	बृ. के.	बु. रा. सू. चं.	—	चं.
राहु	श.	बृ.	मं. शु. बु.	के	सू. चं-
केतु	श.	—	शु. बु.	गु. रा. सू. चं. मं.	—

ग्रह नाम संज्ञा

1. प्रथम भाव के स्वामी को - लग्नेश, केन्द्रेश या ध्रुवेश कहते हैं।
2. द्वितीय भाव के स्वामी को - धनेश, सहायक या मारकेश कहते हैं।
3. तृतीय भाव के स्वामी को - पराक्रम व बान्धवेश कहते हैं।
4. चतुर्थ भाव के स्वामी को - सुखेश व माहेश कहते हैं।

5. पंचम भाव के स्वामी को – पंचमेश, सन्तानवेश, विद्याधीश कहते हैं।
6. षष्ठम भाव के स्वामी को – कष्टेश व रोगेश कहते हैं।
7. सप्तम भाव के स्वामी को – सप्तमेश व जायेश की संज्ञा दी गयी है।
8. अष्टम भाव के स्वामी को – मृत्युयेश व मारकेश कहते हैं।
9. नवम भाव के स्वामी को – कर्मेश व भाग्येश कहते हैं।
10. दशम भाव के स्वामी को – राज्येश की संज्ञा मिली है।
11. ग्यारहवें भाव के स्वामी को – आयेश कहते हैं।
12. बारहवें भाव के स्वामी को – व्ययेश कहते हैं।

उच्च राशि ग्रहों के फल

जिस जातक की कुण्डली में सूर्य उच्च मेष राशि का हो, वह भाग्यवान धनी, विद्वान, यशस्वी और सुखी होता है।

जिस जातक की जन्म कुण्डली में चन्द्र उच्च मकर राशि का हो वह व्यक्ति अलंकार प्रिय, विलासी, माननीय, सुखी एवम् चंचल स्वभाव का होता है।

जिसकी जन्म कुण्डली में बुध उच्च, कन्या राशि में हो तो वह बुद्धिमान, लेखक, विद्वान, शत्रु नाशक, वंश वृद्धिकर्ता तथा प्रसन्न होता है तथा जिसकी जन्म कुण्डली में मंगल उच्च मकर राशि का हो तो वह राजा द्वारा सम्मान प्राप्त, कर्तव्य परायण तथा साहसी होता है।

जिस जातक की कुण्डली में वृहस्पति उच्च, कर्क राशि में हो वह शासक, विद्वान, मंत्री, चतुर, सुखी और ऐश्वर्य सम्पन्न होता है तथा जिस जातक की कुण्डली में शुक्र, उच्च मीन राशि में हो, ऐसा व्यक्ति कामी विलासी, भाग्यवान तथा संगीत प्रिय होता है।

कुण्डली में शनि उच्च, तुला राशि में हो तो जातक अधिपति, कृषक, जमींदार, राजा, यशस्वी तथा शक्तिशाली होता है।

उच्चराहु, मिथुन राशि का हो तो जातक धनी, साहसी और लम्पट होता है तथा जिसकी जन्म कुण्डली में केतु उच्च, धनु राशि का हो, ऐसा जातक भ्रमणशील एवम् नीच इंसान होता है।

ग्रहों का राशियों से सम्बन्ध

नाम राशि	स्वामी	उच्च ग्रह	नीच ग्रह	कारक ग्रह	भाग्यकारी ग्रह
मेष	मंगल	सूर्य	शनि	सूर्य	मंगल
वृष	शुक्र	चन्द्र	–	गुरु	राहु-केतु
मिथुन	बुध	राहु	केतु	मंगल	शनि
कर्क	चन्द्र	गुरु	मंगल	चन्द्र	चन्द्र
सिंह	सूर्य	–	–	गुरु	गुरु-सूर्य
कन्या	बुध	बुध राहु	शुक्र-केतु	केतु	बुध-केतु
तुला	शुक्र	शनि	सूर्य	बु.शु.	शुक्र
वृश्चिक	मंगल	–	चन्द्र	मं. श.	मंगल
धनु	गुरु	केतु	राहु	गुरु	गुरु
मकर	शनि	मंगल	गुरु	शनि	शनि
कुम्भ	शनि	–	–	गुरु	गुरु-शनि
मीन	गुरु	शुक्र केतु	बुध-राहु	राहु	राहु

राशि तत्व

मेष-अग्नि तत्व

वृष-पृथ्वी तत्व

मिथुन-वायु तत्व

कर्क-जल तत्व

सिंह-अग्नि तत्व

कन्या-पृथ्वी तत्व

तुला-वायु तत्व

वृश्चिक-जल तत्व

धनु-अग्नि तत्व

मकर-पृथ्वी तत्व

कुम्भ-वायु तत्व

मीन-जल तत्व

मानव अंगों में राशियों का स्थान

क्रम सं.	राशियाँ	मानव अंगों में राशियों का स्थान
1.	मेष	मस्तक में
2.	वृष	मुख में
3.	मिथुन	वक्ष, बाजू
4.	कर्क	हृदय
5.	सिंह	पेट व गर्भ
6.	कन्या	कमर
7.	तुला	मूत्राशय
8.	वृश्चिक	लिंग एवम् गुदा
9.	धनु	जाँघ
10.	मकर	दोनों घुटने
11.	कुम्भ	पिंडली
12.	मीन	दोनों पाँव

अब मैं आगे जो तालिका स्पष्ट करने जा रहा हूँ। इस तालिका के अनुसार पाठक गण यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि जन्म तिथि के अनुसार उस समय कौन सा नक्षत्र चल रहा था तथा उस नक्षत्र का स्वामी ग्रह क्या है ?

क्रम सं.	समय (अंग्रेजी तारीख)	नक्षत्र	स्वामी ग्रह
1.	13 अप्रैल से 26 अप्रैल	अश्विनी	केतु
2.	27 अप्रैल से 10 मई	भरणी	शुक्र
3.	11 मई से 23 मई	कृत्तिका	सूर्य
4.	24 मई से 6 जून	रोहिणी	चन्द्र
5.	7 जून से 20 जून	मृगशिरा	मंगल
6.	21 जून से 4 जुलाई	आर्द्रा	राहु
7.	5 जुलाई से 18 जुलाई	पुनर्वशु	गुरु
8.	19 जुलाई से 1 अगस्त	पुष्य	शनि
9.	2 अगस्त से 15 अगस्त	अश्लेषा	बुध
10.	16 अगस्त से 29 अगस्त	मघा	केतु
11.	30 अगस्त से 12 सितम्बर	पूर्वा फाल्गुनी	शुक्र
12.	13 सितम्बर से 25 सितम्बर	उत्तरा फाल्गुनी	सूर्य
13.	26 सितम्बर से 9 अक्तूबर	हस्त	चन्द्र
14.	10 अक्तूबर से 22 अक्तूबर	चित्रा	मंगल
15.	23 अक्तूबर से 5 नवम्बर	स्वाति	राहु
16.	6 नवम्बर से 18 नवम्बर	विशाखा	गुरु
17.	19 नवम्बर से 1 दिसम्बर	अनुराधा	शनि
18.	2 दिसम्बर से 14 दिसम्बर	ज्येष्ठा	बुध
19.	15 दिसम्बर से 28 दिसम्बर	मूल	केतु
20.	29 दिसम्बर से 10 जनवरी	पूर्वाषाढ़ा	शुक्र
21.	11 जनवरी से 23 जनवरी	उत्तराषाढ़ा	सूर्य
22.	24 जनवरी से 5 फरवरी	श्रवण	चन्द्र
23.	6 जनवरी से 18 फरवरी	घनिष्ठा	मंगल
24.	19 फरवरी से 3 मार्च	शतभिषा	राहु
25.	4 मार्च से 17 मार्च	पूर्व भाद्रपद	गुरु
26.	18 मार्च से 30 मार्च	उत्तर भाद्रपद	शनि
27.	31 मार्च से 12 अप्रैल	रेवती	बुध

मासों (महीनों) का फलादेश

1. चैत्रमास (अप्रैल)-चैत्र मास में जन्म लेने वाला बालक क्रोधी, अहंकारी, शुभ कर्म करने वाला तथा स्त्रियों के वश में रहने वाला होता है।

2. वैसाख मास (मई)-वैशाख मास में उत्पन्न बालक धनवान, विषय भोगी, सुन्दर नेत्रों वाला स्त्रियों के वशीभूत रहने वाला होता है।

3. ज्येष्ठ मास (जून)-इस मास में जन्म लेने वाला बालक धनवान, प्रतिभावान, दीर्घायु (लम्बी आयु) वाला होता है।

4. आषाढ़ (जुलाई)-आषाढ़ मास में जन्में जातक पुत्र-पौत्र से युक्त, धर्मात्मा, सुन्दर और अल्प सुख प्राप्त करने वाला होता है।

5. श्रावण (अगस्त)-श्रावण मास में उत्पन्न जातक सुख-दुःख, हानि-लाभ में चित्त रखने वाला, स्थूल शरीर (मोटा) और सुन्दर होता है।

6. भाद्रपद मास (सितम्बर)-भाद्रपद मास में उत्पन्न बालक दुर्बल शरीर वाला, स्त्री प्रेमी तथा स्वजनों से मधुर सम्बन्ध रखने वाला होता है।

7. आश्विन (अक्तूबर)-आश्विन मास में उत्पन्न जातक विद्वान, धनवान, लेखक, कवि तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

8. कार्तिक (नवम्बर)-कार्तिक मास में उत्पन्न व्यक्ति धनवान, कामी, प्रेमी और क्रय-विक्रय के कार्य में महारथी होता है।

9. मार्गशीर्ष (दिसम्बर)-इस मास में उत्पन्न व्यक्ति परोपकारी, उदार हृदय, सत्संगी और सुशील होता है।

10. पौष (जनवरी)-परमार्थ भावना से युक्त, दुर्बल, पितृधन से हीन, कपटी और अपव्ययी होता है।

11. माघ (फरवरी)-माघ मास में जन्म लेने वाला जातक तांत्रिक, आचार्य, बुद्धि से शत्रु का दमन करने वाला, सच्चरित्र और निष्पाप होता है।

12. फाल्गुन (मार्च)-इस माह में उत्पन्न जातक गौरवर्ण, परोपकारी, विद्यावान, धनवान होता है। जातक को विदेश भ्रमण का अवसर भी प्राप्त होता है।

तिथियों का फलादेश

प्रतिपदा (प्रथमा)-प्रतिपदा तिथि में उत्पन्न जातक महापापी, पापियों का साथी तथा धनहीन होता है। ऐसे जातक अपने कुल के लिए कभी-कभी दुःखों का कारण बन जाते हैं।

द्वितीया–द्वितीया तिथि में उत्पन्न जातक परस्त्रीगामी, चोर और लम्पट होते हैं।

तृतीया–इस तिथि में उत्पन्न जातक ईर्ष्यालु, दरिद्र और भाग्यहीन होते हैं।

चतुर्थी–चतुर्थी तिथि में उत्पन्न जातक भोगी, विलासी, दानी, मित्र–प्रेमी, विद्वान, धनवान व सन्तान युक्त होते हैं।

पंचमी–पंचमी तिथि को उत्पन्न बालक गुणवान, माता–पिता की आज्ञा मानने वाला, व्यवहारिक तथा अपने शरीर से स्नेह करने वाला होता है।

षष्ठी–षष्ठी तिथि का जातक झगड़ालू स्वभाव वाला होता है। यात्रा–प्रेमी तथा दरिद्र होता है।

सप्तमी–सप्तमी तिथि में उत्पन्न व्यक्ति तेजवान, भाग्यवान, धनवान, पुत्रवान तथा संतोषी होता है।

अष्टमी–इस तिथि में उत्पन्न जातक दानी, दयावान, सज्जन, धर्मात्मा तथा सत्य बोलने वाला होता है।

नवमी–नवमी तिथि में उत्पन्न बालक धार्मिक प्रवृत्ति का, स्त्री–प्रेमी, धनवान और शास्त्रों का ज्ञाता होता है।

दशमी–इस तिथि में उत्पन्न जातक धर्म–अधर्म का ज्ञाता, धनवान व तेजस्वी होता है।

एकादशी–ऐसा जातक जो एकादशी तिथि में उत्पन्न हुआ हो, धनवान, बुद्धिमान, ज्ञानवान तथा संतोषी होता है।

द्वादशी–द्वादशी तिथि में उत्पन्न बालक चंचल स्वभाव तथा खिन्न प्रवृत्ति वाला होता है।

त्रयोदशी–त्रयोदशी तिथि में उत्पन्न जातक इन्द्रियों को वश में रखने वाला, ज्ञानी, धार्मिक और परोपकारी होता है।

चतुर्दशी–धर्मात्मा, वीर, यशस्वी, ज्ञानवान तथा बड़े लोगों के सम्पर्क में रहने वाला चतुर्दशी को उत्पन्न जातक होता है।

पूर्णिमा–पूर्णिमा की तिथि में उत्पन्न जातक धनवान, बुद्धिमान, स्वादिष्ट भोजन प्रेमी तथा पराई स्त्री पर आसक्त रहने वाला होता है।

अमावस्या–अमावस्या को उत्पन्न जातक आलसी, कुटिल स्वभाव वाला, पराक्रमी और ज्ञानवान होता है।

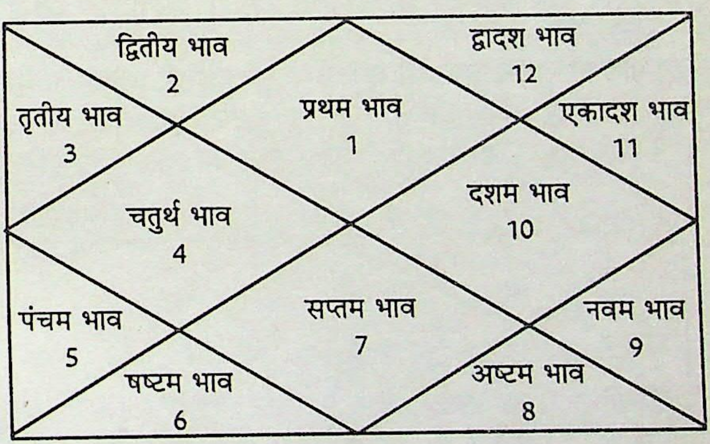
भाव ग्रह

सूर्य प्रथम, गुरु द्वितीय, मंगल तृतीय, चन्द्र चतुर्थ, गुरु पंचम, नवम, एकादश, शुक्र सप्तम, शनि अष्टम व दशम, राहु द्वादश तथा केतु षष्टम भाव का कारक होता है। कारक भाव में स्थित ग्रहों को भाव ग्रह अथवा कारक ग्रह के नाम से जाना जाता है। इसके शुभ-अशुभ प्रभाव को नहीं रोका जा सकता अर्थात् ये अपना पूरा प्रभाव डालते हैं।

भाव क्या है ?

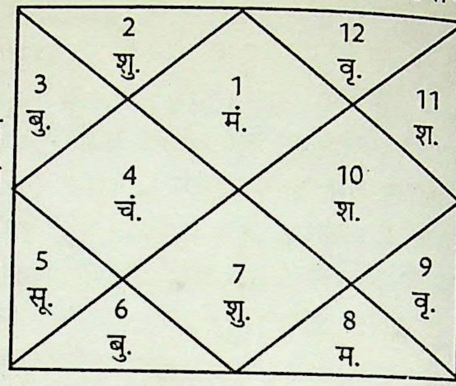
जन्म कुण्डली में जो बारह खाने (घर) बनाये जाते हैं उसे 'भाव' या भवन कहते हैं तथा इनसे विचार करने वाले विषयों के नामकरण का भी विचार किया जाता है।

यथा-प्रथम भाव को लग्न, द्वितीय भाव को धन, कुटुम्ब या कोष, तीसरे भाव को पराक्रम आदि भी कहते हैं।



उपरोक्त भाव खानों से केन्द्र भाव और त्रिकोण इस प्रकार जाने-खाना नं. 1, 4, 7, 10 को केन्द्र भाव तथा शेष अन्य खानों को त्रिकोण जाने।

भाव के स्वामी ग्रह



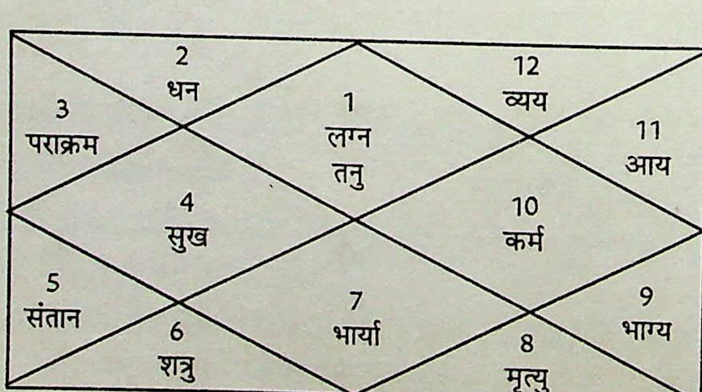
नीचे के भाव चक्र से भावों के स्वामी ग्रह का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है–

उपरोक्त चित्र को पाठक ध्यान पूर्वक देखें–प्रथम भाव का स्वामी मंगल है, द्वितीय भाव का स्वामी शुक्र है, तृतीय भाव का बुध, चतुर्थ भाव का चन्द्र, पंचम भाव का सूर्य, षष्टम भाव का बुध, सप्तम भाव का शुक्र, अष्टम भाव का मंगल, नवम भाव का वृहस्पति (गुरु), दशम भाव का और एकादश भाव का स्वामी शनि तथा द्वादश भाव का स्वामी वृहस्पति है।

किसी जातक की कुण्डली देखने के लिए उसका फलाफल बताने के लिए ग्रह, नक्षत्र सूत्रों का ज्ञान होना परम आवश्यक है।

कुण्डली के किस भाव से क्या विचार करें?

सुहृद पाठकों! जन्म कुण्डली बनाना या कुण्डली से जातक के भूत–वर्तमान और भविष्य के विषय में बताने के लिए नीचे वर्णित भावों का ज्ञान होना परम आवश्यक है अन्यथा त्रुटि हो सकती है अतः नीचे बने भाव चक्र को ध्यान पूर्वक देखें–



अब ऊपर बने भाव चक्र से आप जातक का भाग्य फल बता सकते हैं। भाग्यफल बताने के लिए प्रत्येक भाव का अलग–अलग फलाफल निम्नवत् है–

प्रथम भाव (लग्न)-प्रथम भाव को लग्न भाव कहते हैं। प्रथम भाव से शरीर, चेहरे का सौन्दर्य, स्मरण शक्ति, योग्यता, मान-सम्मान, आयु सुख-दुःख, जातक की आदत, स्वभाव आदि का विचार किया जाता है।

द्वितीय भाव (धन)-कुण्डली के द्वितीय भाव से धन-सम्पत्ति, आर्थिक स्थिति, परिवार, ससुराल, धन कमाने के साधन, विद्या, सच्चाई और स्वतंत्रता का विचार करते हैं।

तृतीय भाव (पराक्रम)-तृतीय भाव से शिक्षा, परिवार, छोटे भाई बहन, पराक्रम, जमीन, यात्रा, राग-विद्या (गीत-संगीत), नृत्य कला, कर्ज, मित्रों से सहायता आदि का विचार करते हैं।

चतुर्थ भाव (सुख)-कुण्डली के चतुर्थ भाव से मकान, जायदाद, सुख के साधन, जमीन में गड़ा हुआ धन, मकान, दूध देने वाले पशु, सवारी के साधन, सभ्य आचरण, वृद्धावस्था, यात्रा आदि का विचार करते हैं।

पंचम भाव (सन्तान)-कुण्डली के पंचम भाव से संतान, विद्या, बुद्धि, ऐश्वर्य के साधन, प्रेम रोमांस, शिष्टाचार, रेस, लाटरी, जुआ, सट्टा, कृतियाँ (लेखन), जासूसी, काव्य कला, यंत्र-मंत्र, योगाभ्यास, नीति निपुणता आदि का विचार करते हैं।

षष्टम भाव (शत्रु)-इस भाव को शत्रु भाव भी कहते हैं। छठे भाव से पाप, अन्याय, रोग, शत्रु, अग्नि भय, जहरीले जीवोंका भय, ऋण, लड़ाई-झगड़ा, भाईचारा, कैद, नुकसान, शत्रुता आदि का विचार करते हैं।

सप्तम भाव (भार्या)-सातवें भवन से विवाह, पति-पत्नी के आपसी व्यवहार का तालमेल, रोजगार, पिता के धन के लिए कलह, व्यापार में भागीदारी, कर्ज, पड़ोसी, बिना परिश्रम के लाभ, जातक के अहंकार, दूसरे स्त्रियों से अहंकार का विचार करते हैं।

अष्टम भाव (मृत्यु)-अष्टम भाव को 'मृत्यु भाव' कहते हैं क्योंकि इस भाव से जातक की आयु, मृत्यु और मृत्यु के कारण का विचार करते हैं। दुर्घटना, लम्बी बीमारी, ऊँचाई से गिरना, यात्रा में बाधा, कष्ट, अपमान, निराशा, चुगली, निन्दा आदि का भी विचार अष्टम भाव से ही करते हैं।

नवम भाव (भाग्य)-कुण्डली के नवम् भाव से जातक के भाग्य, दान धर्म, तीर्थ यात्रा, आत्मबल, भविष्यवाणी, स्वप्न, बुद्धि, विज्ञान, धार्मिक विचार भावना, दैवी सहायता के विचार किये जाते हैं।

दशम भाव (कर्म)-श्री राम चरित मानस में गोस्वामी तुलसी दास जी ने

कहा है-''कर्म प्रधान विश्व रचि राखा ॥''-अर्थात् कर्म प्रधान होता है। कर्म से ही भाग्य बनते और बिगड़ते हैं। कुण्डली के दशम भाव से कर्म का अवलोकन करते हैं। इस भाव से व्यापार, व्यवसाय, सरकारी कार्य, राज्य करने की इच्छा, प्रसिद्धि, मान सम्मान, उपाधि से विभूषित होना, धर्म कार्य, शुभ कार्य, कृषि, भूमि, डाक्टर तथा परिश्रम से सफलता अर्जित करने का विचार करते हैं।

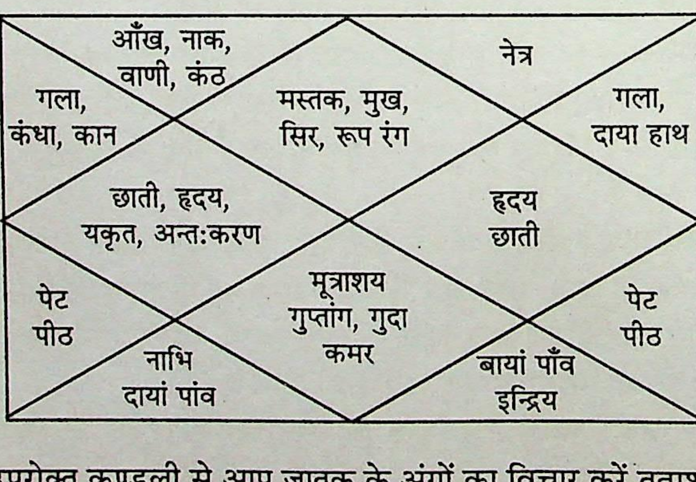
एकादश भाव (आय)-कुण्डली के ग्यारहवें भवन से आय, आय के साधन, पिता की जायदाद, सोना, चाँदी, उच्च पद पर आसीन होना, क्रय विक्रय, विद्या, राजकीय पुरस्कार, ख़जाना आदि का विचार करते हैं।

द्वादश भाव (व्यय)-कुण्डली में बारहवें भाव से व्यय, हानि, मुकदमा, बदनामी, कारावास, सरकारी दण्ड या जुर्माना, देश निकाला, दण्ड, कष्ट, चोर डाकू से भय, विदेश यात्रा आदि का विचार किया जाता है।

भाव चक्र से अंगों का विचार

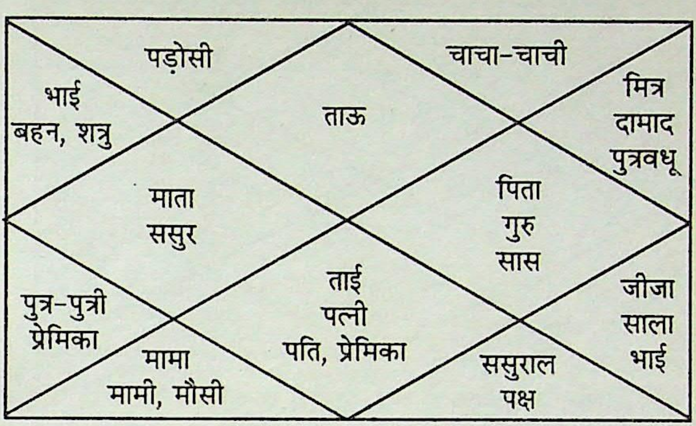
जन्म कुण्डली के किस भाव से किन अंगों का विचार किया जाता है, नीचे दिये भाव चक्र में दर्शाया गया है-

कुण्डली से अंगों का विचार



उपरोक्त कुण्डली से आप जातक के अंगों का विचार करें तत्पश्चात् नीचे बनी कुण्डली से कुटुम्ब का विचार करें-

कुटुम्ब का विचार

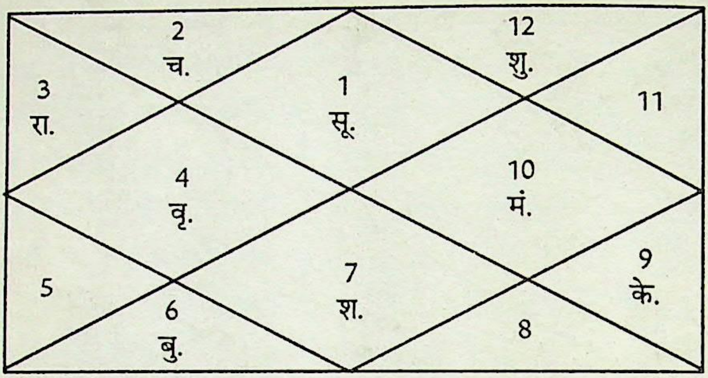


निम्न कुण्डली से दिशाओं का विचार किया जाता है।

दिशाओं का विचार

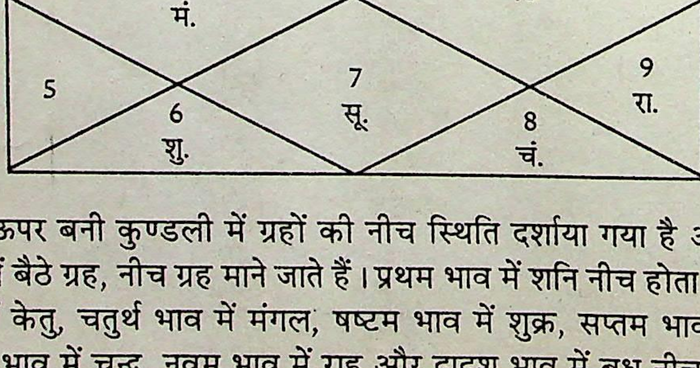


भावचक्र में उच्च ग्रहों का स्थान



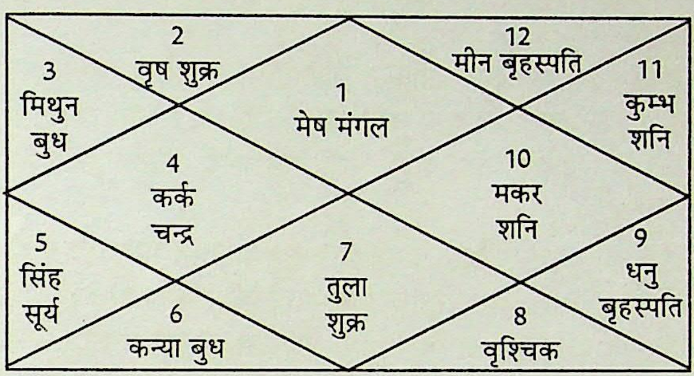
प्रथम भाव अर्थात् लग्न भाव में सूर्य, द्वितीय भाव में चन्द्र, तृतीय भाव में राहु, चतुर्थ भाव में वृहस्पति, षष्टम भाव में बुध, सप्तम भाव में शनि, नवम भाव में केतु, दशम भाव में मंगल, द्वादश (बारहवें) भाव में शुक्र उच्च ग्रह होते हैं।

भाव चक्र में नीच ग्रहों का स्थान



ऊपर बनी कुण्डली में ग्रहों की नीच स्थिति दर्शाया गया है अर्थात् इन भावों में बैठे ग्रह, नीच ग्रह माने जाते हैं। प्रथम भाव में शनि नीच होता है, तृतीय भाव में केतु, चतुर्थ भाव में मंगल, षष्टम भाव में शुक्र, सप्तम भाव में सूर्य, अष्टम भाव में चन्द्र, नवम भाव में राहु और द्वादश भाव में बुध नीच ग्रह होते हैं।

भाव चक्र (कुण्डली) में राशियों और ग्रहों का स्थान



उपरोक्त भाव चक्र से राशियों एवम् ग्रहों का स्थान स्पष्ट किया गया है। प्रथम भाव में मेष राशि व मंगल ग्रह, द्वितीय भाव में वृष राशि व शुक्र ग्रह, तृतीय भाव में मिथुन राशि व बुध ग्रह स्थित है। पाठकगण भाव चक्र देखकर स्वयं राशियों और ग्रहों के स्थान का आकलन कर सकते हैं।

विशेष ज्ञान

1. कुण्डली में जातक का वृहस्पति उच्च हो किन्तु यदि जातक अपने पिता, गुरु, दादा, ब्राह्मण आदि का अपमान करता हो तो उच्च वृहस्पति होकर भी अपना शुभ प्रभाव नहीं देता।

2. कुण्डली में शनि उच्च हो किन्तु जातक (व्यक्ति जिसकी कुण्डली हो) शराब, मांस, मछली आदि का सेवन करता हो तथा अपने चाचा, ताऊ आदि का अपमान करता हो तो शनि अपना शुभ प्रभाव नहीं देता।

3. जातक की कुण्डली में चन्द्र उच्च हो किन्तु उसके द्वारा माता का अपमान होता हो तो चन्द्र उसको शुभ प्रभाव नहीं देता।

4. कुण्डली में बुध उच्च हो किन्तु जातक द्वारा बहन, बुआ आदि का अपमान होता हो अर्थात् जातक अपनी बहन और बुआ का अपमान करता हो तो बुध उच्च होते हुए भी शुभ प्रभाव नहीं देता।

5. शुक्र उच्च हो और जातक अपनी स्त्री का अपमान करता हो तो जातक को शुक्र अपना शुभ प्रभाव नहीं प्रदान करता।

6. जिस जातक की जन्म कुण्डली में मंगल उच्च हो किन्तु जातक अपने मित्र, गुरु, रिश्तेदार आदि के साथ विश्वासघात करता हो तो जातक के लिए मंगल शुभत्व नहीं देता।

भाव नं. 5, 8 और 11 में कोई ग्रह न तो उच्च होता है और न ही नीच होता है।

पाठकों—

अब तक तक मैंने ग्रहों, राशियों, राशियों के स्वामी, कुण्डली के किस भाव से क्या विचार करें, ग्रहों के बल, कुण्डली में ग्रहों की स्थिति आदि के विषय में स्पष्ट किया। अब मुख्य विषय वस्तु-'शनि' के कोप, प्रकोप आदि के विषय में विस्तृत वर्णन करेंगे।

'शनि' का नाम सुनते ही मन में एक अनजाना सा भय उत्पन्न हो जाता है। हो भी क्यों न। शनि के कोप से रावण की सोने की लंका ध्वस्त हो गयी। उसका समूचा वंश नष्ट हो गया। शनि की दृष्टि पड़ने से श्री गणेश जी का मस्तक कट गया-आदि ऐसे अनेको आख्यान मिलेगें जिससे स्पष्ट होता है कि शनि की कुदृष्टि का मतलब है—नाश।

शनि की साढ़े सति का प्रभाव जिस पर हो उसे भगवान ही बचाये। कुण्डली बनवाते समय लोग ज्योतिषाचार्य से 'शनि ग्रह' का विशेष स्पष्टीकरण मांगते हैं। इसलिए कि उनके जीवन में शनि की छाया तो नहीं है। अगर शनि प्रभावी हुआ तो जीवन कष्टमय होगा।

सौरमण्डल में शनि ग्रह की स्थिति

सौर मण्डल में स्थित शनि ग्रह पृथ्वी से 89000000 मील की दूरी स्थित है तथा सूर्य से इसकी दूरी 88,60,00,000 मील है। तुलनात्मक दृष्टि से पृथ्वी की अपेक्षा 95 गुना अधिक गुरुत्वीय शक्ति (MAGNETIC FIELD) है। सूर्य की एक बार परिक्रमा करने में इसे 29 वर्ष का समय लगता है। अत्यन्त ही मंथर (धीमे) गति से गतिशील यह ग्रह ढाई वर्ष में एक राशि को पार करता है।

पौराणिक आख्यान (कथा)

शनि की क्रूरता सर्वविदित है। ऐसा ही कोई व्यक्ति होगा जो 'शनि' का नाम सुनकर भयभीत न हो। सूर्य देव के नौ पुत्रों में 'शनि' का नाम विशेष उल्लेखनीय है। भगवान भास्कर (सूर्यदेव) की पत्नी 'छाया' से उत्पन्न शनिदेव श्यामवर्ण के हैं। शनिदेव बाल्यकाल से ही क्रोधी स्वभाव के थे। भगवान सूर्यदेव ने अपना राज्य

अपने पुत्रों में बांट दिया अर्थात् अपनी प्रत्येक संतान को एक-एक लोक का स्वामी बना दिया। शनिदेव अपने एक लोक के राज्य से संतुष्ट न थे अतः अपने भाइयों का राज्य हड़पने के उद्देश्य से उन्होंने योजना बनायी और अधिक शक्ति प्राप्त करने के लिए उन्होंने ब्रह्मा जी का कठिन तप करना आरम्भ कर दिया। शनि के कठिन तप से ब्रह्मा जी ने प्रकट होकर वर मांगने को कहा तब शनिदेव बोले-हे भगवान् ! जिस परह मेरी शुभ-दृष्टि पड़े वह धन-सम्पत्ति, भवन, सन्तान आदि से परिपूर्ण हो जाये तथा जिस पर कुपित (क्रोधित), या नीच दृष्टि पड़े उसका सर्वनाश हो जाये। बह्मा जी ने उन्हें इच्छित वर प्रदान किया और अपने लोक को चले गये।

शक्ति प्राप्त होने के उपरान्त शनिदेव अपने भाइयों का राज्य छीनने को तत्पर हुए तब वे सभी भागकर अपने पिता सूर्यदेव के पास गये। सूर्यदेव ने जाकर भगवान शिव से प्रार्थना की। सूर्यदेव की प्रार्थना स्वीकार करके शिव जी ने अपने नन्दी, वीरभद्र आदि गणों को शनि को मार डालने के लिए भेजा किन्तु वे सभी गण शनि से परास्त होकर लौट आये तब स्वयं शिव जी क्रोधित होकर शनि से युद्ध करने गये और शनि को भस्म करने हेतु अपना तीसरा नेत्र खोला। शनि ने भी अपनी तीव्र मारक दृष्टि से शिव की ओर देखा। दोनों की दृष्टियों से निकली 'दिव्य-ज्योति' से सारा ब्रह्माण्ड आच्छादित हो गया। तत्पश्चात् शिव जी अपने त्रिशूल के भीषण प्रहार से शनि को मूर्छित कर दिया। अपने पुत्र को मृतक जानकर सूर्यदेव का मन विह्वल हो गया। उन्होंने शनि को जीवनदान देने के लिए विनय की।

भगवान भास्कर की विनती सुनकर भगवान आशुतोष (शिव जी) ने शनि की मूर्छा दूर कर दी। शनि का अभिमान चूर-चूर हो गया और भगवान के चरणों में अपना मस्तक रखकर क्षमा याचना की तब भगवान शिव ने प्रसन्न होकर शनिदेव को अपना सेवक बना लिया और दण्डाधिकारी का पद प्रदान किया।

शनि के क्रूर होने के विषय में एक और पौराणिक आख्यान मिलता है एक बार शनिदेव की पत्नी ऋतुमती हुई। ऋतु-स्नान के पश्चात पुत्र की अभिलाषा से वह अपने पतिदेव के सम्मुख उपस्थित हुई किन्तु भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति रखने वाले शनिदेव जी उनके ध्यान में मग्न थे। उनकी पत्नी का ऋतु व्यर्थ चला गया तब उसने क्रोधित होकर अपने पति शनिदेव को श्राप दिया कि तुम्हारी दृष्टि जिस पर पड़ेगी उसका सर्वनाश हो जायेगा। तभी से शनि की दृष्टि नीच हो गयी। शनि की नीच दृष्टि पड़ने से महाप्रतापी, वेदों के ज्ञाता महापंडित रावण का नाश हुआ जबकि उसने शिव जी से वरदान प्राप्त किया था। वेद ज्ञाता था। सूर्य, कुबेर, यम, वायु आदि उसका पानी भरते थे किन्तु फिर भी शनि के प्रकोप का संशय (शक) उसे बना रहता था अतः उसने एक बार शनि के साम्राज्य पर चढ़ाई

कर दी और शनि को बन्दी बनाकर बन्दीगृह में लाकर उल्टा लटका दिया। रावण की शक्ति के सम्मुख शनिदेव असहाय हो गये। कुछ काल पश्चात् सीता जी का पता लगाने के लिए पवनपुत्र हनुमान जी का आगमन लंका में हुआ। उन्होंने शनि को उल्टे लटके देखा। हनुमान जी को देखकर शनिदेव करुण भाव से बोले-हे हनुमान जी! रावण ने अपनी शक्ति से मुझे बन्दी बना दिया है कृपया आप मुझे मुक्त करें। मैं अपनी वक्र दृष्टि से लंकापुरी को भस्म कर सकने की सामर्थ्य रखता हूं। उसने मेरी शक्ति को कीलित कर दिया है।

तब हनुमान जी ने शनि को मुक्त करके उनका कीलन समाप्त किया तत्पश्चात् शनि की कुपित दृष्टि के प्रभाव से समूची लंका जलकर भस्म हो गयी। जब शनि की कुदृष्टि से लंकापति रावण न बच सका तो साधारण मनुष्य की बात ही क्या ?

शनि को नीच दृष्टि अथवा साढ़ेसति ढैय्या आदि महानतम् प्रकोप से बचाव कैसे हो ? शनि की कुदृष्टि से जातकों के बचाव हेतु अनेक ज्योतिषीय पुस्तकों का मैंने गूढ़ अध्ययन किया तत्पश्चात् इस 'अनमोल' पुस्तक का सृजन करके आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं जिससे कि आप उपाय करके शनि के प्रकोप से मुक्त हो सकें।

शनि ग्रह से सम्बन्धित कुछ विशेष तथ्य

शनि के श्रेष्ठ घर, मंदे घर, रंग, शत्रु ग्रह मित्र ग्रह,कार्य,व्यवसाय आदि की संक्षिप्त तालिका—

पक्का घर—10

श्रेष्ठ घर—1,3,7,12

मंदे घर—1,4,5-6

रंग—काला

शत्रु ग्रह—सूर्य, चंद्र, मंगल

मित्र ग्रह—बुध,शुक्र,राहु

उच्च—7

नीच—1

कार्य—डाक्टरी, तेल व लोहे का व्यापार

बीमारी—खाँसी, उदर पीड़ा

दिन—शनिवार

पेशा व्यासाय—लुहार, मैकेनिक, बढ़ई

विशेषता—अक्खड़, कारीगर

गुण—चालाकी, मौन

शक्ति—जादू टोना देखने दिखाने की

पशु—भैंस या भैंसा

वृक्ष—कीकर (बबूल), खजूर का पेड़

अनाज—उड़द की दाल, सरसों

निवास—वीराना, श्मशान, मयखाना

समय—सारी रात

शनि ग्रह अकेला हो और उस पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो तो 2, 3, 7,12 घर में शुभ होता है और 1, 4, 5, 6 घर में अशुभ होता है।

शनि की स्थिति

शनि मकर और कुम्भ राशि का स्वामी है। यदि यह इन राशियों के भावों (खानों) में स्थित हो तो इसे 'स्वगृही' (अपने घर में) कहा जाता है। कुण्डली में इसके भाव 10 और 11 हैं। शनि प्राय: एक राशि में $2\frac{1}{2}$ वर्ष रहता है। यह तुला राशि में उच्च होता है और मेष में नीच होता है। कर्क, सिंह और बृश्चिक इसकी शत्रु राशियां हैं। शनि के प्रभाव से जातक में आत्मविश्वास कूट-कूट कर भरा होता है किन्तु अंहकारी होता है यदि शनि अशुभ स्थिति में हो तो जातक आलसी, अकर्मठ, अविश्वासी ईर्ष्यालु, क्रोधी और झूठा वचन बोलने वाला अपव्ययी होता है। शनि जिस भाव में स्थित होता है वहां से तीसरे और दसवें भाव को एक चरण तथा पूर्ण दृष्टि से देखता है चौथे भाव को तीन चरण दृष्टि से, पांचवे भाव को दो चरण दृष्टि को, सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से, आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से, नवम्भाव को दो चरण दृष्टि से देखता है।

द्वादश भावों में शनि का फल

प्रत्येक जन्म कुण्डली में 12 खाने बने होते हैं जिन्हें 'भाव' कहते हैं। कुण्डली के जिस भाव में शनि स्थित होता है। उस भाव से फलाफल जानने के लिए द्वादश भावों में शनि की स्थिति का वर्णन आगे कर रहे हैं। अत: पाठक गण ध्यानपूर्वक पढ़ें और शनि के प्रभाव का फल भावानुसार जानें—

प्रथम भाव—जातक की कुण्डली में शनि यदि प्रथम भाव (तनुभाव) में

स्थित है तो वह जातक देश या नगर में अति सम्माननीय और धन-सम्पत्ति से भरपूर होगा। राजा के समान वैभवशाली और सम्मान प्राप्त करेगा। यदि प्रथम भाव में शनि के साथ मिथुन राशि हो तो जातक का दो विवाह योग बनता है तथा सन्तानहीन रहने की सम्भावना होती है।

द्वितीय भाव—कुण्डली के द्वितीय भाव में शनि की स्थिति जातक को परदेशी, व्यसनी बनाता है। ऐसे जातक अपने परिवार से दूर रहकर जीवन-यापन करते हैं तथा धनसम्पत्ति अर्जित करते हैं। राजा द्वारा सम्मान प्राप्त होता है। ऐसे जातकों को गोपनीय विद्याओं में रुचि होती है। जातक को व्यापार से अत्यधिक लाभ प्राप्त होता है। ऐसे जातक स्वभावत: चालाक और घूर्त किस्म के भी होते हैं। और अपनी वाणी चतुरता से सभी कुछ (धन-सम्पत्ति) प्राप्त करते हैं किन्तु शनि बलहीन हो तो दरिद्रता का द्योतक है।

तृतीय भाव—तृतीय भाव में विराजमान शनि जातक को धन-वाहन से परिपूर्ण तो करता ही है। साथ ही जातक को बल एवम् पराक्रम भी प्रदान करता है। ऐसे जातक ग्राम प्रधान आदि होते हैं किन्तु ऐसे जातकों में न तो धार्मिकता होती है और न ही पारिवारिक जीवन सुखमय होता है। मन अशान्त रहता है। पत्नी का सुख मिलता है।

चतुर्थ भाव—जन्म कुण्डली के चतुर्थ भाव में शनि बैठा हो तो जातक का सुख-चैन नष्ट हो जाता है। जातक सदैव दु:खी रहता है जबकि चतुर्थ भाव सुख भाव होता है किन्तु शनि के प्रकोप से जातक को दु:खी होना पड़ता है। शारीरिक रूप से जातक दुर्बल, आलसी, झगड़ालू और पित्त की व्याधि से ग्रस्त होता है। शनि के प्रभाव से जातक को पैतृक सम्पत्ति से भी वंचित होना पड़ता है।

पंचम भाव—पंचम भाव 'संन्तान' का है। यदि शनि उच्च, स्वग्रही अथवा मित्रगृही है तो पुत्र-प्राप्ति सम्भव है। जिस जातक की कुण्डली में शनि पंचम भाव में हो वह जातक रोग से पीड़ित रहता है। हृदय रोग, दुर्बल शरीर और गुप्त रोग से पीड़ित होता है। हृदय गति रुकने (HEART-FAIL) से मृत्यु सम्भव है।

षष्ठम भाव—कुण्डली के षष्ठम भाव (छठेखाने) में स्थित शनि के प्रभाव से जातक ज्ञानी-विद्वान, पुष्ट शरीर वाला तथा नीरोग होता है। उच्च राशि स्थित शनि जातक की सभी मनोकामनाएं पूर्ण करता है। जातक को बचपन (Child-Hood) में अधिक चोटें लगती हैं। जातक का शरीर दीर्घ काल तक रोगों से ग्रस्त रहता है।

सप्तम् भाव—सप्तम् भाव में स्थित शनि का जातक नीच प्रवृत्तिवाला कामुक, परस्त्री गामी, अव्वल दर्जे का झूठा, ठग और दुर्बल शरीर का होता

है। शनि सातवें घर में और मंगल-शुक्र मंदे हो तो जातक भाग्यहीन होता है, जातक चिंतित और अस्वस्थ रहता है। जातक शराबी और मांसाहारी भी हो सकता है।

अष्टम भाव—यदि कुण्डली के अष्टम भाव में शनि स्थित है तो शनि के प्रभाव से ऐसे जातक हृदय रोग, चर्मरोग, पाणडुरोग, रक्तविकार से ग्रसित होते हैं। जातक कृश शरीर वाला होता है। अष्टम भाव में स्थित शनि के प्रभाव से जातक नशाखोर भी होते हैं। सदैव धन की कमी महसूस होती है। शत्रु ग्रहों के साथ शनि विराजमान हो तो महान् अनिष्टकारी होता है।

नवम भाव—नवम भाव में शनि स्थित हो तो जातक धार्मिक प्रवृत्ति वाला होता है। जातक राजनीति के क्षेत्र में सफलता अर्जित करता है। शारीरिक दृष्टिकोण से दुर्बल होता है। नीच शनि अशुभ और अनिष्टकारी होता है किन्तु यदि उच्च राशिस्थ है अथवा शुभ है तो जातक सुख-समृद्धि से पूर्ण होता है। ऐसे जातक स्वभाव से कंजूस (MISER) होते हैं। अशुभ प्रभाव का शनि विदेश में अधिक कष्ट देता है। जातक की आयु लम्बी होती है।

दशम भाव—जिस जातक की कुण्डली में शनि दशम भाव में बैठा हो, ऐसे जातक संगीत प्रिय और उद्यमी होते हैं। वे कर्म में अधिक विश्वास करते हैं। जातक स्वभावतः नम्र होता है। ऐसे जातक अक्सर, गांव के प्रधान, मुखिया या सरपंच होते हैं। सम्मानित और धनवान होते हैं। नीच रशिस्थ शनि के प्रभाव से गुप्त रोग हो सकता है।

एकादश भाव—शनि एकादश भाव में स्थित हो तो उसके प्रभाव से जातक धार्मिक विचार वाला होता है। जातक रोगहीन, क्रोधी और नीति निपुण होता है। जीवन में हर प्रकार का सुख जातक को प्राप्त होता है। एकादश भाव में शनि अशुभ हो तो जातक सन्तानहीन होता है। जातक स्कूटर, कार, मकान आदि से युक्त होता है।

द्वादश भाव—कुण्डली के द्वादश भाव में शनि विराजमान हो तो जातक क्रूर, क्रोधी, नीच की संगति करने वाला, पाप स्वभाव का होता है। आलसी, धनहीन और निर्लज्ज होता है। द्वादश भाव में शनि शुभ हो तो जातक धनवान होता है किन्तु धन की परवाह नहीं करता। शनि द्वादश भाव में स्थित हो और राहु-केतु उच्च का हो तो जातक करोड़पति होता है। द्वादशभाव का अशुभ शनि कारोबार व्यवसाय आदि के लिए हानि देता है।

शनि का राशिगत प्रभाव (फल)

समस्त राशियां 12 हैं। इन बारह राशियों के स्थिर, होकर शनि अलग-अलग, शुभ-अशुभ फल प्रदान करता है। इन बारह राशियों में शनि राशिगत रूप से जो फल प्रदान करता है वह इस प्रकार है—

मेष राशिस्थ—मेष राशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक दुर्बल शरीर वाला अत्यन्त क्रोधी स्वभाव का होता है। ऐसे जातक कलहप्रिय, कुत्सित विचार वाले होते हैं। दुराचारी और एहसान फरामोश होते हैं। चर्मरोग, रक्त विचार आदि से पीड़ित तथा अशान्त होते हैं।

वृष राशिस्थ—जिस जातक की कुण्डली में वृष राशि का शनि हो वह जातक साहसी, दुष्ट प्रकृति का, दुराचारी, मिथ्यावादी (झूठ बोलने वाला) होता है। स्त्रियों को विशेष रूप से आकर्षित करने की क्षमता ऐसे जातकों में होती है स्त्रियां उस पर मर-मिटती हैं। जातक सुखी और धन-सम्पत्ति वाला होता है।

मिथुन राशिस्थ—मिथुन राशि स्थित शनि का जातक कपट विद्या में पारंगत, दुराचारी और पाखंडी होता है। ऐसा जातक उद्योगी होता है किन्तु अपव्यय (फिजूल खर्च) के कारण उसकी आर्थिक स्थिति डांवाडोल रहती है। ऐसे जातक अपनी वाणी चतुरता से स्त्रियों से लाभप्राप्त करते हैं। अपनी निजी बातों को गोपनीय रखता है किन्तु ओजस्वी वाणी से औरों को प्रभावित करके उनके मन की बातें जान लेता है। जातक काम-पिपासु होता है। विदेश जाने का अवसर मिलता है।

कर्क राशिस्थ—कर्क राशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक को माता का प्यार दुलार नहीं मिल पाता। बाल्यकाल कष्टमय होता है। ऐसे जातक जीवन के मध्यकाल में धन-मान-सम्मान अर्जित करते हैं। जातक उदार-हृदय होता है किन्तु फिर भी उसका अक्सर अपमान ही होता है। स्त्री-सुख की कमी और रोगग्रसित जातक होता है। जातक स्वभावत: चन्चल होता है।

सिंह राशिस्थ—जातक की कुण्डली में सिंह राशि का शनि हो तो उस जातक को शनि के प्रभाव से जीवन भर कष्ट सहने पड़ते हैं। जातक अक्सर विवादों में रहता है। सिंह राशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक लेखक, वैज्ञानिक आदि बनता है। अलबत्ता उसे कदम-कदम पर विरोध मिलता है फिर भी वह सफल होता है।

कन्या राशिस्थ—कन्या राशि स्थित शनि का जातक बेईमान और छल-

प्रपंच वाला होता है। ऐसे जातकों पर भूलकर भी विश्वास नहीं करना चाहिए। जातक अपने छल-बल और तीव्र प्रखर बुद्धि के बूते पर उद्योग व्यापार के क्षेत्र में दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करता है किन्तु ऐसे जातकों का अन्त अच्छा नहीं होता।

तुला राशिस्थ—तुला राशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक सुख समृद्धि (धन-सम्पत्ति) से भरपूर होता है। राजाओं के समान जीवन यापन करता है। ऐसे जातक दिन पर दिन प्रगति करते हैं। ऐसे जातकों में नेतृत्व करने की अद्‌भुत क्षमता होती है।

वृश्चिक राशिस्थ—वृश्चिक राशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक को विदेश प्रवास करना पड़ता है। ऐसे जातक नीच और कुटिल व्यक्तियों की संगति करते हैं जो स्वयं कुमार्गी होते हैं और जातक को भी कुमार्ग की ओर ले जाते हैं। जातक शनि के प्रभाव से पूर्ण रूप से प्रभावित रहता है और किसी की बात नहीं मानता स्वयं अपने विचारों को ही उच्च स्थान प्रदान करता है।

धनु राशिस्थ—धनु राशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक अपने विरोधियों को परास्त करके यश और मान प्राप्त करता है। स्त्री और सन्तान पक्ष से सुखी जातक अत्यधित धन-सम्पत्ति अर्जित करता है। शत्रुओं पर अपना प्रभुत्व कायम रखता है।

मकर राशिस्थ—मकर राशि स्थित शनि के प्रभाव से जातक कामुक, और परस्त्रीगामी होता है। ऐसे जातकों को आभूषणों से विशेष प्रेम होता है। दूसरों की जमीन-जायदाद पर आधिपत्य करने में समर्थ, वैदिक ज्ञाता और उद्यमी होता है।

कुम्भ राशिस्थ—यदि कुण्डली में कुम्भ राशि पर शनि स्थित हो तो जातक नास्तिक (देवी-देवताओं पर विश्वास न करने वाला) होता है। परिश्रम से सफलता प्राप्त करने का आकांक्षी (इच्छुक) होता है। ऐसे जातक परस्त्रीगामी भी होते हैं—ऐसा कुछ विद्वानों का मत है। बाक्‌पटु, कुटिल और धूर्त भी होते हैं अत: ऐसे लोगों से सावधान रहना ही उत्तम है।

मीन राशिस्थ—जातक की कुण्डली में मीन राशि का शनि हो तो जातक नम्र और शालीन होता है। अपनी शालीनता और सद्‌गुणों के कारण वह हर किसी का प्रिय बन जाता है। जातक बुद्धि-विवेक से पूर्ण तथा भाग्यशाली होता है। मीन राशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक अधिकारी वर्ग पर प्रतिष्ठित होता है अथवा राजपुरुष, नेता, जमींदार या बड़ी मिल्कियत का स्वामी होगा। समस्त सुख-ऐश्वर्यों का भोग करेगा।

शनि की शुभ एवम् अशुभ दशाओं का फल

शुभ दशा—कुण्डली में शनि की शुभ-दशा हो तो जातक कारोबार में लाभ, व्यावसायिक लाभ, अधिकारी होना या जातक गांव, नगर अथवा प्रदेश में विशिष्ठ पद प्राप्त करता है। राजनेता या ग्राम प्रमुख हो सकता है। शनि के शुभ प्रभाव से जातक तीव्र बुद्धि वाला होता है। उच्च पदस्थ अधिकारी बनता है। शुभ शनि जातक को राजा जैसा सम्मान प्रदान करवाता है।

अशुभ दशा—अशुभ का शनि जातक को प्रत्येक विधि से त्रास देता है, पीड़ा पहुचाता है। जातक को शारीरिक कष्ट तो शनि प्रदान करता ही है। साथ के साथ पारिवारिक कलह, सम्पत्ति नाश, रोग-ब्याध, अपमान, राजकीय कोप का भाजन, अशुभ एवम् निन्दनीय कर्मो की ओर प्रवृत्ति तथा पाप कर्म का भागी बनाता है। अर्थात् अशुभ शनि जातक का जीवन दुःखमय करता है।

शनि और सूर्य के योग से द्वादश भावों का फल

प्रथम भाव में शनि के साथ सूर्य का योग होने पर धन की कमी, पारिवारिक कलह, संचित सम्पत्ति का नष्ट होना, उन्माद, अकर्मण्यता, रोग-व्याधि आदि का प्रभाव रहता है। शनि की ढैया का प्रभाव भी जातक पर संभावित है यदि जातक की कुण्डली के द्वितीय भाव में शनि-सूर्य का योग है तो जातक कृपण होगा, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी। द्विविवाह के भी योग बनते हैं। विवाह बिलम्ब से भी होने की सम्भावना है। दृष्टि दोष भी जातक को हो सकता है। तृतीय भाव में शनि और सूर्य का योग हो तो जातक भौतिक सुखों से युक्त होता है। ऐसे जातकों का भाग्योदय प्रायः 26 वर्ष के पश्चात् होता है।

जिस जातक की कुण्डली के चतुर्थ भाव में शनि और सूर्य का योग होता है ऐसे जातकों का भाग्योदय अपनी जन्म स्थली से दूर प्रायः परदेश जाने पर होता है। पंचम भाव में स्थित शनि-सूर्य का योग जातक को धन कमाने के अनेक मार्ग प्रदान करता है। पारिवारिक कलह क्लेश से जातक परेशान रहता है। अनेक सन्तान के योग बनते हैं।

षष्ठम भाव का शनि-सूर्य वाला जातक क्रोधी, दुर्बल, संघर्षशील होता है। इन ग्रहों के योग से जातक खांसी, दमा, क्षयरोग का रोगी हो सकता है। सप्तम भाव

में शनि-सूर्य की युति से ज्यादातर जातक को विपरीत परिणाम ही मिलते हैं। मानसिक तनाव से जातक त्रस्त रहता है।

अष्टम भाव में शनि-सूर्य का योग दरिद्रता का द्योतक है नवम् भाव में युति हो तो जातक नास्तिक होता है। जातक विरोधी स्वभाव का होता है। दशम भाव में शनि-सूर्य के योग के प्रभाव से जातक साहित्यकार ज्योतिषी, राजनीतिज्ञ तथा व्यभिचारी हो सकता है। दरिद्री के भी योग बनते हैं। एकादश भाव में स्थित शनि-सूर्य का योग अपयश और निष्फलता का द्योतक है तथा द्वादश भाव में दो विवाह का योग, पारिवारिक सुख, विकास और लोक प्रियता प्रदान करता है।

शनि और चन्द्र के योग का फल

प्रथम भाव में शनि और चन्द्रमा का योग माता-पिता की मृत्यु का कारक है। दूसरों के द्वारा जातक का पालन पोषण हो। जातक को शनि-चन्द्र योग ग्रह के प्रभाव से अपमानित एवम् संघर्षमय जीवन व्यतीत करना पड़ता है। जातक लम्बी आयु वाला संघर्षशील होगा। द्वितीय भाव में शनि-चन्द्र का योग धनहानि कारक है तथा शिक्षा की कमी करता है। तृतीय भाव में शनि-चन्द्र के योग के प्रभाव से जातक का जीवन कष्टमय व्यतीत होता है। 40 वर्ष के पश्चात् सुख का समय आता है।

यदि जातक की कुण्डली के चतुर्थ भाव में शनि-चन्द्रमा का योग हो तो जातक दुःखी रहता है। पंचम भाव में शनि-चन्द्र का योग निःसन्तान, दाम्पत्य सुख में कमी तथा धार्मिकता का प्रतीक है। षष्ठम भाव में यह योग हो तो जातक रोगी होता है।

सप्तम भाव में शनि-चन्द्र का योग जातक की आजीविका के साधन प्रदान करने का कारक है। जातक शान्त स्वभाव वाला होता है। अष्टम भाव में शनि-चन्द्र की युति हो तो जातक रोग में पीड़ित रहता है। नवम भाव में यह योग जातक के जीवन को स्थिर नहीं होने देता।

दशम भाव में शनि-चन्द्र का योग जातक के कर्म क्षेत्र को प्रभावित करता है। एकादश भाव में यह योग धन सुख एवम् सन्तान सुख प्रदान करता है। जातक की कुण्डली के द्वादश भाव में शनि-चन्द्र का योग जातक को साढ़ेसाती का प्रभाव डालता है जिसके कारण जातक के जीवन काल में अनेक प्रकार के उतार-चढ़ाव आते हैं।

शनि और मंगल के योग का फल

कुण्डली के प्रथम भाव में शनि का मंगल से योग जातक के व्यवसाय के क्षेत्र में बाधा पहुंचाता है। इसका विशेष प्रभाव मेष, तुला और मकरगत राशियों पर होता है। दूसरे भाव में यह योग पैतृक सम्पत्ति का नाश करता है। जातक कठोर प्रकृति का होगा। कुण्डली के तृतीय भाव में शनि का मंगल से योग हो तो दरिद्रता, अधिक सन्तान, जातक का जीवनकाल संघर्षपूर्ण होगा। रोजी-रोजगार सामान्य होगे। चतुर्थ भाव में शनि-मंगल योग के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति 25 वर्ष के पश्चात् ही होगी। जातक को माता-पिता का वियोग भी हो सकता है।

पंचम भाव में शनि-मंगल का योग जातक को उच्च शिक्षा प्रदान करता है। जातक भूगर्भशास्त्र का ज्ञाता, डाक्टर आदि बनेगा किन्तु ऐसे जातक ज्यादातर छल-कपट वाले तथा स्वार्थी होते हैं। षष्ठम भाव में योग हो तो जातक दुस्साहती प्रवृत्ति का होगा। मृत्यु से कदापि न डरेगा। न होने वाले कार्य को भी करने का प्रयास करेगा। अष्टम भाव का योग सामान्य भाग्य प्रकट करता है अर्थात् जातक सामान्य जीवन व्यतीत करेगा।

नवम भाव में शनि के साथ मंगल विराजित हो तो इन ग्रहों के यौगिक प्रभाव जातक की स्थायी सम्पत्ति को नष्ट करता है। पारिवारिक कलह का भी द्योतक है। जातक प्रवासी भी हो सकता है और यदि शनि के साथ मंगल दशम भाव में विराजमान हो तो जातक के भाग्य का द्वार खुल जाता है। ऐसे जातक इन्जीनियर, डाक्टर, वैज्ञानिक, उच्च पदाधिकारी होते हैं। एकादश भाव का योग भी जातक के लिए महान् शुभ फलदायक हैं किन्तु द्वादश भाव में शुभ नहीं होता। जातक को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

शनि और बुध के योग का फल

कुण्डली के प्रथम भाव में शनि और बुध का योग हो तो जातक परोपकारी तथा सरल हृदय वाला होगा। सत्यभाषी होने के कारण उसे सम्मान तो मिलेगा किन्तु यदा-कदा अपयश भी प्राप्त होगा। द्वितीय भाव में शनि के साथ बुध विराजमान हो तो इन ग्रहों के सम्मिलित प्रभाव से जातक क्रोधी होगा तृतीय भाव योग जातक को शिक्षा के क्षेत्र में बाधा उत्पन्न करेगा अर्थात् जातक की शिक्षा अधूरी होगी। सुख से हीन हो चतुर्थ भाव में यह योग हो तो सामान्य शिक्षित होगा किन्तु उदार स्वभाव के कारण सम्मान प्राप्त करेगा। ऐसे जातक लेखन-प्रिय होते हैं।

पंचम भाव में शनि-बुध योग का जातक सामान्य शिक्षित होगा किन्तु अनुचित साधनों से धनार्जन करेगा। षष्ठम भाव में यदि शनि के साथ बुध विराजमान है तो इन ग्रहों के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रमी होगा। सप्तम भाव में शनि-बुध योग जिस जातक की कुण्डली में हो। ऐसे जातक को सुन्दर पत्नी प्राप्त होगी। जातक लेखक या अध्यापक होगा व्यापारी भी हो सकता है। व्यापार से लाभ होगा। शनि और बुध का योग अष्टम भाव में पूर्ण रूप से अशुभ है। नवम भाव में योग हो तो जातक आलसी तथा चंचल मानसिकता वाला होगा। दशम भाव में भी यह योग अशुभ ही है।

शनि बुध का योग एकादश भाव में हो तो जातक गलत कार्यों से धनार्जन करेगा। अनेक विघ्न-बाधाओं से जूझते हुए शिक्षा प्राप्त करेगा। जातक की कुण्डली के द्वादश भाव में शनि के साथ बुध का योग जातक को धन-सम्पत्ति से पूर्ण करता है अर्थात् जातक धनवान होगा।

शनि और वृहस्पति के योग का फल

कुण्डली के प्रथम भाव (लग्न) में शनि के साथ गुरु का योग हो तो जातक सामान्य धन-सम्पत्ति वाला होगा। द्वितीय भाव में शनि+गुरु के प्रभाव का योग हो तो जातक को स्थायी धन लाभ होगा किन्तु ऐसे जातक अधिक व्यय करते हैं। सन्तान से क्लेश रहेगा। तृतीय भाव में शनि-गुरु के प्रभाव से जातक के जीवनकाल का अधिक समय परिश्रम करते हुए व्यतीत होगा।

चतुर्थ भाव में शनि के साथ गुरु विराजमान हो तो भौतिक सुख की कमी, पारिवारिक कलह, माता या पिता की मृत्यु जल्दी हो आदि विषयों पर विचार किया जाता है। कुण्डली के पंचम भाव में शनि-गुरु की युति हो तो जातक का जीवन सामान्य होगा। जातक लेखन, व्यापार आदि से जीवन यापन करेगा।

षष्ठम भाव में उक्त ग्रहों का योग होने पर भी जातक को सामान्य फल ही प्राप्त होंगे तथा सप्तम भाव में शनि-वृहस्पति हो तो जातक को पारिवारिक कलह-क्लेश, धन की अल्पता अथवा दरिद्रता आदि पर विचार करें। अष्टम भाव में उक्त ग्रहों का योग जातक को सामान्य सुख देता है। जातक की आयु लम्बी होगी। धनार्जन का सदैव प्रयास करेगा। नवम् भाव में यदि शनि-गुरु विराजमान हैं तो जातक को सामान्य फल ही प्राप्त होंगे। ग्रहों का जातक पर विशेष प्रभाव नहीं होगा।

दशम भाव में शनि-वृहस्पति की युति जातक को माता-पिता का सुख प्रदान

करता है। जातक सामान्य शिक्षित होगा किन्तु पारिवारिक दायित्व का निर्वाह करेगा। एकादश भाव में शनि-गुरु की युति का प्रभाव जातक के जीवन का प्रथम सोपान कष्टप्रद किन्तु बाद का समय सुखमय होगा। द्वादश भाव में स्थित शनि-गुरु का योग जातक को मान-सम्मान तथा धन सम्पत्ति प्रदायक है।

शनि और शुक्र के योग का फल

कुण्डली के प्रथम भाव में शनि और शुक्र की युति हो तो द्विभार्या योग बनता है। सामान्य सुख प्राप्त होगा। द्वितीय भाव में शनि-शुक्र योग का जातक उदार स्वभाव का होगा, परिवार सुखी होगा। कुण्डली के तृतीय भाव में स्थित शनि-शुक्र युति के जातक को सामान्य पारिवारिक सुख प्राप्त होगा। अपने भाइयों से अलग होकर जीवन व्यतीत करेगा।

चतुर्थ भाव में यह योग हो तो जातक मानसिक तनाव से ग्रस्त, परस्त्री गामी होगा। ऐसे जातकों का धन नाश हो जाता है। पंचम भाव में शनि-शुक्र का योग जातक को मातृ सुख, सन्तान सुख तो प्रदान करता ही है जातक उच्च शिक्षा भी प्राप्त करेगा। षष्ठम भाव में उक्त योग हो तो जातक रोगी होगा। सप्तम भाव का जातक पराधीन होगा और पराधीन को स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता। जिस जातक की कुण्डली के अष्टम् भाव में शनि के साथ शुक्र की युति होती है वह जातक भाग्यशाली होता है। अपनों से उसे धन लाभ होता है। नवम भाव में जातक के व्यभिचारी होने के योग बनते हैं।

कुण्डली के दशम भाव में शनि और शुक्र की स्थिति से जातक को कारावास होने की संभावना होती है। सन्तान सुख, धन-सम्पत्ति प्राप्त हो। जातक संगीत सुनने का शौकीन होगा। एकादश भाव विराजित उक्त ग्रह जातक को कष्ट-क्लेश प्रदान करते हैं। ऐसे जातक शनि का उपाय करें। तथा द्वादश भाव में यदि शनि के साथ शुक्र विराजमान है तो भी अशुभ फल ही जातक को प्राप्त होगा।

शनि की साढ़ेसाती

पाठकों—

शनि की साढ़ेसाती का नाम सुनकर ही जातक हृदय भय से कांप उठता है। जिस पर शनि की साढ़ेसाती का प्रकोप हो उसे दुःखों से भगवान ही बचाये। मेरे लिखने का यह तात्पर्य नहीं है कि शनि की साढ़ेसाती निवारण का कोई उपाय नहीं है बल्कि कथन का अर्थ यह है कि शनि की साढ़ेसाती महान कष्ट दायक होती है।

शनि की साढ़ेसाती क्या है ?

शनि गोचर में परभ्रिमण करता हुआ जन्मराशि से बारहवें भाव में आता है तब वह वहां पर ढाई वर्ष तक निवास करता है बाद में वह जन्मराशि में ढ़ाई वर्ष रहता है और पुनः जन्म राशि से दूसरे भाव में ढ़ाई वर्ष की अवधि तक रहता है। इस तरह तीनों भावों में ढ़ाई-ढ़ाई वर्ष रहता है। ढ़ाई वर्ष-ढ़ाई वर्ष तीन भावों का योग साढ़े सात वर्ष बनता है। यही शनि की साढ़े साती है।

शनि के साढ़ेसाती की स्थितियां

कब और किन स्थितियों में जातक पर शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव होता है। जातक की जन्म कुण्डली देखकर कैसे ज्ञात करें कि जातक पर शनि की साढ़ेसाती प्रभावी है अथवा नहीं।

जातक की जन्म राशि से द्वादश, प्रथम एवम् द्वितीय भाव में गोचर वश जब शनि आता है उस समय शनि की साढ़े साती होती है। अब पाठकों को यह बताते हैं कि किस राशि पर शनि आए तो किस जन्म राशि वालों पर शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव होगा ?

- ☞ गोचरवश शनि जब मीन, मेष और वृष राशि पर रहता है तब मेष राशि वालों पर साढ़ेसाती का प्रभाव रहता है।
- ☞ मेष, वृष और मिथुन राशि पर शनि गोचरवश हो तो वृष राशि वालों की साढ़ेसाती रहती है।
- ☞ वृष, मिथुन एवम् कर्क राशि पर शनि जब गोचरवश रहता है तब मिथुन राशि वालों पर शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव रहता है।
- ☞ मिथुन, कर्क और सिंह राशि पर जब शनि गोचर वश हो तो कर्क राशि वालों पर शनि की साढ़ेसाती रहती है।
- ☞ गोचरवश शनि जब कर्क, सिंह और कन्या राशि पर रहता है तब सिंह राशि वालों की साढ़ेसाती रहती है।
- ☞ सिंह, कन्या और तुला राशि पर शनि गोचरवश हो तो कन्या राशि वाले जातकों को साढ़ेसाती के प्रभाव में जाने।
- ☞ जब कन्या, तुला और वृश्चिक राशि पर शनि गोचर वश रहता है तब तुला राशि वालों की साढ़ेसाती रहती है।

- ☞ शनि गोचर वश तुला, वृश्चिक और धनु राशि पर रहता है तब वृश्चिक राशि वालों की साढ़ेसाती रहती है।
- ☞ वृश्चिक, धनु तथा मकर राशि पर शनि जब गोचर वश परिभ्रमण करता है तब धनु राशि वालों की साढ़ेसाती रहती है।
- ☞ जब मकर, कुम्भ और मीन राशि पर शनि गोचर वश भ्रमण करता है तब कुम्भ राशि वालों पर शनि की साढ़ेसाती होती है।
- ☞ कुम्भ, मीन और मेष राशि पर जब शनि भ्रमण करता है तब मीन राशि वालों पर शनि की साढ़ेसाती जाने।

शनि जन्म राशि के अनुसार उत्पन्न जातकों पर साढ़ेसाती का विशेष घातक समय

1. मेष—मध्य भाग घातक
2. वृष—प्रारम्भ घातक
3. मिथुन—मध्य घातक
4. कर्क—मध्य और अन्त घातक
5. सिंह—प्रारम्भ एवम् मध्य घातक
6. कन्या-प्रारम्भ घातक
7. तुला—अन्त घातक
8. वृश्चिक—मध्य एवम् अन्त घातक
9. धनु—आरम्भ एवम् मध्य घातक
10. मकर—मध्य घातक
11. कुम्भ—पूर्ण रुपेण शुभ
12. मीन—अन्त घातक

सुहृदय पाठक गण—

उपरोक्त स्थितियों में जातक पर शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव होता है। आप अपनी जन्म कुण्डली देखकर शनि की स्थिति के अनुसार साढ़ेसाती और ढैय्या का विचार करें।

शनि की साढ़ेसाती और ढैय्या के सामान्य उपाय

- सरसों के तेल का दान करें। शनिवार का दिन उत्तम है।
- सूर्य देव की उपासना आराधना करें।
- 'शनि यंत्र' धारण करें।
- बादाम बांटें।
- सर्प को दूध पिलायों।
- बहती दरिया में शराब प्रवाहित करें।
- घोड़े की नाल अथवा नाव (नौका-BOAT) की कील का छल्ला (RING) धारण करें।
- लोहा दान करें।

उपरोक्त उपाय शनि की साढ़ेसाती के प्रभाव को कम करने के सामन्य उपाय हैं जो कि जन मानस आसानी से करके लाभान्वित हो सकते हैं।

प्रश्न बनता है कि क्या ये उपाय सभी जातकों के लिए हैं अथवा व्यक्ति विशेष अर्थात् शनि की भाव विशेष स्थिति में हो तो इसके लिए हम यही कहेगें कि यह उपाय कोई भी जातक कर सकता है जिस पर शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव हो।

पाठकों में एक जिज्ञासा (जानने की इच्छा) अवश्य होगी कि क्या सभी के लिए शनि की साढ़ेसाती कुप्रभाव (अशुभ प्रभाव) ही देता है अथवा इसके बाद फिर जन्म राशि के अनुसार जातक पर शनि की साढ़ेसाती के प्रभाव और उसके उपाय, टोटकों पर चर्चा करेंगे।

शनि की साढ़ेसाती लाभ भी देती है.......या नहीं!

जिसासु जन—

प्रायः लोगों में यह अवधारणा बन चुकी है कि शनि की साढ़ेसाती एवम् ढैय्या महान् कष्टकारी होती है विशेष रुप से 'ढैय्या' को लोग 'मृत्युकारण' समझते हैं जबकि यह पूर्ण सत्य नहीं है। लोगों की ज्यादातर किसी भी वस्तु के उस

पलड़े पर नजर टिकी रहती है जो भारी होता है, नीचे झुका होता है जबकि दूसरा पहलू, दूसरा पलड़ा भी महत्त्वूपर्ण भूमिका निभाता है। अगर उस पर वजन (WEIGHT) न रखा जाये तो किसी वस्तु की तोल नहीं हो सकती यही बात यहां पर भी लागू होती है। शनि की साढ़ेसाती और ढैय्या अशुभ फलदायक है किन्तु कुछ जातकों के लिए महान शुभ फलदायक भी होता है और यह निर्भर करता है जातक की जन्मकुण्डली में शनि की स्थिति पर।

यदि जातक की जन्मकुण्डली में शनि त्रिकोण, लग्न अथवा तृतीय, षष्ठम या एकादश भावों का स्वामी होकर मित्र ग्रहों से दृष्ट होकर 5, 9, 3, 6, 11 भावों में विराजमान हो तो शनि उस जातक को बहुत अधिक धनवान बना सकता है। जातक को आर्थिक रूप से सम्पन्न एवम् ऐश्वर्य शाली बना सकता है जबकि 2, 7, 8 अथवा बारहवें भावों का स्वामी होकर अशुभ ग्रहों से युक्त हो या फिर अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक के लिए साढ़ेसाती अशुभ ही अशुभ है।

शनि की साढ़ेसाती एवम् ढैय्या के चरण

पाठक गण—

अब तक आपने जो कुछ पढ़ा इससे आपको इतना ज्ञान हो चुका होगा कि शनि की साढ़ेसाती और ढैय्या क्या होती है ? अब आपको जन्मराशि अनुसार शनि की साढ़ेसाती एवम् ढैय्या के कुप्रभावों तथा उनके निवारण के उपायों के विषय में बताते हैं। अग्रांकित उपायों एवम् टोटकों से आप शनि के प्रकोप से मुक्ति पा सकते हैं किन्तु इन उपाय एवम् टोटकों के विषय में जानकारी प्रस्तुत करने से पहले आपको साढ़ेसाती तथा ढैय्या के चरणों के विषय में जानकारी देना उचित समझता हूं। शनि की साढ़ेसाती हो या ढैय्या। यह तीन चरण में जातक को प्रभावित करते हैं। जो निम्नलिखित हैं।

प्रथम चरण—प्रथम चरण में जातक के आय की अपेक्षा व्यय की अधिकता रहती है। धन की कमी और अचानक धनहानि से जातक को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, नेत्र व्याधि (नेत्रकष्ट) होने की सम्भावना है। जातक अनेक प्रकार के मानसिक तनाव से पीड़ित रहता है।

द्वितीय चरण—सम्पत्ति की हानि, शत्रुभय, आर्थिक परेशानियां निकट सम्बन्धों में कटुता आदि अनेक प्रकार से जातक को द्वितीय चरण में कष्ट मिलते हैं। व्यवसाय पर बुरा असर पड़ता है। लम्बी यात्रायें, पारिवारिक सुख की कमी। व्यय की अधिकता बनी रहती है। अथक प्रयास भी अक्सर निष्फल सिद्ध होते हैं जिस कारण जातक मानसिक पीड़ा अनुभव करता है।

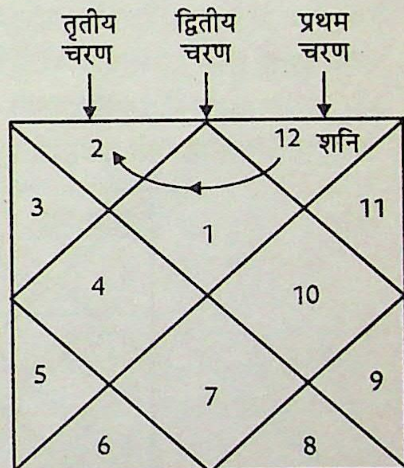
तृतीय चरण—तृतीय चरण में व्यय की अधिकता बनी रहती है। धन आता है किन्तु शीघ्र ही व्यय भी हो जाता है। सुखों की कमी, जातक के स्वास्थ्य पर मंदा प्रभाव, व्यर्थ का विवाद।

उपरोक्त तीन चरणों में शनि की साढ़ेसाती एवम् ढैय्या जातक के जीवन को प्रभावित करते हैं। राशियों के अनुसार शनि की साढ़ेसाती जातक पर प्रभावी है तो क्या उपाय करें ? यह विवरण हम प्रस्तुत कर रहें हैं। जातक अपनी कुण्डली देखकर स्वयं उपाय करके लाभान्वित हों,

मेष राशि की साढ़ेसाती
(उपाय एवम् टोटके)

पाठक गण—

यह तो आप जान ही चुके हैं कि शनि की साढ़ेसाती तीन चरण में जातक पर प्रभाव डालती हैं। मेष की साढ़ेसाती के तीनों चरणों की स्थिति कुण्डली द्वारा अग्रांकित कर रहे हैं जिससे आप सभी पाठकों को समझने में सुविधा हो तथा स्थिति अनुसार उपाय एवम् टोटके करके शनि के प्रभाव को क्षीण कर सकें।



प्रथम चरण—प्रथम $2\frac{1}{2}$ वर्ष के शनि की साढ़ेसाती निवारण के निम्नलिखित उपाय एवम् टोटके हैं जिन्हें उपयोग में लाकर जातक सुखी हो सकता है। शनि की अशुभता को कम कर सकते हैं।

1. सूखे नारियल और बादाम का दान करें।
2. मिट्टी के बर्तन में सरसों का तेल भरकर जल में नीचे दबायें।
3. शराब का सेवन न करें।
4. मांस-मछली का सेवन न करें।

द्वितीय चरण—मेष राशि के जातकों पर यदि साढ़ेसाती का प्रभाव द्वितीय चरण अर्थात् दूसरा $2\frac{1}{2}$ वर्ष चल रहा हो तो निम्नलिखित उपाय करें—

1. गणेश जी की पूजा-अराधना करें
2. बन्दर पालें।

3. कन्या पूजन करें

4. प्रसन्नता के अवसर पर मिष्ठान्न वितरण न करें यथा सम्भव नमकीन वस्तुएं बांटे।

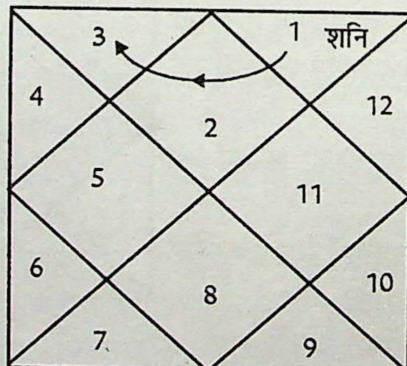
तृतीय चरण—मेष राशि के जातकों पर यदि शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव तृतीय चरण चरण में चल रहा है तो ऐसे जातक निम्नलिखित उपाय करें—

1. माह (उड़द) के दाने बहते दरिया में शनिवार के दिन प्रवाहित करें।
2. सर्प को दूध पिलाने से शनि की अनिष्टता का प्रभाव कम होता है।
3. घोड़े की नाल का रिंग (छल्ला) बनवाकर दाहिने हाथ की अनामिका उंगली (छोटी उंगली के पास वाली) में धारण करें।

वृष राशि की साढ़ेसाती
(उपाय एवम् टोटके)

जातक पर यदि वृष राशि की साढ़ेसाती चल रही हो और जिस चरण में हो उस चरण के अनुसार जातक उपाय एवम् टोटके व्यवहार में लाये। शनि गोचर वश भ्रमण करता हुआ प्रथम चरण से द्वितीय चरण तत्पश्चात तृतीय चरण में पहुंचता है और प्रत्येक चरण में उसका अलग-अलग प्रभाव होता है।

नीचे दर्शायी गयी कुण्डली देखें



उपरोक्त कुण्डली के लग्न भाव में वृष राशि है। जो कि जातक की जन्म राशि मानी जाएगी। जन्म राशि से द्वादश, प्रथम एवम् द्वितीय भाव में शनि जब गोचर वश आता है तब वृष राशि वालों पर साढ़ेसाती प्रभावी होती है

प्रथम चरण—जातक की कुण्डली के प्रथम चरण अर्थात् द्वादश भाव का शनि हो तो निम्नलिखित उपाय करें—

1. शिवलिंग पर दूध चढ़ायें
2. सूखे नारियल बहते जल में प्रवाहित करें।
3. घोड़े के नाल की रिंग उंगली में धारण करें।
4. शराब का सेवन न करें।
5. मांस मछली का सेवन न करें।

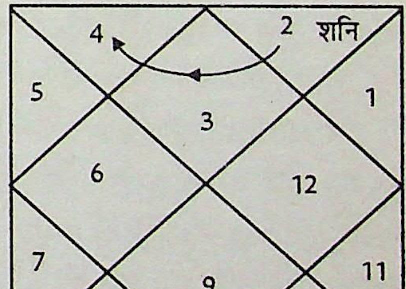
द्वितीय चरण—शनि द्वितीय चरण में विराजमान हो तो निम्नलिखित उपाय करें—

1. दूध से भीगी मिट्टी का तिलक लगायें
2. बन्दर पालें।
3. कुत्तों को मीठी रोटी खिलायें सन्तान को सुख होगा।
4. वट वृक्ष (बरगद की जड़) में दूध डालें।

तृतीय चरण—वृष राशि की साढ़ेसाती जातकों की कुण्डली के तृतीय चरण में शनि प्रभावी हो तो ऐसे जातक निम्नलिखित उपाय करें—

1. दो बोतल शराब बहते जल में प्रवाहित करें।
2. हनुमान जी के मन्दिर में जाकर सिन्दूर चढ़ायें।
3. नित्य प्रति हनुमान चालीसा का पाठ करें।
4. घोड़े के नाल की अंगूठी या छल्ली धारण करें।
5. हनुमान चालीसा बांटने से भी शनि के साढ़ेसाती का प्रभाव कम होता है।

मिथुन राशि की साढ़ेसाती
(उपाय एवम् टोटके)



कुण्डली के लग्न भाव में मिथुन राशि है जो कि जातक की जन्म राशि मानी जायेगी। यहां मिथुन राशि वाले जातकों की कुण्डली में शनि की साढ़ेसाती तीन चरणों में दर्शायी गयी है गोचर वश भ्रमण करता हुआ शनि द्वादश भाव (जिस खाने में 2 लिखा है) से लग्न भाव तत्पश्चात् द्वितीय भाव में पहुंचता है इस तरह ढ़ाई-ढ़ाई वर्ष के तीन चरण साढ़ेसाती के बनते हैं—

तीनों चरणों में शनि का प्रभाव अलग-अलग होता है शनि के अशुभ प्रभावों के निराकरण हेतु अग्रलिखित उपाय करें। लाभ हो सकता है—

प्रथम चरण—प्रथम चरण में शनि हो तो निम्नलिखित उपाय एवम् टोटके प्रभावी होते हैं—

1. शनि की उपासना करें और शनि यंत्र धारण करें।
2. सूखा नारियल जल में प्रवाहित करें।
3. सर्प को दूध पिलायें।

द्वितीय चरण—शनि दूसरे चरण में विराजमान हो तो निम्नवत् उपाय करें—

1. हनुमान चालीसा का पाठ करें।
2. शिवलिंग पर दूध चढ़ायें।
3. शनि यंत्र धारण करें।

तृतीय चरण—मिथुन राशि की शनि साढ़ेसाती का तृतीय चरण चल रहा तो जातक निम्नलिखित उपाय एवम्टोटके व्यवहार में लायें।

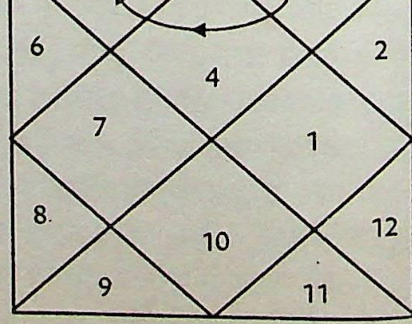
1. शराब का सेवन न करें।
2. नौका (BOAT) की कील का रिंग बनवाकर उंगली में धारण करें।
3. नौकरों के साथ उत्तम व्यवहार करें।

कर्क राशि की साढ़ेसाती
(उपाय एवम् टोटके)

शनि की साढ़ेसाती जिस चरण में चल रही हो उस चरण के अनुसार दिये गये उपायों एवम् टोटकों को व्यवहार में लायें। अधिक लाभ की सम्भावना रहेगी। यहां कर्क राशि पर शनि की साढ़ेसाती कुण्डली में दर्शा रहे हैं—

जातक कुण्डली का अवलोकन करें।

साढ़ेसाती का शनि किस भाव से किस भाव की ओर भ्रमण करता है तीर (ARROW) द्वारा दर्शाया गया है। यदि कर्क राशि का जातक है और उस पर शनि की साढ़ेसाती प्रभावी है तो किस तरह वह प्रथम, द्वितीय एवम् तृतीय चरण में साढ़ेसाती निवारक उपाय करे, कौन सा उपाय करें—



प्रथम चरण—शनि की साढ़ेसाती का प्रथम चरण प्रभावी हो तो निम्नलिखित उपाय करें—

1. चार सूखे खड़कते नारियल बहती दरिया (नदी आदि) में प्रवाहित करे।
2. बच्चों को दोपहर के समय मीठी वस्तुएं खिलायें। हलवा खिलायें।
3. नाव की कील का रिंग उंगली में धारण करें। मध्यमा उंगली में।

द्वितीय चरण—द्वितीय चरण के टोटके निम्न लिखित हैं—

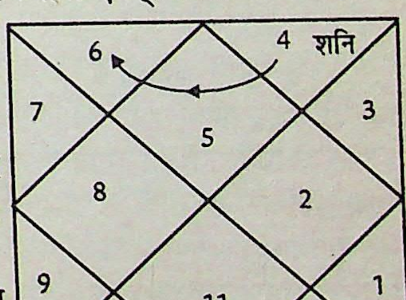
1. कम से कम तीन काले कुत्तों को मीठी रोटी खिलायें।
2. सुरमा, सुनसान स्थान में ले जाकर दबायें।
3. शराब का सेवन न करें।
4. मांसाहार से बचें।
5. श्री हनुमान जी के मन्दिर में जाकर सिन्दूर चढ़ावें।

तृतीय चरण—जिस जातक की कुण्डली में शनि की साढ़ेसाती का तृतीय चरण चल रहा हो तो नीचे लिखे उपायों को व्यवहार में लाये—

1. मजदूर का पालन करें। अच्छा व्यवहार रखें।
2. बहते जल में शराब प्रवाहित करें। बन्द बोतल न डालें अन्यथा कोई लाभ नहीं होगा।
3. नौका (BOAT) की कील का छल्ला उंगली में धारण करें।
4. शनि यंत्र धारण करें।

सिंह राशि की साढ़ेसाती
(उपाय एवम् टोटके)

जिस जातक की जन्म राशि सिंह हो और शनि की साढ़ेसाती से प्रभावित हो वह जातक न घबड़ाये बल्कि आगे दिये गये उपायों एवम् टोटकों को व्यवहार में लाये। साढ़े सात वर्ष की साढ़ेसाती के तीनों चरणों (भाग) के उपाय उचित समय पर करें।



दर्शायी गयी कुण्डली में शनि गोचर वश कर्क, सिंह और कन्या राशि पर है अतः सिंह राशि की साढ़ेसाती है।

अलग-अलग चरण के अलग-अलग टोटके इस प्रकार हैं—

प्रथम चरण—सिंह राशि में जन्मा जातक शनि की साढ़ेसाती के प्रथम चरण के प्रभाव में हो तो ऐसे जातक निम्नलिखित उपाय करें—

1. हनुमान जी की उपासना करें और प्रतिदिन प्रात:काल हनुमान चालीसा का पाठ करे।
2. मिट्टी के पात्र में सरसों का तेल भरकर पानी के अन्दर दबायें।
3. घोड़े के नाल की अंगूठी बनवाकर धारण करें। काले घोड़े की नाल हो तो अति उत्तम है।
4. हनुमान जी को सिन्दूर चढ़ायें।

द्वितीय चरण—द्वितीय चरण के शनि के कुप्रभाव निवारण हेतु निम्नलिखित उपाय एवम् टोटके उपयोग में लायें—

1. मछलियों को आटे की गोलियां बनाकर शनिवार के दिन खिलायें।
2. शनि कुप्रभाव निवारण हेतु गणेश जी की उपासना करें क्योंकि गणेश जी शनि के देवता हैं।
3. बन्दर पालें और उसकी सेवा करें।
4. प्रसन्नता के अवसर (पुत्रोत्सव, विवाह आदि) पर मिठाई न बांटें।

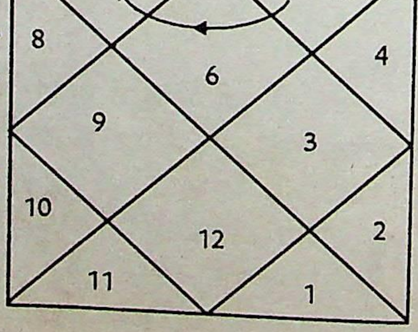
तृतीय चरण—गोचरवश शनि साढ़ेसाती के तृतीयचरण में विराजित हो तो निम्नलिखित उपाय करें—

1. काली भैंस के नाल की बनी अंगूठी धारण करें।
2. शराब और मांस-मछली का सेवन न करें।
3. काली उड़द़ के दाने बहती दरिया में प्रवाहित करें।
4. शनिवार या मंगलवार के दिन हनुमान जी को सिन्दूर चढ़ायें।

कन्या राशि की साढ़ेसाती
(उपाय एवम् टोटके)

जिस किसी जातक की जन्म राशि कन्या हो अर्थात् कन्या राशि में उत्पन्न जातक पर शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव हो तो उक्त जातक शनि की साढ़ेसाती के प्रथम, द्वितीय एवम् तृतीय चरण के अनुसार आगे दिये जा रहे टोटके व्यवहार में लाये।

कुण्डली में कन्या राशि पर दर्शायी शनि के साढ़ेसाती की स्थिति देखें—



इस कुण्डली में दर्शाया गया है कि जिस खाने में अंक 5 लिखा है उसमें शनि विराजित हो तो कन्या राशि पर शनि की साढ़ेसाती का प्रथम चरण होगा जिसे चढ़ती साढ़ेसाती कहते हैं। अंक 6 वाले भाव में द्वितीय अर्थात् मध्य साढ़ेसाती होगी। अंक 7 वाले खाने में उतरती साढ़ेसाती जो कि तृतीय चरण कहा जाता है।

अब साढ़ेसाती के प्रथम, द्वितीय एवम् तृतीय चरण के साढ़ेसाती निवारक उपाय एवम् टोटके प्रस्तुत कर रहा हूँ।

प्रथम चरण—प्रथम चरण में शनि की साढ़ेसाती निवारक उपाय एवम् टोटके—

1. मजदूर का पालन करें
2. कौवे को रोटी खिलायें
3. भगवती दुर्गा की उपासना करें
4. नंगे पैर मंदिर में जायें

द्वितीय चरण—द्वितीय चरण में शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव चल रहा हो तो ये उपाय करें—

1. महामृत्युञ्जय मंत्र का जप करें क्योंकि यह विकट घड़ी होती है।
2. अंधों की सेवा करें और यथा शक्ति उन्हें दान भी दें।
3. नौ वर्ष तक की कन्याओं को आम खिलायें।
4. हनुमान जी के मन्दिर में जाकर सिन्दूर चढ़ायें।
5. शनि यंत्र धारण करें।

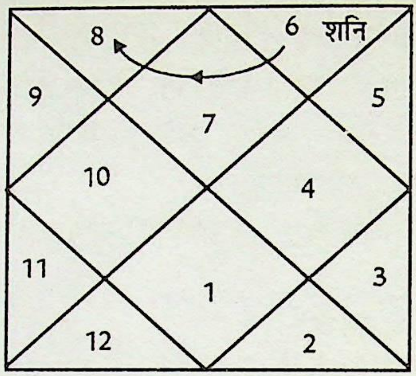
तृतीय चरण—तृतीय चरण के टोटके और उपाय इस तरह हैं—

1. बहती दरिया में शराब प्रवाहित करें।
2. शराब, मांस-मछली आदि से सर्वदा दूर रहें।
3. भैस की नाल का छल्ला धारण करें।

तुला राशि की साढ़ेसाती
(उपाय एवम् टोटके)

यहां तुला राशि पर शनि की साढ़ेसाती कुण्डली में दर्शायी गयी है जो जातक तुला राशिगत उत्पन्न हैं उन पर शनि की साढ़ेसाती के प्रभाव निवारण हेतु प्रथम, द्वितीय एवम् तृतीय चरणों के टोटके एवम् उपाय दे रहे हैं।

तुला राशि पर साढ़ेसाती का प्रभाव



प्रथम चरण—यदि जातक की कुण्डली में शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव प्रथम चरण में चल रहा है तो जातक निम्नलिखित उपाय एवम् टोटकों को व्यवहार (कार्यरुप) में लाये और कष्टकारक स्थिति से अपना बचाव करें। ये टोटके अत्यन्त प्रभावकारी हैं आपको लाभ हो सकता है।

1. प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
2. काले घोड़े की नाल का छल्ला बनवाकर उंगली में धारण करें।
3. कौवे को रोटी डाले। शनि के साढ़ेसाती का कुप्रभाव कम होगा।
4. सूखा खड़कता नारियल बहती दरिया में प्रवाहित करें।

द्वितीय चरण—द्वितीय चरण में शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव तुला राशि के जातकों पर हो तो वे जातक निम्नलिखित उपाय करें

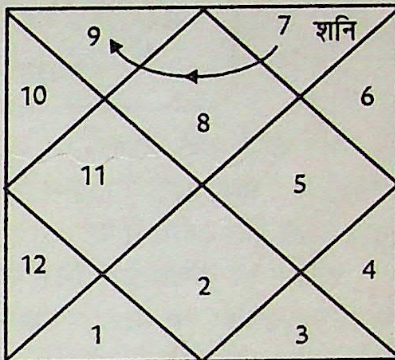
1. काला कुत्ता पालें और उसकी सेवा करें। लाभ हो सकता है।
2. श्री हनुमान जी की पूजा आराधना करें।
3. प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
4. शनि यंत्र धारण करें।

तृतीय चरण—तुला राशि वाले जातकों की कुण्डली में साढ़ेसाती का शनि तृतीय चरण में भ्रमण कर रहा हो और जातक को कुप्रभाव प्रदान कर रहा हो, उक्त जातक निम्नवत् उपाय करें—

1. उड़द के दाने बहती दरिया में प्रवाहित करने से शनि के प्रकोप का शमन हो सकता है।
2. शिवलिंग पर दूध चढ़ायें।
3. नाव की कील का रिंग बनवाकर उंगली में धारण करें।

वृश्चिक राशि की साढ़ेसाती
(उपाय एवम् टोटके)

वृश्चिक राशि वाले जातक पर शनि की साढ़ेसाती की स्थिति कुण्डली में देखें—



गोचर वश शनि भ्रमण करता हुआ प्रथम चरण, द्वितीय चरण एवम् तृतीय चरण में जातक को अलग-अलग फल प्रदान करता है। पाठकगण अंक 7 वाले खाने को वृश्चिक राशि की साढ़ेसाती वालों का प्रथम चरण जाने, 8 अंक वाले खाने को द्वितीय चरण तथा 9 अंक वाले खाने को साढ़ेसाती का तृतीय चरण जानें और अलग-अलग स्थिति अनुसार दिये जा रहे उपाय व्यवहार में लायें—

प्रथम चरण—गोचर शनि प्रथम चरण में हो तो जातक निम्नवत् उपाय करें—

1. शनिवार व्रतस्थ रहें।
2. शराब और मांस-मछली का सेवन करने वाले को भारी क्षति हो सकती है।
3. शिवलिंग पर दूध चढ़ायें।
4. पर स्त्री से सम्बन्ध न करें।
5. मिट्टी के पात्र में सरसों का तेल भर कर पानी के नीचे तालाब आदि में दबायें।

द्वितीय चरण—द्वितीय चरण के उपाय एवम् टोटके निम्नलिखित हैं—

1. बन्दर पालें और उसे गुड़ खिलायें लाभ हो सकता है।
2. सुरमा जमीन में दबायें।
3. अन्धे आदमी की सेवा करें शनि का प्रकोप शमन होगा।
4. घोड़े के नाल की रिंग बनवाकर उंगली में पहने।

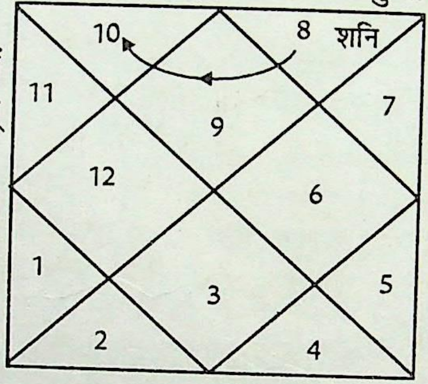
तृतीय चरण—वृश्चिक राशि के जातक की कुण्डली में शनि की साढ़ेसाती तृतीय चरण में आरोपित हो तो निम्नलिखित उपाय करना चाहिए—

1. प्रतिदिन प्रातः काल नहा धोकर हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए।

2. शराब आदि नशीली वस्तुओं से दूर रहना अच्छा है।
3. बहती दरिया में शराब प्रवाहित करें।
4. मजदूर की सेवा करें तथा घोड़े के नाल की मुंदरी धारण करें।

धनुराशि की साढ़ेसाती
(उपाय और टोटके)

धनु राशि वाले जातकों पर शनि की साढ़ेसाती की स्थिति नीचे दी गयी कुण्डली में दर्शायी गयी है। किस प्रकार शनि प्रथम चरण से भ्रमण करता हुआ द्वितीय चरण और तृतीय में पहुंचता है।



जातक की कुण्डली के जिस चरण में शनि विराजमान हो उस चरण के उपाय एवम् टोटके व्यवहार में लाये

प्रथम चरण—यदि धनु राशि वाले जातकों पर शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव प्रथम चरण में चल रहा हो तो निम्नलिखित उपाय करें—

1. कन्याओं की पूजा करें और सेवा करें।
2. हनुमान जी को सिन्दूर चढ़ायें तथा हनुमान चालीसा का पाठ करें।
3. शनिवार को व्रत रखें तथा हनुमान जी की उपासना करें।
4. यम के भ्राता (भाई) शनि के अशुभ निवारण हेतु भैंसे (यम की सवारी) की सेवा करें।

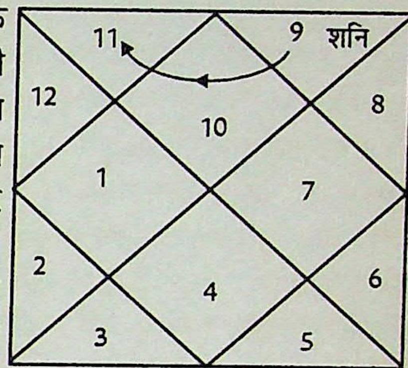
द्वितीय चरण—द्वितीय चरण की साढ़ेसाती चल रही हो तो इन उपायों को व्यवहार में लायें—

1. घोड़े के नाल का रिंग (छल्ला) बनवाकर धारण करें।
2. प्रसन्नता के अवसर मिठाई के बजाय नमकीन वस्तुएं बांटें।
3. शनि उपासना करें और शनि यंत्र धारण करें।
4. नारियल के खोपरे में तिल एवम गुड़ भरकर मिट्टी के नीचे दबायें।

तृतीय चरण—धनु राशि वाले जातकों की कुण्डली में साढ़ेसाती का प्रभाव तीसरे चरण में चल रहा हो तो ये उपाय करें—

1. शराब एवम् मांस मछली का उपयोग न करें।
2. सूर्योदय से पूर्व मुख्यद्वार के पास कच्ची जमीन पर शराब गिरायें।
3. भैंसे के नाल की अंगूठी बनवाकर धारण करें।

मकर राशि की साढ़ेसाती
(उपाय एवम् टोटके)



मकर राशि वाले जातकों पर शनि के साढ़ेसाती से प्रभावित कुण्डली दर्शायी गयी है। प्रथम चरण, द्वितीय चरण अथवा तृतीय चरण में शनि भ्रमण कर रहा हो तो चरण अनुसार जातक उपाय एवम् टोटके व्यवहार में लाये।

प्रथम चरण—गोचर का शनि प्रथम चरण में भ्रमण कर रहा हो तो जातक निम्नलिखित उपाय करें—

1. भैंस पालना चाहिए और उसकी सेवा करें।
2. मंदिर में जा रहे हो तो घर से नंगे पांव निकलें।
3. बच्चों में मिठाई वितरित (बांटे) करें।
4. शनि स्तोत्र का पाठ करें।

द्वितीय चरण—द्वितीय चरण की साढ़ेसाती के उपाय—

1. कुत्ता पालें और उसकी सेवा करें सन्तान को सुख होगा। काला कुत्ता पालें तो अति उत्तम है।

2. अन्धे व्यक्ति की सेवा करें। शनि की साढ़ेसाती का अशुभ प्रभाव कम हो सकता है।

3. एकान्त स्थान में सुरमा (एक तरह का आंखों वाला काजल) मिट्टी के नीचे दबायें।

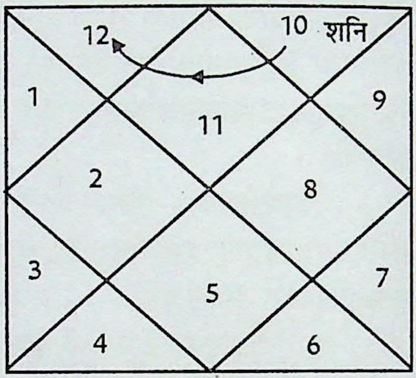
4. शराब का सेवन न करें।

तृतीय चरण—मकर राशि में शनि की साढ़ेसाती का तीसरा चरण हो तो निम्नलिखित उपाय करें—

1. नाव की कील का छल्ला बनवाकर उंगली में धारण करें।
2. बहती दरिया में शराब (Wine) प्रवाहित करें।
3. हनुमान जी के मंदिर में सिंदूर चढ़ायें।
4. शनि यंत्र धारण करें।

कुम्भ राशि की साढ़ेसाती
(उपाय एवम् टोटके)

कुम्भ राशि वालों की साढ़ेसाती का प्रथम, द्वितीय एवम् तृतीय चरण तीर बनाकर कुण्डली में दर्शाया गया है शनि जब गोचर वश भ्रमण करता हुआ द्वादश भाव से प्रथम भाव तथा द्वितीय भाव अर्थात् दर्शायी गयी कुण्डली के अंक 10, 11, 12 में हो तो कुम्भ राशि वालों पर साढ़ेसाती रहती है। जिस समय शनि प्रथम ढाई वर्षों में अंक संख्या 10 वाले खाने में प्रथम चरण, अंक 11 वाले खाने में द्वितीय चरण तथा अंक संख्या 12 में तृतीय चरण होगा। साढ़े साती की मध्यावधि अर्थात् दूसरा ढाई वर्ष जातक के लिए विशेष कष्टकारी होता है।



प्रथम चरण—कुम्भ राशि वाले जातकों पर शनि की साढ़ेसाती का प्रथम चरण चल रहा हो तो निम्नलिखित उपाय करें—

1. बहती दरिया में सूखे खड़कते नारियल प्रवाहित करें
2. महामृत्युञ्जय मंत्र का प्रतिदिन पाठ करें।
3. शराब और मांस-मछली का सेवन कदापि न करें।
4. शनिवार का व्रत रखें।

द्वितीय चरण—द्वितीय चरण में शनि की साढ़ेसाती चल रही हो तो निम्नवत् उपाय प्रयोग में लायें—

1. नदी या तालाब के किनारे खड़े होकर मछलियों को आटे की गोलियां डालें। यह कार्य शनिवार के दिन करें।

2. हनुमान जी को सिन्दूर चढ़ायें तथा प्रतिदिन प्रातःकाल हनुमान चालीसा का पाठ करें। विशेष रुप से मंगलवार और शनिवार के दिन

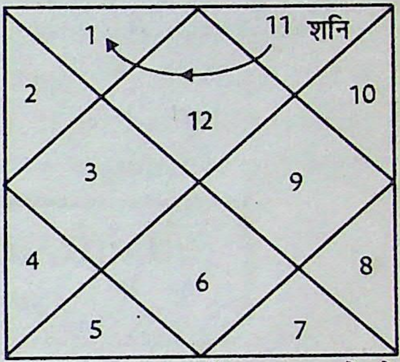
3. नारियल के खोपरे में तिल और गुड़ भरकर मिट्टी में दबायें।
4. घोड़े की नाल की अंगूठी (छल्ला) धारण करें।

तृतीय चरण—तृतीय चरण के शनि की साढ़ेसाती निवारक उपाय—

1. घोड़े की नाल का छल्ला धारण करें।

2. काले उड़द बहते जल में प्रवाहित करें।
3. भैरव जी की उपासना करें।
4. शनिवार का व्रत रखें।

मीन राशि की साढ़ेसाती
(उपाय एवम् टोटके)



मीन राशि वाले जातकों पर शनि की साढ़ेसाती कुण्डली में दर्शायी गयी है जो कि तीनों चरण दर्शाते हैं—प्रथम, द्वितीय एवम् तृतीय चरण के उपाय एवम् टोटके अलग-अलग दे रहें हैं क्योंकि शनि प्रत्येक अलग-अलग चरण में जातक पर अलग-अलग प्रभाव आरोपित करता है—

प्रथम चरण—मीन राशि के जातकों की कुण्डली में यदि शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव प्रथम चरण में चल रहा हो तो ऐसे जातक निम्नवत् उपाय एवम् टोटके व्यवहार में लायें। लाभ हो सकता है—

1. बादाम दान करें
2. नारियल का दान करना भी लाभदायक है
3. भैंस पालें और उसकी सेवा करें।
4. हनुमान जी को सिन्दूर चढ़ायें।

द्वितीय चरण—मीन राशि के जातकों की कुण्डली में शनि की साढ़ेसाती का द्वितीय चरण चल रहा हो तो ऐसे जातक निम्नवत् उपाय करें—

1. कम से कम तीन काले कुत्तों को शनिवार के दिन मीठी रोटी खिलायें।
2. अन्धे व्यक्ति की सेवा करना चाहिए।
3. घोड़े के नाल की अंगूठी (Ring) बनवाकर धारण करें।
4. वटवृक्ष (बरगद) की जड़ में दूध डालें।

तृतीय चरण—तृतीय चरण के शनि की साढ़ेसाती के उपाय—

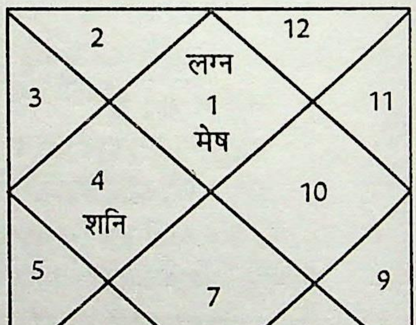
1. प्रतिदिन प्रातः काल हनुमान चालीसा का पाठ करें।
2. सूर्योदय से पहले शराब कच्ची जमीन पर दरवाजे से बाहर गिरायें।
3. मंदिर में नंगे पैर जायें।
4. घोड़े की नाल का छल्ला बनवाकर धारण करें।

शनि की ढैय्या

जिस तरह शनि की साढ़ेसाती से आक्रान्त जातक अनेक प्रकार की परेशानियों में पड़ा रहता है। गृह क्लेश, धन-हानि, रोग-व्याधि से पीड़ित होता है उसी प्रकार शनि की ढैय्या भी आतंक का पर्याय ही है। शनि गोचरवश भ्रमण करता हुआ जन्म राशि से चतुर्थ या अष्टम भाव में आता है तो जातक पर शनि की ढैय्या का प्रभाव होगा। चतुर्थ भाव में शनि की प्रथम ढैय्या और अष्टम भाव में द्वितीय ढैय्या होती है।

इसके लिए जातक की जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति देखें जिस राशि में चन्द्र स्थित होगा वही जातक की जन्मराशि होगी। अब देखें जन्मराशि से गोचरवश शनि के चतुर्थभाव में आने पर प्रथम ढैय्या तथा अष्टम भाव में आने पर द्वितीय ढैय्या की स्थिति होगी।

मेष राशि वाले जातकों की ढैय्या
(उपाय एवम् टोटके)



जब गोचर वश शनि कर्क और वृश्चिक राशि पर भ्रमण करता है तब मेष राशि वाले जातकों पर शनि की ढैय्या प्रभावी होती है मेष राशि वाले जातकों से तात्पर्य यह है कि जिस जातक (व्यक्ति) की जन्म राशि मेष हो। कुण्डली बनाकर ढैय्या दर्शायी गयी है। जातक पर प्रथम ढैय्या प्रभावी हो या द्वितीय ढैय्या। उसके अनुसार ही टोटके एवम् उपायों को व्यवहार में लायें। शनि के अनिष्ट प्रभाव का शमन हो सकता है—

प्रथम ढैय्या के उपाय—यदि मेष राशि वाले जातक पर शनि की पहली ढैय्या चल रही हो तो ऐसे जातक निम्न उपाय एवम् टोटके व्यवहार में लायें—

1. कौवे को रोटी डालें।
2. सर्प को दूध पिलायें।
3. हनुमान जी को सिन्दूर चढ़ायें।
4. घोड़े के नाल की मुंदरी बनवाकर शनिवार के दिन धारण करें।

द्वितीय ढैय्या—जिस मेष राशि वाले जातक पर शनि की दूसरी ढैय्या प्रभावी हो वह जातक निम्नलिखित उपाय करे।

1. हनुमान जी को सिन्दूर चढ़ायें और हनुमान चालीसा का प्रातः काल पाठ करें
2. काले उड़द बहते जल में प्रवाहित करें।
3. मन्दिर में जाकर बादाम का दान दें।
4. अन्धे व्यक्ति का आदर सत्कार करें।

वृष राशि वाले जातकों की ढैय्या
(उपाय एवम् टोटके)

जब गोचरवश शनि सिंह और धनु राशि पर भ्रमण करता है तब वृष राशि वाले जातकों पर शनि की ढैय्या प्रभावी होती है। कुण्डली बनाकर वृष राशि के जातकों की ढैय्या दर्शायी गयी है देखें कुण्डली—



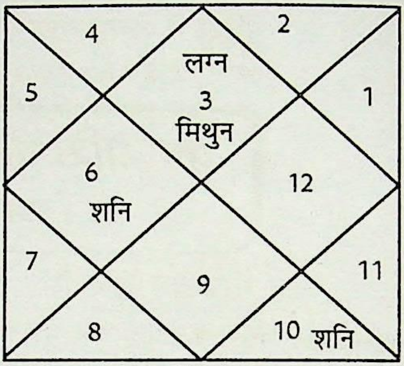
प्रथम ढैय्या के उपाय—यदि वृष राशि वाले जातक पर शनि की प्रथम ढैय्या प्रभावी हो तो निम्नलिखित उपाय करें—

1. नाव की कील का छल्ला बनवाकर धारण करें।
2. कुएं में कच्चा दूध डालें।
3. ऐसे जातक काले वस्त्र न पहने।
4. शाकाहारी रहें। मांसाहार न करें।

द्वितीय ढैय्या के उपाय—जिस किसी वृष राशि वाले जातक की कुण्डली में शनि की ढैय्या दूसरे चरण में हो अर्थात् जातक पर शनि की दूसरी ढैय्या चल रही हो। ऐसे जातक निम्नलिखित टोटके व्यवहार में लायें।

1. काला कुत्ता पालें और उसकी सेवा करें।
2. बहते पानी में बादाम प्रवाहित करें।
3. मंदिर में पूजा हेतु नंगे पैर जायें।
4. भवन निर्माण करना फलदायी नहीं होगा। अतः शनि की ढैय्या का द्वितीय चरण चल रहा हो तो भवन निर्माण न करें।

मिथुन राशि वाले जातकों की ढैय्या
(उपाय एवम् टोटके)



गोचरवश भ्रमण करता हुआ शनि जब कन्या और मकर राशि पर आता है तब मिथुन राशि वालों पर शनि की ढैय्या प्रभावी रहती है। कुण्डली में मिथुन राशि के जातक देखें और पहली एवम् दूसरी (जो भी ढैय्या हो) के अनुसार दिये गये उपाय एवम् टोटके करें। टोटकों से आपको लाभ हो सकता है।

प्रथम ढैय्या के उपाय—मिथुन राशि के जातकों की प्रथम ढैय्या के उपाय एवम् टोटके इस प्रकार हैं—

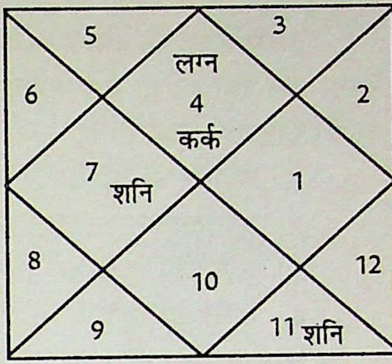
1. प्रतिदिन प्रातःकाल नहा धोकर हनुमान चालीसा का पाठ करें।
2. मछलियों को आटे की गोलियां डालें। मछलियों की सेवा से जातक को लाभ हो सकता है।
3. शिवलिंग पर दूध चढ़ायें तथा महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें।
4. काला वस्त्र न धारण करें।

द्वितीय ढैय्या के उपाय—दूसरी ढैय्या के उपाय इस प्रकार करें—

1. अन्धे व्यक्तियों का आदर-सत्कार करें।
2. काले उड़द बहती दरिया (नदी आदि) में प्रवाहित करें।
3. मंदिर में बादाम चढ़ायें।
4. मांस-मछली एवम् शराब का सेवन न करें।

कर्क राशि वाले जातकों की ढैय्या
(उपाय एवम् टोटके)

गोचरवश शनि जब तुला और कुम्भ राशि पर आता है तब कर्क राशि वाले जातकों पर शनि की ढैय्या रहती है जैसा कि कुण्डली में दर्शाया गया है। लग्नस्थ राशि से चौथे एवम् आठवें भाव में शनि स्थित हो तो जातक पर ढैय्या प्रभावी होती है।



पहली और दूसरी ढैय्या के उपाय एवम् टोटके प्रस्तुत कर रहे हैं जिन्हें प्रयोग में लाकर प्रभावित जातक लाभान्वित हो सकते है।

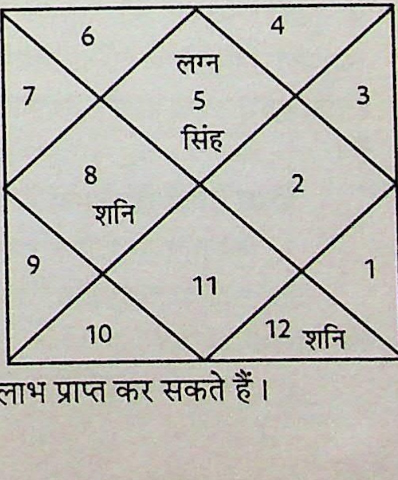
प्रथम ढैय्या के उपाय—कर्क राशि वाले जातकों की प्रथम ढैय्या के उपाय इस प्रकार हैं—

1. प्रथम ढैय्या से प्रभावित जातक घोड़े के नाल का रिंग बनवाकर धारण करें।
2. ऐसे जातकों के लिए मांस-मछली एवम् मद्य (शराब) निषिध्द है।
3. कौवे को रोटी डालें।
4. शिवलिंग पर कच्चा दूध चढ़ायें।

द्वितीय ढैय्या के उपाय—जिस किसी कर्क राशि के जातकों पर शनि की दूसरी ढैय्या चल रही हो। ऐसे जातक अग्रलिखित उपाय एवम् टोटके व्यवहार में लायें—

1. चांदी का एक चौकोर टुकड़ा सदैव अपने पास रखें।
2. मजदूर की सेवा करें।
3. पत्थर की शिला पर बैठकर दूध से स्नान करें।
4. हनुमान चालीसा का पाठ करें।

सिंह राशि वाले जातकों की ढैय्या
(उपाय एवम् टोटके)



गोचर शनि भ्रमण करता हुआ जब वृश्चिक और मीन राशि पर आता है तब सिंह राशि वाले जातकों पर शनि की ढैय्या होती है। सिंह राशि वाले जातकों का ढैय्या की स्थिति कुण्डली में दर्शाया गया है। जन्म राशि से चौथे एवम् आठवें भाव में शनि के आने पर जातक पर शनि की ढैय्या प्रभावी होती है। ऐसे जातक निम्नलिखित उपाय एवम् टोटके व्यवहार (उपयोग) में लाकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

प्रथम ढैय्या के उपाय—यदि सिंह राशि वाले जातकों पर शनि की पहली ढैय्या चल रही हो तो ऐसे जातक अग्रलिखित उपाय एवम् टोटके व्यवहार में लायें। फलदायी सिद्ध होंगे।

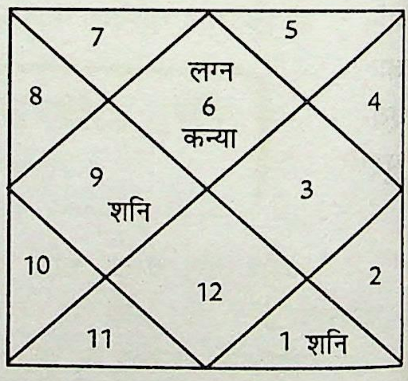
1. हनुमान जी को सिन्दूर चढ़ायें।
2. प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
3. शनि दोष निवारक 'शनि यंत्र' धारण करें।
4. कच्चा दूध कुएं में गिरायें।

द्वितीय ढैय्या के उपाय—अग्रलिखित टोटके एवम् उपाय करें—

1. मंदिर में बादाम का चढ़ावा (भोग) चढ़ायें।
2. काली उड़द (मांह) के दाने किसी पवित्र नदी में प्रवाहित करें।
3. अन्धे व्यक्तियों का आदर-सत्कार एवम् सेवा करके आशीर्वाद प्राप्त करें।

कन्या राशि वाले जातकों की ढैय्या
(उपाय एवम् टोटके)

गोचर शनि भ्रमण करता हुआ जब धनु और मेष राशि पर आता है उस अवस्था में कन्या राशि वाले जातकों पर शनि की ढैय्या होती हो। जन्म राशि से चौथे खाने में शनि की पहली ढैय्या होती है। आठवें भाव में दूसरी! पहली और दूसरी ढैय्या की अशुभता निवारण के लिए अलग-अलग टोटके एवम् उपाय अलग-अलग इस प्रकार हैं।



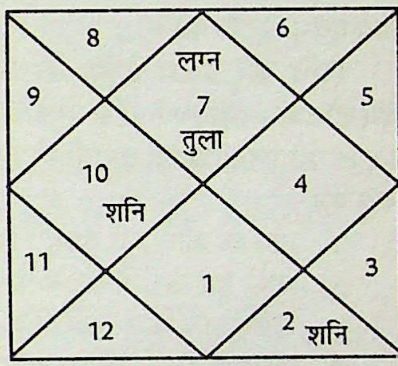
प्रथम ढैय्या के उपाय—प्रथम ढैय्या के उपाय अग्र लिखित हैं—

1. शनिवार के दिन व्रतस्थ रहें।
2. नदी या तालाब के किनारे खड़े होकर मछलियों को चारे के रुप में आटे की गोलियां बनाकर खिलायें।
3. हनुमान जी की प्रतिमा पर सिन्दूर का टीका करें।

द्वितीय ढैय्या के उपाय—शनि की द्वितीय ढैय्या चल रही हो तो यह उपाय करें—

1. शनि के देवता गणेश जी की उपासना करें। कष्ट निवारण हो सकता है।
2. कुत्ता पालें और उसकी सेवा करें। सन्तान को सुख होगा।
3. चांदी का चौकोर टुकड़ा सदैव अपने पास रखें।
4. काली उड़द के दाने (एक किलो) बहते जल में प्रवाहित करें।

तुला राशि वाले जातकों की ढैय्या
(उपाय एवम् टोटके)



जब गोचर का शनि परिभ्रमण करता हुआ मकर और वृष राशि पर आता है तब तुला राशि वालों पर शनि की ढैय्या रहती है। जन्मराशि तुला से चौथे भाव अर्थात् 10 के अंक वाले खाने में जातक पर शनि की पहली ढैय्या प्रभावी होगी और 2 के अंक खाने में शनि के आने पर दूसरी ढैय्या प्रभावी होगी। जातक पहली एवम् दूसरी ढैय्या के उपाय एवम् टोटके व्यवहार में लाकर और शनि के अशुभ प्रभाव का निवारण करके सुखमय जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

प्रथम ढैय्या के उपाय—उपाय एवम् टोटके इस प्रकार हैं—

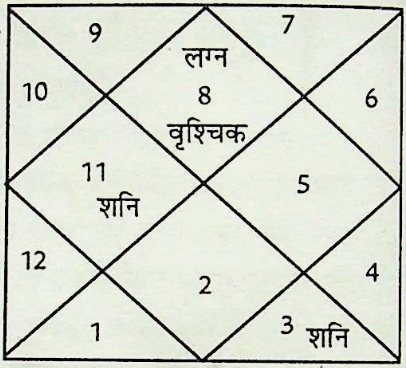
1. बहती दरिया में शराब प्रवाहित करें।
2. काले रंग के घोड़े की नाल का छल्ला बनवाकर धारण करें।
3. कच्चा दूध कुँए में गिराने से शनि शमन होता है।
4. अपना व्यवहार उचित रखें।

द्वितीय ढैय्या के उपाय—तुला राशि वाले जातक पर यदि शनि की दूसरी ढैय्या चल रही हो तो ऐसे जातक अग्रलिखित उपाय करें।

1. हनुमान जी को सिन्दूर का चोला चढ़ायें।
2. काली उड़द के दाने नदी में प्रवाहित करें।
3. शनिवार का व्रत करें और सिद्ध शनि यंत्र धारण करें।
4. हनुमान चालीसा का प्रतिदिन प्रातः काल पाठ करें। लाभ हो सकता है।

वृश्चिक राशि वाले जातकों की ढैय्या
(उपाय एवम् टोटके)

जब गोचर का शनि भ्रमण करता हुआ कुम्भ और मिथुन राशि पर आता है उस समय वृश्चिक राशि वाले जातकों पर शनि की ढैय्या प्रभावी होती है। यहां कुण्डली में शनि की स्थिति चौथे एवम् आठवें भाव में दर्शायी गयी है कि कब ढैय्या रहती है। जातक पर शनि की जो ढैय्या (प्रथम अथवा द्वितीय) प्रभावी हो उसके अनुसार उपाय एवम् टोटके करें—



शनि की प्रथम ढैय्या के उपाय एवम् टोटके—वृश्चिक राशि वाले जातकों पर शनि की पहली ढैय्या प्रभावी हो तो यह उपाय करें—

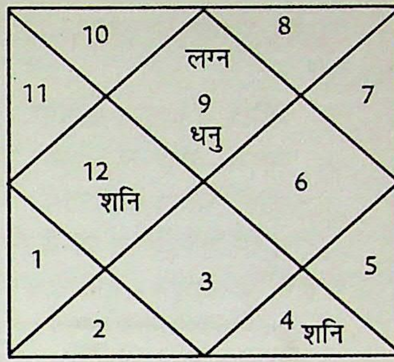
1. नाव के कील की मुंदरी (छल्ला) बनवाकर धारण करें।
2. बहते हुए जल में शराब प्रवाहित करें।
3. शराब और मांस-मछली का सेवन न करें।
4. हनुमान जी को सिन्दूर चढ़ायें और पूजा करें।

दूसरी ढैय्या के उपाय—दूसरी ढैय्या प्रभावी हो तो यह उपाय करें—

1. पत्थर पर बैठकर कच्चा दूध मिश्रित जल से शनिवार के दिन स्नान करने से शनि का प्रकोप कम हो सकता है।
2. चांदी का एक चौकोर टुकड़ा सदैव अपने पास रखें।
3. बादाम जल में प्रवाहित करना भी एक लाभकारी टोटका है।
4. शराब और मांस मछली से परहेज रखें।

धनु राशि वाले जातकों की ढैय्या
(उपाय एवम् टोटके)

जब गोचर का शनि भ्रमण करता हुआ मीन और कर्क राशि पर आता है तब उस समय धनु राशि की ढैय्या रहती है। धनु राशि पर शनि की ढैय्या चौथे एवम आठवें भाव में (शनि की स्थिति) दर्शायी गयी है। प्रथम अथवा द्वितीय ढैय्या (जो भी चल रही हो) के अनुसार जातक उपाय एवम् टोटके व्यवहार मे लायें।



प्रथम ढैय्या—शनि की प्रथम ढैय्या धनु राशि वाले जातक पर प्रभावी चल रही हो तो वे जातक अग्र लिखित उपाय करें—

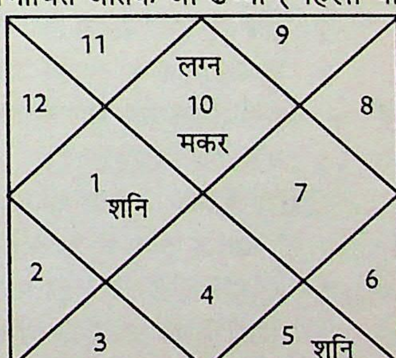
1. कौवों को अपने भोजन का कुछ अंश खिलायें। इससे शनि के प्रकोप में कमी आयेगी।
2. ऐसे जातक मछलियों को आटे की गोलियां बनाकर डालें।
3. कच्चा दूध कुएं में गिरायें।
4. जातक काला वस्त्र धारण न करें।

द्वितीय ढैय्या—शनि की दूसरी ढैय्या चल रही हो तो यह उपाय करें—

1. काले उड़द के चार किलो दाने बहती दरिया में प्रवाहित करें।
2. हनुमान जी को सिन्दूर चढ़ायें।
3. चांदी का एक चौकोर टुकड़ा सदैव अपने पास रखें।

मकर राशि वाले जातकों की ढैय्या
(उपाय एवम् टोटके)

जब गोचर का शनि भ्रमण करता हुआ मेष और सिंह राशि पर आता है तो मकर राशि वाले जातक पर शनि की ढैय्या प्रभावी होती है। मकर जन्म राशि वाले जातकों एवम् पाठकों को समझने के लिए कुण्डली बनाकर शनि के ढैय्या की स्थिति दर्शायी गयी है। शनि की ढैय्या से प्रभावित जातक जो ढैय्या (पहली या दूसरी) चल रही हो, उसके अनुसार उपाय करें—



प्रथम ढैय्या के उपाय—

1. घोड़े की नाल का छल्ला बनवाकर धारण करें। काले घोड़े की नाल मिल जाये तो अति उत्तम है।
2. हनुमान जी की प्रतिमा पर सिन्दूर चढ़ायें।
3. बहती दरिया में एक बोतल शराब प्रवाहित करें।
4. कच्चे दूध की धारा कुएं में गिरायें।

द्वितीय ढैय्या के उपाय—ढैय्या दूसरे चरण की हो तो जातक निम्नवत् उपाय करें—

1. मन्दिर में बादाम चढ़ाना लाभकर है।
2. जातक चांदी का चौकोर टुकड़ा सदैव अपने पास रखें।
3. अन्धे व्यक्ति की सेवा करके आर्शिवाद प्राप्त करें।
4. पत्थर की शिला पर बैठकर दूध मिश्रित (MILKMIX) जल से स्नान करने से शनि का अशुभ प्रभाव कम हो सकता है।

कुम्भ राशि वाले जातकों की ढैय्या
(उपाय एवम् टोटके)

जिन जातकों की जन्म राशि कुम्भ हो। ऐसे जातकों की कुण्डली में जब गोचर का शनि भ्रमण करता हुआ वृष और कन्या राशि पर आता है तब कुम्भ राशि वालों पर शनि की ढैय्या आरोपित होती है। कुण्डली में कुम्भ राशि पर शनि की ढैय्या, चौथे एवम् आठवें भाव में अंकित करके दर्शायी गयी है। जातक प्रथम ढैय्या और द्वितीय ढैय्या का उपाय शनि की स्थिति के अनुसार करें।



प्रथम ढैय्या—प्रथम ढैय्या का प्रभाव जातक पर चल रहा हो तो अग्रलिखित उपाय करें—

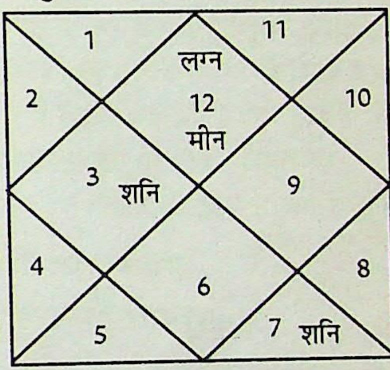
1. शराब तथा मांस-मछली का सेवन न करें।
2. सर्प को दूध पिलायें।
3. कुम्भ राशि के जातक पर यदि शनि की पहली ढैय्या चल रही हो तो ऐसे जातक काले वस्त्र न धारण करें।
4. कौओं को रोटी डालें।

द्वितीय ढैय्या—कुम्भ राशि के जातक पर यदि शनि की दूसरी ढैय्या आरोपित हो अर्थात् शनि कन्या राशि पर हो तो ऐसे जातक निम्नलिखित उपाय करें। लाभ हो सकता है—

1. किसी पवित्र नदी में या स्वच्छ बहते जल में बादाम की गिरियां प्रवाहित करें।
2. स्नान करते समय पैर का तलवा जमीन पर न लगायें ।
3. चांदी का चौकोर टुकड़ा सदैव अपने पास रखें।
4. 'शनि यंत्र' धारण करना लाभदायक होता है।

मीन राशि के जातकों की ढैय्या
(उपाय एवम् टोटके)

जिन जातकों की जन्म राशि मीन हो। ऐसे जातकों की कुण्डली में जब गोचर का शनि भ्रमण करता हुआ मिथुन और तुला राशि पर आता है तो मीन राशि (लग्न राशि) पर शनि की ढैय्या आरोपित होती है। जैसा कि कुण्डली में दर्शाया गया है। चतुर्थ भाव (अंक 3 वाले खाने में) में शनि के आने पर जातक पर शनि की पहली ढैय्या आरोपित होती है और अष्टम भाव (अंक 7 वाले खाने में) आने पर दूसरी ढैय्या आरोपित होगी। ढैय्या की अशुभता से बचाव के निम्नलिखित उपाय एवम् टोटके क्रमानुसार लिख रहे हैं। इन उपाय एवम् टोटकों को व्यवहार में लाकर जातक आनन्दमय जीवन व्यतीत करें। लेखन का यही उद्देश्य है।



पहली ढैय्या—जिन जातकों पर शनि की पहली ढैय्या आरोपित हो उनके लिए उपाय एवम् टोटके—

1. हनुमान चालीसा का प्रतिदिन प्रात:काल स्वच्छ होकर पाठ करें।
2. आटे की गोलियां शनिवार के दिन या प्रतिदिन मछलियों को खिलायें।
3. हरे रंग का वस्त्र धारण करना शुभत्व प्रदान करता है।
4. बहते जल में शराब प्रवाहित करें।

द्वितीय ढैय्या—जिन जातकों पर शनि की दूसरी ढैय्या चल रही हो उनके लिए निम्नवत उपाय हैं—

1. काली उड़द के साबुत दाने वाले बहते जल में प्रवाहित करें। यह कार्य शनिवार के दिन करें तो अति उत्तम है।
2. चांदी का चौकोर टुकड़ा या ठोस गोली सदैव अपने पास रखें।
3. शनि यंत्र धारण करें। शनिवार का व्रत रखें।

नोट—पाठकगण! कुण्डली के प्रथम भाव को लग्न भाव कहते हैं और जन्म पत्री के लग्न भाव में जो अंक लिखा हो वही जन्म राशि होती है जैसे—अंक 1 लिखा है तो मेष राशि, अंक 2 लिखा है तो वृष राशि-आदि इसी प्रकार है फिर भी किसी प्रकार की समस्या उत्पन्न हो तो लेखक से पत्राचार कर सकते हैं। आपको समाधान प्रेषित किया जाएगा।

द्वादश भावों में शनि की अशुभता (अशुभ फल) निवारण के उपाय एवम् टोटके

सुहृद पाठकों—

इसके पूर्व द्वादश भावों में (भावानुसार) शनि के शुभ-अशुभ फल का वर्णन हम कर चुके हैं अत: पुन: लिखना उचित नहीं है। इस अध्याय में (कुण्डली के बारह भावों) में शनि जो भी अशुभ प्रभाव जातक पर डालता है। उस अशुभता के निवारण हेतु उपाय एवम् टोटकों का वर्णन करते हैं।

लिखने का तात्पर्य यह कि यदि प्रथम भाव में बैठा शनि जो कुछ भी थोड़ा या अधिक अशुभ प्रभाव जातक पर डाल रहा है, या द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ.........आदि बारह भावों में जो भी अशुभ प्रभाव करता है उसके निवारण हेतु जातक क्या उपाय करें ? इसी विषय पर चर्चा करते हैं।

सामान्यत: कोई भी ग्रह कुण्डली के किसी भाव में हो। वह शुभ फल करेगा तो कुछ अशुभ फल भी करता है।

प्रथम भाव में विराजित शनि की अशुभता निवारण के उपाय एवम् टोटके

कुण्डली के प्रथम भाव में यदि शनि बैठा है और जातक को अशुभ फल प्रदान कर रहा है तो ऐसे जातक 'लाल किताब' के मतानुसार निम्नलिखित उपाय करें। शुभत्व प्राप्त हो सकता है



1. बन्दर पालें।
2. मस्तक (माथे) पर दूध अथवा दही का तिलक लगायें।
3. शनिवार के दिन सरसों के तेल का दान करना लाभकारी होता है।
4. वट वृक्ष अथवा केले के जड़ में कच्चा दूध डालें।

द्वितीय भाव में विराजमान शनि की अशुभता निवारण के उपाय एवम् टोटके

द्वितीय भाव का शनि यदि अशुभ फल कर रहा है तो निम्नलिखित उपाय करें—

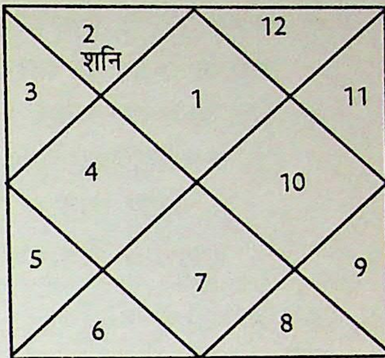
1. मस्तक पर तेल न लगायें।

2. शनिवार के दिन आटे की गोलियां बनाकर मछलियों को खिलायें।

3. शिवलिंग पर जल चढ़ायें।

4. कच्चा दूध शनिवार के दिन कुएं में गिरायें।

5. भूरे रंग की भैंस पालें और उसकी सेवा करें।



6. सर्प को दूध पिलायें किन्तु सावधानी से क्योंकि सर्प खतरनाक होता है। चुंकि सर्प को दूध पिलाना भी एक टोटका है इसलिए हमने वर्णन दिया है।

तृतीय भाव में विराजमान शनि की अशुभता निवारण के उपाय एवम् टोटके

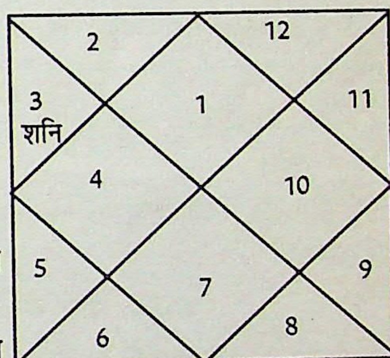
1. घर में काला कुत्ता पालें।

2. मकान के अन्त में एक अंधेरा कमरा बनायें।

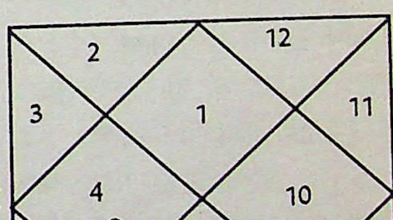
3. केतु का उपाय करने से धन-सम्पत्ति में वृद्धि होती है।

4. शराब एवम् मांसाहारी भोज्य पदार्थों का सेवन न करें।

5. दक्षिण दिशा की ओर भवन का मुख्यद्वार हो तो बन्द कर दें। मुख्य द्वार उत्तर दिशा की ओर हो तो अति उत्तम है।



चतुर्थ भाव में विराजमान शनि की अशुभता निवारण के उपाय एवम् टोटके



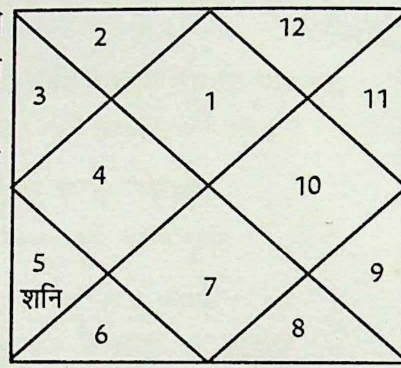
चतुर्थ भाव का शनि अशुभ फल कर रहा हो तो यह उपाय करें। लाभ हो सकता हो

1. मजदूर की सेवा करें।

2. सर्प को दूध पिलायें किन्तु अपनी सुरक्षा ध्यान में रखकर।

3. बहती दरिया में शराब प्रवाहित करें।
4. स्वयं या परिवार का कोई सदस्य शराब का सेवन न करें।
5. काले वस्त्र धारण करना वर्जित है।
6. रात्रिकाल में दूध का सेवन न करें।

पंचम भाव में विराजमान शनि की अशुभता निवारण के उपाय एवम् टोटके



जन्म कुण्डली के पांचवें भाव (खाना नं-5) में विराजमान शनि जातक पर अशुभ फल कर रहा हो तो निम्नलिखित उपाय करें—

1. घर में काला कुत्ता पालें। सन्तान को सुख होगा।

2. बुध का उपाय करें।

3. अड़तालीस वर्ष से पूर्व मकान न बनवायें।

4. सौंफ, गुड़, शहद, तांबा, चांदी आदि नये लाल वस्त्र में बांधकर अंधेरे कमरे में रखें।

5. अपने भार के दसवें भाग वजन के बराबर बादाम तोलकर बहते जल में प्रवहित करें।

षष्ठम भाव में विराजमान शनि की अशुभता निवारण के उपाय एवम् टोटके



जिस जातक की कुण्डली के छठें भाग में शनि बैठा हो और जातक को अशुभ फल प्रदान कर रहा हो तो निम्नलिखित उपाय एवम् टोटके व्यवहार में लायें।

1. सरसों का तेल मिट्टी के बने पात्र (बर्तन) में भरकर पानी के अन्दर (तालाब आदि में) मिट्टी के नीचे दबावें। बर्तन मिट्टी के नीचे दबाने से पहले तेल में अपना चेहरा अवश्य देख लें।

2. शनिवार के दिन बहते जल में बादाम प्रवाहित करें।

3. घर में काला कुत्ता पालें। सन्तान को सुख होगा।
4. कृष्ण पक्ष में शनिवार का व्रत अवश्य रखें।
5. सर्प को दूध पिलायें किन्तु सावधानीपूर्वक।

सप्तम भाव में स्थित शनि की अशुभता निवारण के उपाय एवम् टोटके



जन्म कुण्डली के सातवें भाव में स्थित शनि यदि जातक को अशुभ फल दे रहा हो तो ऐसे जातक अग्रलिखित उपाय करें—

1. काली गाय की सेवा करने से जातक को लाभ होगा।
2. परस्त्री गमन न करें।
3. शनिवार के दिन बांसुरी में चीनी भरकर निर्जन स्थान में मिट्टी के नीचे दबायें।
4. शराब और मांस-मछली का सेवन न करें।
5. पहला भाव खाली हो तो शहद से भरा बर्तन एकान्त स्थान में दबायें।
6. एक लोटा जल में गुड़ डालकर शनिवार के दिन पीपल की जड़ (मूल) में चढ़ायें।

अष्टम भाव के शनि की अशुभता निवारण के उपाय एवम् टोटके



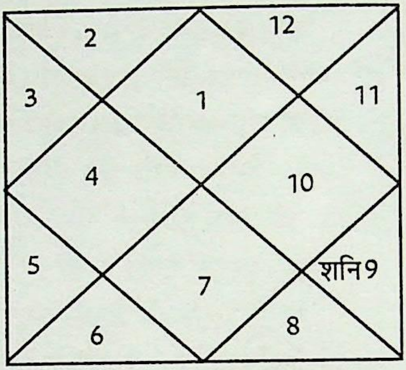
शनि अष्टम भाव में हो और अशुभ फल दे रहा हो तो उसकी अशुभता निवारण हेतु यह उपाय करें—

1. चांदी का चौकोर टुकड़ा सदैव अपने पास रखें तथा सम्भव हो तो चांदी की चेन धारण करें।
2. शराब का सेवन न करें। शुद्ध शाकाहारी रहें।
3. यदि शनि अशुभ हो तो आठ सौ ग्राम कच्चा दूध सोमवार के दिन बहते जल में प्रवाहित करें।

4. आठ किलो काली उड़द के दाने या आठ सौ ग्राम उड़द में सरसों का तेल मिलाकर शनिवार के दिन किसी पवित्र नदी के जल में प्रवाहित करें।

5. पत्थर पर बैठकर स्नान करें। कच्ची मिट्टी पर बैठकर स्नान न करें।

नवम् भाव के शनि की अशुभता निवारण के उपाय एवम् टोटके



यदि जातक की जन्म कुण्डली के नवम् भाव में शनि स्थित हो और अशुभ फल कर रहा हो तो अग्र लिखित उपाय करें—

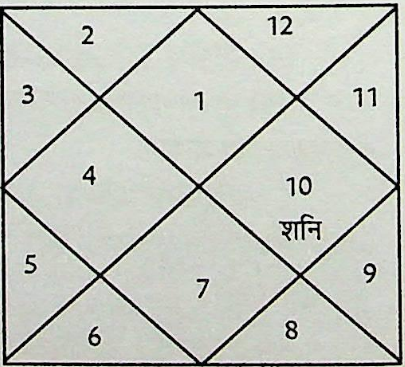
1. वृहस्पतिवार का व्रत रखें और पीला प्रसाद बांटे।

2. घर के पीछे की ओर कोने में अंधेरी कोठरी बनायें।

3. मकान के छत पर कूड़ा-करकट अथवा व्यर्थ की वस्तुएं न रखें।

4. वृहस्पतिवार के दिन 100 ढाक के पत्ते कच्चे दूध से धोकर नदी में प्रवाहित करें।

दशम भाव में स्थित शनि की अशुभता निवारण के उपाय एवम् टोटके



जिस जातक की कुण्डली के दशम भाव में शनि विराजमान हो और अशुभ फल दे रहा हो तो उस जातक को निम्नलिखित उपाय करना चाहिए।

1. शनि के देवता गणेश जी हैं। जातक गणेश जी की उपासना करें।

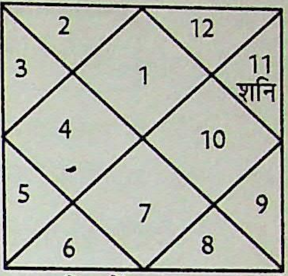
2. वृहस्पति का उपाय करना चाहिए। वृहस्तपति को व्रत रखें।

3. अन्धे व्यक्ति की सेवा करें।

4. पीले रंग का वस्त्र धारण करना उत्तम है और पीले रंग का रूमाल सदैव अपने पास रखें।

5. नशाखोरी और मांस-मछली का सेवन न करें।

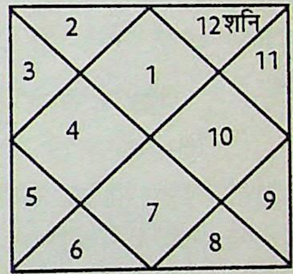
एकादश भाव में स्थित शनि की अशुभता निवारण के उपाय एवम् टोटके



ग्यारहवें भाव में स्थित शनि अशुभ फल करे तो निम्नवत उपाय करना चाहिए—

1. परस्त्रीगमन न करें।
2. प्रातः काल सूर्योदय से पहले 43 दिन अपने मकान के मुख्यद्वार पर शराब या सरसों का तेल जमीन पर गिरायें। यह चमत्कारी प्रभाव वाला टोटका है। आजमाकर देखें।
3. घर से बाहर जाते समय जल से भरा घड़ा द्वार पर रखें और उसमें अपना चेहरा देखकर जायें। कार्य पूर्ण होने की ज्यादा सम्भावना रहेगी।
4. वृहस्पति का उपाय करने से शनि की अशुभता का शमन होता है।
5. घर में चांदी की ठोस ईंट रखें।
6. शनिवार को व्रतस्थ रहें।

द्वादश भाव में स्थित शनि की अशुभता निवारण के उपाय एवम् टोटके



बारहवें भाव में स्थित शनि अशुभ फल प्रदान करे तो निम्नवत उपाय करना चाहिए।

1. मकान में पीछे की ओर खिड़की या दरवाजा न बनवायें।
2. शराब तथा मांस-मछली का सेवन न करें।
3. बारह बादाम नवीन (नये) काले कपड़े में बाधंकर लोहे के पात्र में बन्द करके सदैव कायम रखें।
4. असत्य भाषण न करें अर्थात् असत्य न बोलें।
5. शनि यंत्र धारण करना लाभकारी होगा।

सुहृदय पाठक गण—

अब तक आप शनि का द्वादश भावों में शुभ-अशुभ फल, लाल किताब के मतानुसार अशुभता निवारक उपाय एवम् टोटके, शनि का राशिगत प्रभाव, शनि की साढ़ेसाती ढैय्या, शनि के साथ किसी अन्य ग्रह का योग हो तो जातक पर क्या शुभ-अशुभ प्रभाव होगा जैसे शनि के साथ सूर्य विराजमान हो या शनि के साथ शुक्र हो आदि के विषय में पढ़ चुके हैं। और उनके उपायों का भी अवरोकन कर चुके हैं।

अब शनि के साथ दो ग्रहों, तीन ग्रहों, चार ग्रहों, समस्त ग्रहों के योगायोग का फलादेश वर्णन कर रहे हैं। चूंकि शनि के साथ एक-एक ग्रह के विराजित होने का फलादेश वर्णन इस पुस्तक में कर चुके हैं अतः एक ही तथ्य को पुनः लिखना उचित नहीं।

तीन ग्रहों की युति का फलादेश

शनि के साथ अन्य दो ग्रह एक भी भाव में विराजमान हो तो क्या शुभ-अशुभ फल जातक को प्रदान करते हैं ?

शनि के साथ सूर्य और वृहस्तपति की युति का फल

शनि के साथ सूर्य और वृहस्पति एक ही भाव में बैठे हो तो ऐसा जातक परोपकारी स्वभाव का सुखी और प्रसन्न चित्त होता है। जातक शारीरिक रूप से स्वस्थ तो होता ही है विलक्षण प्रतिभा का स्वामी और प्रखर बुद्धि वाला होता है।

शनि के साथ चन्द्र और वृहस्पति की युति का फल

जिस जातक की कुण्डली में शनि के साथ चन्द्र और वृहस्पति एक ही भाव में विराजित हो वह जातक उच्च पद प्राप्त करता है। स्वस्थ सुन्दर शरीर और बुद्धिमान होता है किन्तु उक्त ग्रह कुण्डली के एकादश भाव में विराजमान हो तो माता, चाची, मौसी और दादी के लिए अशुभ है।

शनि के साथ शुक्र और वृहस्पति के योग का फलादेश

जिस जातक की कुण्डली में शनि+शुक्र+वृहस्पति का योग हो वह जातक समस्त उत्तम गुणों से युक्त होगा। समाज से मान-प्रतिष्ठा ऐसे जातकों को प्राप्त होगी। उक्त तीन ग्रहों का योग पंचम भाव में हो तो जातक की पत्नी चरित्रहीन होगी। अन्य सभी भावों में शुभ ही शुभ है।

शनि+मंगल+वृहस्पति की युति का फल

जिस जातक की कुण्डली में शनि के साथ मंगल और वृहस्पति बैठे हों वह जातक जीवन पर दुखी रहता है। उपरोक्त ग्रहों की युति अशुभकारी है।

शनि, बुध और वृहस्पति के योग का फलादेश

यदि कुण्डली में शनि के साथ बुध और वृहस्पति का योग हो तो जातक सर्वसाधन सम्पन्न होगा। धन-सम्पत्ति से परिपूर्ण होता है। वाहन सुख, उत्तम परिवार, सभी कुछ जातक को प्राप्त होते हैं।

शनि, सूर्य और शुक्र के योग का फल

सूर्य+शुक्र+शनि का योग जिस जातक की कुण्डली में हो वह जातक दुर्भाग्य का मारा होगा। झूठ बोलना उसकी आदत में शुमार होगा। अपने ही हाथों अपना भविष्य बर्बाद करेगा।

शनि, शुक्र और बुध के योग का फल

शनि, शुक्र और बुध का योग जातक के लिए अनिष्टकारी होता है।

शनि, सूर्य, बुध की युति का फल

यदि जातक की कुण्डली में ये ग्रह 2, 5, 9 अथवा 12 वें भाव में विराजमान हैं तो जातक को सर्वथा शुभ फल प्रदान करेंगें अन्य भावों में मंदा होता है।

शनि, सूर्य और मंगल की युति का फल

उक्त ग्रहों का योग जातक को मंदा फल कारक है।

शनि, मंगल, चन्द्र का योग

शनि के साथ मंगल और चन्द्र का योग यदि जातक की कुण्डली के प्रथम भाव में हो तो जातक को राजा से मान सम्मान प्राप्त होता है। भाव संख्या 3, 4, 8 में यही योग हो तो जातक को अत्यधिक हानि का सामना करना पड़ता है।

शनि, चन्द्र और बुध के योग का फल

यह योग जातक को अधिक धन-सम्पत्ति प्रदायक है किन्तु जातक क्रूर स्वभाव वाला होगा।

शनि, चन्द्र और शुक्र के योग का फल

शनि के साथ चन्द्र और शुक्र की युति हो तो जातक धार्मिक स्वभाव वाला होगा। परिश्रम से सफलता अर्जित करेगा। ऐसे जातकों का झुकाव लेखन की ओर भी होता है।

शनि, मंगल और बुध की युति का फल

शनि के साथ मंगल और बुध विराजित हों तो जातक के मामा के घर की बर्बादी होती है। व्यापार पर ज्यादा प्रभाव पड़ता है।

शनि, चन्द्र और राहु के योग का फल

यह योग जातक के लिए अनिष्टकारी है। जातक के साथ मंदी घटनायें घटित होती है। जातक सन्तान के लिए चिन्तित रहता है।

शनि, मंगल और केतु के योग का फल

शनि+मंगल+केतु एक भाव में बैठे हो तो जातक की घर-गृहस्थी में क्लेश बना रहता है। बर्बादी के आसार बनते हैं।

शनि, बुध और राहु के योग का फल

इस योग का जातक विद्वान, बुद्धिमान और चतुर होगा। अपनी बुद्धि के बल पर ऐसे जातक अधिक उन्नति करते हैं।

शनि, वृहस्पति और राहु का फल

उपरोक्त ग्रहों का योग जिस भाव में होता है उस भाव से सम्बन्धित कार्यों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। ससुराल वालों के लिए अधिक अनिष्टकारी है।

शनि, राहु और केतु के योग का फल

शनि, राहु और केतु जिस भाव में विराजमान होते हैं उस भाव के शुभफल को नष्ट देते हैं क्योंकि तीनों नेष्ट (पापी ग्रह) हैं।



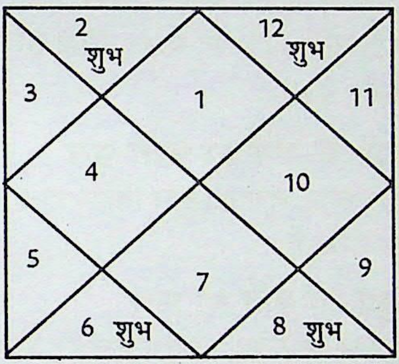
चार ग्रहों की युति का फलादेश

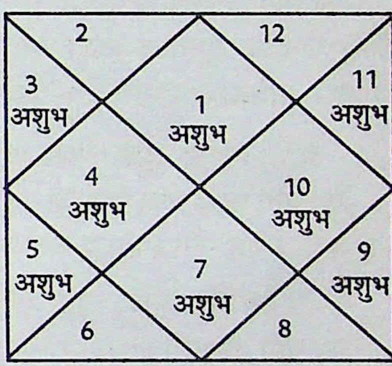
शनि के साथ तीन अन्य ग्रह एक ही भाव (खाने) में हो तो जातक को क्या फल प्रदान करेंगे—

शनि के साथ सूर्य, चन्द्र और मंगल की युति का फल

जातक की कुण्डली में शनि+सूर्य+चन्द्र और मंगल यदि द्वितीय, षष्ठम, अष्ठम अथवा द्वादश भाव में विराजमान हो तो जातक के लिए अति शुभ और मंगलकारी हैं किन्तु अन्य भावों में अनिष्ट फल प्रदान करेंगे। अन्य भावों में विराजित होने पर धन हानि की ज्यादा सम्भावना होती है।

देखें कुण्डली



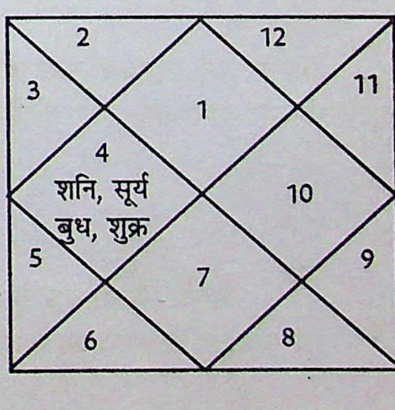


शनि, सूर्य मंगल और बुध की युति का फल

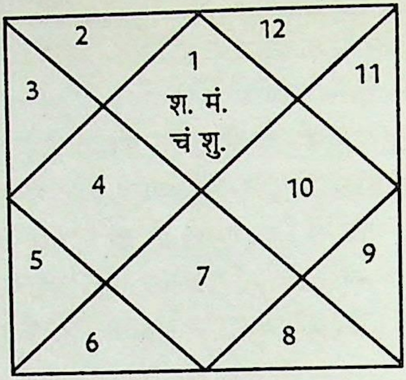
जिस जातक की कुण्डली में शनि के साथ उसी भाव में सूर्य, मंगल और बुध बैठे हो तो जातक बहुत धनवान होता है।

शनि, सूर्य, बुध और शुक्र के योग का फल

उक्त ग्रह जिस जातक की कुण्डली के चतुर्थ भाव में विराजमान हो वह जातक धन-सम्पत्ति से भरपूर होता है किन्तु सन्तान प्राप्ति की सम्भावना कम रहती है।



शनि, चन्द्र, मंगल एवम् शुक्र के योग का फल



यह योग कुण्डली के द्वितीय भाव में जातक के लिए अति शुभकारी है। उक्त ग्रहों के योग का शुभफल जातक को विद्या, बुद्धि और धन प्रदान करता ही है। उच्च पद (अधिकारी स्वरूप) भी प्रदान करता है।

शनि, चन्द्र, बुध एवम् वृहस्पति के योग का फला फल

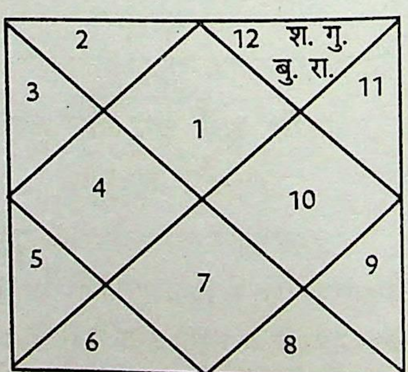
यह योग षष्ठम भाव में हो तो जातक धनवान, गुणवान और विद्वान होता है। अन्य भावों में यह योग सामान्य फल प्रदान करता है।

शनि, चन्द्र, शुक्र और बुध की युति का फल

यह योग कुण्डली के किसी भी भाव में हो सामान्यतः अशुभ फल ही जातक को प्रदान करता है।

शनि, गुरु, बुध और राहु की युति का फल

जातक को सामान्य फल देता है। द्वादश भाव का योग जातक को कर्जाई बनाता है।



शनि, चन्द्र,बुध एवम् सूर्य की युति का फल

इस योग का जातक उच्च पदस्त किन्तु विलासी होता है।

शनि, सूर्य, मंगल और शुक्र की युति का फल

जिस जातक की कुण्डली में उपरोक्त ग्रहों की युति हो ऐसे जातक जीवन में अधिक निराश होते हैं। भाग्यहीनता और दुःखों का योग है।

शनि, शुक्र, बुध और सूर्य की युति का फल

ऐसे जातक सफल व्यापारी, धनवान और बुद्धिमान होते हैं। यह योग जिस जातक की कुण्डली में हो उसके भाग्य के मार्ग खुल जाते हैं और अधिक धन-यश प्राप्त करता है।

शनि, मंगल, बुध और राहु की युति का फल

कुण्डली के जिस भाव में इन ग्रहों की युति होगी, उस भाव का फल मंदा नहीं करेगा किन्तु धन की चोरी होने की सम्भावना रहेगी। जातक के भाई के लिए मंदा प्रभावकारी योग है। भाई निःसंतान हो सकता है।

शनि, वृहस्पति, मंगल और सूर्य की युति का फल

उपरोक्त ग्रहों का योग जातक के भाग्य के द्वारा खोल देता है। सामान्य भाषा में जातक धन-सम्पत्ति और मान-सम्मान प्राप्त करता है। ऐसे जातक सेना विभाग में उच्च पदासीन अधिकारी पद भी प्राप्त कर सकते हैं।

शनि, वृहस्पति बुध और सूर्य की युति का फल

इस योग का जातक कलहप्रिय और विवादी होता है।

शनि के साथ बुध, गुरु और शुक्र की युति का फल

शनि के साथ बुध, गुरु और शुक्र की युति जिस जातक की कुण्डली में हो वह जातक धार्मिक प्रवृत्ति का होगा। धन-सम्पत्ति से सुखी होगा।

शनि, मंगल, वृहस्पति और शुक्र की युति

ये ग्रह एक ही भाव में हो तो ऐसे योग वाले जातक सुखी होते हैं।



पांच ग्रहों की युति का फल

शनि के साथ अन्य चार ग्रह एक ही भाव में विराजमान हो तो जातक को क्या फल (शुभ अथवा अशुभ) प्रदान करेंगे। शनि सहित पांच ग्रहों की युति का फल निम्नवत जानें।

शनि, मंगल, वृहस्पति, बुध एवम् शुक्र की युति का फल

जिस किसी जातक की कुण्डली के एक ही भाव में उपरोक्त ग्रह विराजमान हो तो जातक बेफिक्र जीवन यापन करता है। ऐसे जातक ज्यादा सोते हैं। तमोगुण की प्रधानता रहती है।

शनि, चन्द्र, मंगल, बुध और गुरु की युति का फल

ऐसे जातक पराधीन होकर जीवन यापन करते हैं। जातक को राज्य द्वारा सम्मानित होने का अवसर प्राप्त हो सकता है।

शनि, चन्द्र, मंगल, बुध और शुक्र की युति का फल

ये ग्रह एक ही भाव इकट्ठे हो तो जातक चुगलखोर और अभिमानी प्रवृत्ति का होगा। ऐसे जातक समाज से प्राय: तिरस्कृत होकर जीवन यापन करते हैं।

शनि, चन्द्र, मंगल, गुरु और शुक्र की युति का फल

शनि, चन्द्र, मंगल, वृहस्पति और शुक्र जिस जातक की कुण्डली के एक ही भाव में विराजमान हो वह खोटे भाग्य वाला होगा। ऐसे जातक बुद्धिमान तो होते हैं किन्तु क्रोधी और अभिमानी स्वभाव होने के कारण उनकी विद्वता का सम्मान नहीं होता।

शनि, चन्द्र, बुध, वृहस्पति और शुक्र के योग का फल

शनि के साथ चन्द्र+बुध+वृहस्पति+शुक्र का योग जातक को महान् भाग्यशाली बनाते हैं। जातक प्रचुर धन-सम्पत्ति का स्वामी होगा। बुद्धिमान और विद्वान भी होता है।

शनि, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध का योग

जिस जातक की कुण्डली में उपोक्त ग्रहों का योग हो, वह अल्पायु (कम उम्र) और भाग्यहीन होगा। जातक को सुख की कमी रहेगी।

शनि, सूर्य, चन्द्र, बुध और वृहस्पति की युति

उपरोक्त ग्रहों की युति हो तो जातक पर अशुभ फल ज्यादा प्रभावी होंगे।

ऐसे जातक प्रायः कर्महीन होते हैं और अपने भाग्य को कोसते रहते हैं। जातक में सद्‌गुण कम दुर्गुण ज्यादा होने की सम्भावना होगी

शनि, सूर्य, चन्द्र, वृहस्पति और शुक्र के योग का फल

यह योग जातक के लिए रोग प्रदाता है। जातक धर्म-कर्म से परे स्वार्थी और कुमार्गी होते हैं।

शनि, सूर्य, चन्द्र, वृहस्पति और शुक्र के योग का फल

कुण्डली में उक्त ग्रहों का योग हो तो जातक बातें करने में तेज-तर्रार होगा। अपने शब्द-जाल से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता वाला होगा।

शनि, सूर्य, चन्द्र, मंगल और शुक्र की युति

इस योग का जातक अनेक प्रकार की मुसीबतों परेशानियों से घिरा कष्टमय जीवन व्यतीत करता है। जातक में पाप भाव की अधिकता होगी। प्रायः क्रोध के कारण ऐसे जातक अपना अनिष्ट कर बैठते हैं।

शनि, सूर्य, मंगल, वृहस्पति और शुक्र का योग

जातक दुर्बल शरीर वाला होगा किन्तु उपरोक्त ग्रहों का योग जातक को धनवान बनाता है।

शनि, सूर्य, मंगल, बुध और शुक्र के योग का फल

जातक दुर्बल शरीर वाला होगा किन्तु उपरोक्त ग्रहों का योग जातक को धनवान बनाता है।

शनि, सूर्य, मंगल, बुध और शुक्र के योग का फल

उपरोक्त पांचों ग्रहों के योग वाला जातक प्रायः दुःखी रहता है। जातक रोगी हो सकता है। आर्थिक तंगी का भी योग है।

जिस जातक की कुण्डली में शनि सहित छः ग्रहों की युति हो या सात ग्रह अथवा सभी ग्रह एक ही भाव में विराजमान हों। ऐसे जातकों को धन-सम्पत्ति, मान-सम्मान तो प्राप्त होता ही है साथ में जातक धार्मिक गुणवान, विद्वान और परोपकारी भी होते हैं। सभी ग्रह एक भाव में महान शुभ कारक होतें हैं। यदि सभी ग्रह द्वितीय, तृतीय, अष्टम अथवा कुण्डली के नवम भाव में विराजमान हों तो जातक मंत्री, मुख्यमंत्री महान नेता, उच्च पदासीन अधिकारी या उद्योगपति हो सकता है।

शनि प्रदत्त रोग और उपाय

पाठक गण—

अब मैं शनि के रोग प्रदान करने वाले भावों का वर्णन कर रहा हूं। कुण्डली के किन भावों का शनि जातक को कौन से रोग से ग्रस्त करता है ? स्वयं पढ़े और यदि कोई जातक ऐसे शनि से पीड़ित है तो दिये गये उपाय एवम् टोटकों को व्यवहार में लाकर शुभत्व प्राप्त करे। रोग मुक्त होने का साधन करें। लाभ हो सकता है।

1. कुण्डली के प्रथम भाव (लग्न), चतुर्थ, अष्टम आदि भावों में से किसी भी भाव में सूर्य हो और शनि दशम भाव में विराजमान हो तो जातक को 'क्षय रोग' हो सकता है। उक्त ग्रह पीड़ा निवारण हेतु 'आदित्य-हृदय-स्तोत्र' का नित्य पाठ करें।
2. यदि शनि, चन्द्र और गुरु की युति कुण्डली के छठे भाव में हो तो जातक को 'कुष्ट-रोग' होने का भय है। या हो चुका हो ऐसे जातक हल्दी, मोर पंख और मूंग की दाल के छिलके घिसकर दागों पर लगावें, लाभ हो सकता है। औषधियां भी प्रयोग करते रहें।
3. पंचम, सप्तम अथवा नवम भाव में शनि के साथ जिस जातक की कुण्डली में मंगल विराजित हो उस जातक के लिए 'मतिभ्रम' का योग बनता है अतः समय रहते उचित उपाय करें।
4. लग्न भाव में शनि के साथ सूर्य और मंगल शुभ-ग्रह हो तो भी जातक को रक्त विकार होने की ज्यादा सम्भावना होती है। इसके लिए जातक प्रतिदिन प्रातः काल स्नान के पश्चात् तांबे के लोटे में जल लेकर उसमें गुड़ मिलाकर सूर्य को अर्घ्य दे।
5. सिंह लग्नस्थ जातक की कुण्डली के चतुर्थ भाव का शनि जातक को हृदय रोग प्रदान करता है।
6. कुण्डली के द्वितीय भाव का शनि जातक के दायें नेत्र (Right Eye) का कारक है। ऐसे जातक 'सूर्य यंत्र' धारण करें।

शनि से वाणिज्य, व्यापार सम्बन्धी विचार

लोहा, स्टील, फौलाद, कोयला, पत्थर, शीशा, जमीन की खरीद फरोख्त बिक्री, बढ़ईगीरी का कार्य, मशीनरी, सीमेंट, प्लास्टिक, चमड़ा, कम्बल, जादू-मंत्र की कला, वकालत, जज, लिपिक, शराब, स्पिरिट, दलाली, सट्टेबाजी, पेन्टर, धोबी तरखान, रिक्शा चालक, वाहन चालक, गौ-भैंस, पान का व्यवसाय, कृषि, खदान का कार्य, सरसों का तेल एवम् काली मिर्च, उड़द आदि का व्यापार, सुरमा, काला तिल का व्यवसाय आदि व्यवसाय निर्देशित करता है। उपरोक्त के अलावा भी अन्य कई व्यवसायों का स्वामित्व शनि का है।

धन हानि का योग

कुण्डली में किन भावों का शनि जातक के लिए 'धन-हानि' का योग बनाता है। भौतिकता प्रधान युग में जातक के लिए धन-हानि एवम् 'धन-लाभ' सम्बन्धित तथ्य विशेष महत्त्व रखता है। सर्व प्रथम हम शनि के सम्बन्धित धन-हानि के योग के विषय में चर्चा करेंगे तथा उसके उपायों का वर्णन करेंगे तत्पश्चात् 'शनि क्या लाभ प्रदाता भी है ?' के विषय में—

आइये देखें किन स्थितियों में शनि हानि-प्रद है—

- ☞ मेष लग्न में लाभेश शनि यदि षष्ठम, अष्टम, अथवा द्वादशभाव में हो तथा धनेश अस्तगत अथवा पापग्रस्त हो। तो जातक के लिए दरिद्रता का योग बनता है।
- ☞ यदि वृष लग्नस्थ जातक (जिसका जन्म वृष लग्न में हुआ हो) की कुण्डली में दशम भाव का स्वामी शनि षष्ठम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में विराजमान हो तो जातक को परिश्रम का पूर्ण फल (लाभ) नहीं प्राप्त होता। जीवन भर धन की कमी रहने का योग बनता है।
- ☞ मिथुन लग्नस्थ जातक की कुण्डली में अष्टमेश शनि वक्री हो अथवा अष्टम स्थान में अन्य कोई ग्रह वक्री हो तो जातक के लिए अचानक धन हानि का योग बनता है।
- ☞ कर्क लग्न वाले जातक की कुण्डली में यदि अष्टमेश शनि वक्री होकर् कहीं बैठा हो अथवा अष्टम स्थान में अन्य कोई ग्रह वक्री हो तो अचानक (Suddenly) धन-हानि हो सकती है।

- ☞ धनु लग्न में धनेश शनि षष्टम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में विराजमान हो तो जातक के लिए धन हीनता का योग बनता है।
- ☞ धनु लग्नस्थ जातक की कुण्डली के केन्द्र में सूर्य, मंगल शनि और राहु विराजमान हो या धन भाव में शनि के साथ मंगल हो तो धन हीनता का योग बनता है
- ☞ लग्न भाव में सूर्य, दशम भाव में शनि, सप्तम भाव में मंगल और सुखभाव में राहु विराजमान हो तो जातक के लिए महा दरिद्रता का योग बनता है।
- ☞ कुम्भ लग्न में लग्नेश शनि षष्टम, अष्टम अथवा द्वादश स्थान पर हो और सूर्य षष्टम या द्वादश स्थान में हो तो जातक ऋणी हो सकता है। यह योग यही बताते हैं।
- ☞ धन स्थान में पाप ग्रह हों और लाभेश शनि षष्टम, अष्टम अथवा द्वादश स्थान में हो तो दरिद्रता का योग बनता है।
- ☞ शनि के अशुभ फल से पीड़ित दरिद्रता निवारण हेतु उपाय करें आवश्यकतानुसार मुझ से सहयोग परामर्श ले सकते हैं।

धन-लाभ का योग

शनि के क्रूर स्वभाव से शायद ही कोई अपरिचित हो अन्यथा शनि का नाम सुनकर ही लोगों का हृदय कांप जाता है और जिन्होंने शनि की अशुभ दृष्टि (प्रकोप) को सहन किया है उनके विषय में कुछ कहने को बचता ही नहीं है। शनि क्रूर है, अशुभ है, भयंकर है किन्तु इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि शनि शुभ एवम् धनदायी भी है।

पाठकगण-

कोई भी देवता क्रूर या अशुभ नहीं होता बल्कि अशुभ और क्रूर होता है वह समय, जिस समय जातक (व्यक्ति) का जन्म होता है तथा जन्म और मरण दैववश (संयोग से तात्पर्य है) नहीं होता बल्कि विधाता के पूर्ण व्यवस्थित विधान के अन्तर्गत होता है। यूं कहा जाये तो अति उत्तम होगा कि प्राणी को प्रारब्ध (पिछले जन्म के कर्मों का फल) का फल अगले जन्म में भोगना पड़ता है। यदि शुभ कर्म आपने पूर्व जन्म में किया होगा तो यह जन्म शुभ घड़ी, शुभ मुहूर्त में हुआ। कर्म खराब थे सो अशुभ घड़ी में उत्पन्न हुए। जन्मकाल में ग्रहों की जो स्थिति होगी उसी अनुसार जातक को शुभ फल प्रदान करेंगे अथवा अशुभ होंगे। जबकि शनि

को लोग अशुभ मानते हैं किन्तु सिर्फ मानना ही है शनि के प्रभाव से कितने लोग ऐसे हमारे बीच है जो करोड़ो-अरबों की सम्पत्ति के मालिक हैं।

एक जीते जागते व्यक्ति की कुण्डली प्रस्तुत कर रहे हैं जिन्हें शनि की शुभ-दशा ने शून्य (ZERO) से उठाकर कई करोड़ की सम्पत्ति का मालिक बनाया है। नाम न देकर केवल उनकी कुण्डली प्रस्तुत कर रहे हैं यह कुण्डली प्रस्तुत करने का मात्र उद्देश्य यही है कि शनि की शुभ-स्थिति जातक को करोड़ों का स्वामी बना देता है।



किन्तु शनि के साथ अन्य ग्रहों की स्थिति भी शुभ हो।

निम्नलिखित कुछ स्थितियां प्रस्तुत कर रहे हैं जो जातक के लिए शनि की धनदायक स्थितियां हैं—

- ☞ मेष लग्नस्थ जातक की कुण्डली में शनि, मंगल, वृहस्पति और शुक्र अपनी अपनी राशियों में विराजमान हो तो जातक अतुल धन-सम्पत्ति से पूर्ण हो सकता है।
- ☞ मेष लग्न में शनि, मंगल, बुध और शुक्र का योग धनवान होने का कारक है। जातक करोड़पति हो सकता है।
- ☞ मेष लग्न में उत्पन्न जातक की कुण्डली के वृष, कर्क, सिंह अथवा धनु राशि में वृहस्पति और चन्द्र की युति हो तो 'गजकेशरी योग' बनता है। ऐसे जातकों को अचनाक धन की प्राप्ति होती है।
- ☞ यदि वृष लग्न के जातक की कुण्डली के पंचम भाव में राहु+शुक्र+मंगल+शनि की युति हो तो जातक महान धन सम्पत्ति वाला होगा। यह धनप्रदायक योग है।
- ☞ वृष लग्न में शनि के साथ द्वितीय स्थान में बुध विराजमान हो तो धन-प्राप्ति का योग बनता है।
- ☞ मिथुन लग्न में चन्द्र, शनि के भाव में विराजित हो अर्थात् कुम्भ राशि में हो तो जातक अपने कर्म के बल पर धनवान होगा।
- ☞ वृष लग्न की कुण्डली के लग्न भाव में चन्द्र, कुम्भ में शनि, सिंह

राशि में सूर्य और वृश्चिक राशि में वृहस्पति विराजमान हो तो जातक अत्यधिक धनवान हो सकता है। मोटर वाहन आदि से सम्पन्न होने का योग बनता है।

- मेष लग्नस्थ कुण्डली के शनि भाव में शुक्र और शुक्र स्थान पर शनि विराजित हो तो जातक के भाग्य का सितारा चमकने का योग है। जातक अपने जीवन काल में अत्यधिक धन अर्जित कर सकता है।
- मिथुन लग्नस्थ जातक की कुण्डली के लग्न भाव में यदि शनि के साथ बुध विराजमान हो तो जातक शहर के धनी-मानी व्यक्तियों में से एक हो सकता है क्योंकि यह योग अधिक धन-प्रदायक है।

उपरोक्त शनि की कुछ विशेष स्थितियां हैं जो जातक के लिए धन-प्राप्ति का योग बनाते हैं। इनके अलावा भी शनि अन्य कई स्थितियों में धन-प्रदाता है। पाठक उपरोक्त वर्णित भाग से अपनी जन्म कुण्डली का मिलान करके फल (शुभ-या-अशुभ) जान सकते हैं। विकट समस्याएँ उत्पन्न होने पर परामर्श आदि के लिए मुझसे भी सम्पर्क कर सकते हैं। मैं कोई बहुत बड़ा ज्योतिषाचार्य तो नहीं किन्तु ज्योतिष की पुस्तकों का गहन अध्यन करने के पश्चात् कुछ ज्ञान अवश्य हो गया है। यदि आवश्यकता समझे तभी सम्पर्क करें। वैसे इस पुस्तक का सृजन इतने सरल ढंग से किया गया है कि आप पाठक अपनी कुण्डली से शनि की स्थिति का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

अनेक ज्योतिष की पुस्तकों को पढ़ने के बाद ही मैंने यह निश्चय किया कि 'शनि के उपाय एवम् टोटके' नामक पुस्तक लिखना आवश्यक ही नहीं बल्कि अति आवश्यक है। इसीलिए यह पुस्तक, अनेकों ज्योतिष की पुस्तकों से सहयोग एवम् 'गुरु' के आशीर्वाद से आप सभी के कल्याण की कामना करके लिख रहा हूं।



शनि की महादशा में अन्तर्दशाओं का फल
(उपाय सहित)

पाठक गण—

जिस समय जिस ग्रह की महादशा चल रही होती है उस ग्रह के महादशा काल (अविध) में नौ ग्रहों की दशाएं अपना भोग करती है और जातक के जीवन पर प्रभाव डालती हैं। उन दशाओं को 'अन्तर्दशा' कहते हैं। शनि की महादशा में नौ ग्रहों की अन्तर्दशाओं का फल इस प्रकार जाने—

शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा का फल—जातक अनेक प्रकार की विपत्तियों से ग्रसित हो सकता है, स्वयं जातक को उदर विकार या नेत्ररोग हो। जातक को शत्रुओं का भय, मान-सम्मान, धन-सम्पत्ति का नाश। पत्नी, पुत्र को कष्ट, शारीरिक एवम् मानसिक पीड़ा आदि।

उपाय—आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें। भगवान भास्कर (सूर्य) का अर्घ्य (जल) चढ़ायें।

शनि की महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा का फल—यह दशा जातक की पत्नी और स्वयं जातक के लिए मृत्युकारक हो सकती है। अनावश्यक क्रोध की अधिकता। जातक रोग व्याधियों से पीड़ित। जातक को जल से भय।

उपाय—गोदान, तिलहोम, महिषदान (भैंस) करें।

शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा का फल—पारिवारिक क्लेश की अधिकता, सुखों का नाश, नौकरी छूट सकती है, शत्रुओं की वृद्धि, घर त्याग करना, अग्नि से हानि, नेत्ररोग, पुत्र-पत्नी आदि से क्लेश, स्वजनों से वैमनस्य आदि।

उपाय—बैल का दान करें।

शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा का फल—शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा का समय जातक के भाग्य का सितारा बुलन्द करता है। जातक धन-सम्पत्ति, मान-सम्मान, शत्रुओं पर विजय, स्त्री सुख, कारोबार व्यवसाय की उन्नति, मित्रों से सहयोग आदि सहज ही पा लेता है किन्तु बात, पित्त या कफ आदि किसी रोग से जातक का पुत्र, भाई अथवा बहन-कोई ग्रसित हो सकता है।

उपाय—श्री विष्णु सहस्त्रनाम का जाप करें। श्री विष्णु सहस्त्रगम की पुस्तक यदि उपलब्ध न हो तो 'अमित पाकेट बुक्स, जालन्धर' से मंगवा सकते हैं।

शनि की महादशा में वृहस्पति की अन्तर्दशा का फल—जिस प्रकार

शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा जातक के सौभाग्य की वृद्धि करती है। ठीक उसी तरह गुरु की अन्तर्दशा भी जातक को शुभ होती है जातक धन और स्त्री पुत्र आदि से सुखी होगा। जातक धार्मिक प्रकृति का होगा।

उपाय—भगवान शिव सहस्त्रनाम का जप करने से सुख सौभाग्य की वृद्धि होगी आने वाली आपदाओं का भी नाश होगा।

शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा का फल—शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा जातक को यशस्वी बनाता है। धन-मान, पुत्र सुख, स्त्री सुख, मित्रों का सद्व्यवहार, कृषि की उन्नति तथा व्यवसाय की प्रगति होती हैं। आयात-निर्यात का व्यापार बहुत अधिक लाभ देता है।

उपाय—जातक विधिपूर्वक दुर्गा सप्तशती का अनुष्ठान करे। मां भगवती की कृपा से सभी विघ्न दूर रहेंगे।

शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा का फल—शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा का समय जातक के लिए अत्यन्त कष्टदायी होता है। आलस्य और पाप की वृद्धि होती है। अपयश और अपमान मिलता है। खेती (कृषि) में वृद्धि, भैसों की वृद्धि। जातक वात रोग, कफ, ज्वर आदि से पीड़ित होता है। किसी शुद्र जाति के व्यक्ति से धन लाभ हो सकता है।

उपाय—भगवान शिव के 'महामृत्युंजय मंत्र' का विधिपूर्वक अनुष्ठान करायें।

शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा का फल—शनि की महादशा में जब राहु की अन्तर्दशा आती है। उस समय जातक के प्राणों का संकट बन सकता है। जातक प्रमेह, ज्वर आदि अनेक प्रकार के शारीरिक रोगों से पीड़ित हो सकता है। चोट लगने की भी सम्भावना रहती है। चूंकि दोनों (शनि, राहु) पाप ग्रह हैं अतः क्षति ज्यादा कर सकते हैं।

उपाय—बैल दान करना पुण्य प्रद होता है। महामृत्युंजय जप करना चाहिए। भगवान शिव की कृपा से पीड़ा का निवारण हो सकता है। अतः सच्चे मन से ध्यान और जप करें।

शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा का फल—शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा हो तो जातक का स्त्री एवम् पुत्र से क्लेश रहता है पित्त एवम् वात जानित व्याधियों से जातक पीड़ित रहता है। शत्रु से कष्ट रहता है। आर्थिक परेशानी, सर्पों से भय।

उपाय—बकरी का दान करने से उपरोक्त कष्टों का निवारण हो सकता है।

यंत्र-मंत्र-तंत्र द्वारा शनि अनिष्ट निवारण

यंत्र-मंत्र एवम् तंत्र द्वारा शनि की अनिष्टता का निवारण किया जा सकता है। यंत्रों एवम् मंत्रों में अपूर्व शक्ति निहित होती है। वैदिक विधि से, जप एवम् अनुष्ठान से शनि शांति एवम् अनिष्टता निवारण उपाय इस प्रकार है—

संक्षिप्त वैदिक विधि

शनि देव की पूजा, आराधना आरम्भ करने से पूर्व पूजन में प्रयुक्त होने वाली सामग्री इकट्ठी कर लें। पूजन सामग्री में आम की लकड़ी से निर्मित काले रंग से रंगा हुआ सिंहासन अथवा लोहे का सिंहासन, काला वस्त्र, यजमान हेतु काला वस्त्र एक जोड़ा, एवम् काला अंगोछा, काला पुष्प, काले तिल, उड़द, सरसों का तेल, रुई, दीपक, काले तिल से बना लड्डू, अरबी, पंचपात्र, काला कम्बल, शहद, शक्कर, दही, गाय का दूध, हवन सामग्री, लौंग, इलायची, सूखे मेवे आदि। संभवत: वैदिक पूजन हेतु अपने पुरोहित (पंडित जी) से परामर्श कर लें। यथा संभव पूजन कार्य विद्वान ब्राह्मण से ही करायें।

पूजन विधि

दाहने हाथ की अंजुली में जल लेकर अपने शरीर पर छिड़के तत्पश्चात् दीपक प्रज्वलित करके शनिदेव की प्रतिमा के सम्मुख रखें और शनिदेव के स्वरूप का ध्यान करते हुए प्रतिमा के समक्ष पुष्प, चन्दन, बिल्व पत्र आदि चढ़ाएँ उसके बाद विधिपूर्वक कुशा की पवित्री धारण करके मस्तक पर चन्दन का तिलक लगायें। तिलक करते समय यह मंत्र पढ़ें—

"ॐ चन्दनस्य महत्व पुण्यं पवित्र पाप नाशनम्।
आपदं हरते नित्यं शनि देवः रितीस्थ सर्वदा।"

तत्पश्चात् शनिदेव का आ्हवान करें

आह्वान मंत्र

अष्टम्या रेवती समंविताया सौराष्ट्र जातं कश्यप गोत्रं लोहवर्ण
धनुराकृतिं मण्डलात्पश्चिमाशास्थं पश्चिमाभिमुखं
गृध्रवाहन संकर जातिं यमाधि दैवतं प्रजापति प्रत्यधि देवतं
शनिमावाहयाम। ॐ भूभुर्व : स्वः शनैः इहागच्छ
इहातिष्ठ इमं यज्ञमभिरक्ष॥

विनियोग मंत्र

शनिदेव का आवाहन करने के बाद संकल्प आदि करके निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए विनियोग करें

"ॐ शन्नों देवी रिति मंत्रस्य दध्यंडाथर्वण ऋषिः गायत्री छन्दः शनिर्देवता आपो बीजं वर्तमान इति शक्तिः शनैश्चर प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥"

विनियोग के पश्चात ऋष्यादिन्यास निम्नलिखित विधि से करें

ऋष्यादिन्यास

ॐ दध्यंडाथर्वण ऋषये नमः। -शिरसि (सिर का स्पर्ष करें)

ॐ गायत्री छन्दसे नमः। -मुखे (मुख का स्पर्श करें)

ॐ शनैश्चर देवतायै नमः। -हृदय (हृदय का स्पर्श करें)

ॐ आपोबीजाय नमः। - गुह्य (गुह्य भाग का स्पर्श करें)

ॐ वर्तमान शक्तयै नमः। -पादयोः (दोनों पैरों का स्पर्श करें)

करन्यास

ॐ शन्नोदेवी रित्यं गुष्ठाभ्यां नमः। एक हाथ के अंगूठे से दूसरे अंगूठे का स्पर्श करें

ॐ अभिष्टये तर्जनीभयां नमः। दोनों तर्जनी उंगलियों का स्पर्श करें

ॐ आपो भवन्तु मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमा उंगली का एक दूसरे से स्पर्श करें

ॐ पीतये अनामिकाभ्यां नमः। अनामिका उंगलियों का एक दूसरे से स्पर्श करें

ॐ शंय्योरिति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। कनिष्ठिका (छोटी) उंगली का एक दूसरे से स्पर्श करें

ॐ अभिस्त्रवन्तु नः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ का पृष्ठ भाग आपस में जोड़ें।

हृदयादिन्यास

करन्यास करने के उपरान्त हृदयादिन्यास करें—

ॐ शन्नोदेवी रिति हृदयाय नमः।—हृदय का स्पर्श करें।

ॐ अभिष्ठये शिरसे स्वाहा। सिर का स्पर्श करें।

ॐ आपोभवन्तु शिखायै वषट्।—शिखा का स्पर्श करें।

ॐ पीतये कवचाय हुम्, ॐ शंय्यो रिति नेत्र त्रयाय वौषट्। दोनों नेत्रों का स्पर्श

ॐ अभिस्त्रवन्तु नः अस्त्राय फट्। सीने का स्पर्श करें

शनिदेव ध्यान मंत्र

नीलद्युतिः शूलधरः किरीटी गृध स्थितस्त्रास करो धनुष्मान।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽसतु मह्यं वरदो महात्मा॥

अर्थ—जो शरीर पर नीले वस्त्र, सिर पर मुकुट, हाथों में धनुष और शूल धारण किये हैं, जो गृध्र (गिध्द) पर विराजमान हैं। वे चार भुजाधारी (चतुर्भुज) महात्मा (शनिदेव) हमारे लिए शान्त और शुभवर प्रदायक हों।।

ध्यान के बाद वैदिक मंत्रो का पाठ करते हुए शनिदेव को आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान जल, शुध्दोदक स्नान, वस्त्र समर्पण, यज्ञोपवीत, चन्दन लेपन, पुष्पमाला समर्पण, शमीपत्र समर्पण, दुर्वादल, धूप, दीप, नैवेद्य, पान-सुपारी आदि समर्पण करें।

(विस्तृत शनिदेव पूजन विधान हेतु अमित पाकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित 'शनि-उपासना' मंगाकर पढ़ें)

शनि देव को नैवेद्य आदि समर्पित करने के पश्चात् शनि कवच एवम् शनि स्त्रोत पाठ करें।

शनि कवच

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्र स्थितस्त्रास करो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः सदा मम् स्याद् वरदः प्रशान्तः॥

ब्रह्मा उवाचः

श्रृणुध्वमृषयः सर्वे शनि पीड़ा हरं महतः।
कवचं शनि राजस्य सौरेदिमनुत्रमम,॥
कवचं देवतावासं सर्वसौभाग्य दायकम्।
शनैश्चर प्रीतिकरं सर्वसौभाग्य दायकं॥
शनैश्चरः पातु भालं में सूर्यनन्दनः।
नेत्रे छायात्मजः पातु-पातु कर्णो यमानुजः॥
नासां वैवस्वतः पातु मुखं में भास्करिः सदाः।
स्निग्ध कण्ठश्च में कण्ठं भुजो पातु महाभुजः॥
स्कन्धौ पातु शनिश्चैव करो पातु शुभप्रदः।
वक्षः पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वसि तस्तथा॥
नाभिः ग्रहपतिः पातु मन्दः पातु कटिं तथा।
उरु यमान्तकः पातु यमो जानुयुगं तथा॥

पादौ मन्दगतिः पातु सर्वांगम् पातु पिप्पलः।
अंगोपांगानि सर्वाणि रक्षेत् सूर्य सुतश्च मे॥
कवचं शनिदेवस्य यः पठेत्प्रयतः शुचिः।
न तस्य जायते पीड़ा प्रीतो भवति सूर्यजः॥
व्यय जन्म द्वितीयस्थो मृत्यु स्थान गतोऽविवा।
कलत्र स्थान गतोऽवापि सुप्रीतस्तु सदा शनिः॥
अष्टमस्थे सूर्य सुते व्यये जन्म द्वितीयगे।
कवचं पठतो नित्यं न पीड़ा जायते क्वचित्॥
इत्येत्कवचं दिव्यं सौरेर्यन्निमितं पुरा।
द्वादशाष्टम् जन्मस्थ दोषान्नाशयते सदाः॥
जन्म लग्नस्थितान् दोषान् सर्वान्नाशयते प्रभुः॥

शरीर के अंगों-उपांगों की रक्षा हेतु 'शनि कवच' का पाठ करना परम आवश्यक है तत्पश्चात शनिदेव को प्रसन्न करने हेतु पूर्ण श्रद्धा एवम् विश्वास से शनि स्तोत्र, शनि स्तवराज आदि का पाठ करें। आप के द्वारा की गयी पूजा से यदि प्रसन्न हो गये तो आपको धन सम्पत्ति वैभव, ऐश्वर्य, सुख आदि सभी कुछ प्रदान करेंगे। अब यह उनकी इच्छा पर निर्भर है कि वे प्रसन्न होते हैं या नहीं किन्तु आप भी निराश न हों वेदों आदि ने कहा हैं—मनुष्य देवताओं के अधीन हैं और देवता मंत्रों के अधीन रहते हैं। अतः वैदिक मंत्रों से की गयी उपासना उन तक पहुँचती है और वे उपासक पर प्रसन्न होते हैं।

शनि स्तोत्र

पूर्व काल में राजा दशरथ (श्री रामचन्द्र जी के पिता) चक्रवर्ती राजा हुए। एक बार ज्योतिषियों ने शनि को कृत्तिका नक्षत्र के अन्तिमचरण में देखकर राजा से कहा—राजन् ! अब यह शनि रोहिणी (नक्षत्र) का भेदन करेगा, इसे 'रोहिणी-शकट भेदन' कहते हैं। यह देवताओं मनुष्यों और दानवों के लिए महान् भयकारी होता है। इससे बारह वर्ष तक भयंकर अकाल पड़ता है तब राजा ने कहा-हे ब्राह्मणों। शनि रोहिणी भेदन न करे, इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए। आप लोग मुझे उपदेश करें। तब ब्राह्मणों ने उन्हें 'शनि-स्त्रोत' का पाठ करने के लिए कहा—

राजा दशरथ ने 'शनि-स्त्रोत' का जो पाठ किया, निम्नवत् है। आप भी इस स्तोत्र का पाठ करके शनिदेव को प्रसन्न कर सकते हैं।

सूर्य पुत्र ! नमस्तेऽस्तु सर्वभक्षाय वै नमः।
देवासुर मनुष्याश्च पशुपक्षि सरीसृपाः॥
त्वया विलोकिताः सर्वे दैन्यमाशु ब्रजन्ति ते।
ब्रह्मा शक्रो हरिश्चैव ऋषयः सप्तारकाः॥
राज्यभ्रष्टाः पतन्त्येते त्वया दृष्टयाव लोकिताः।
देशाश्च नगर ग्राम द्वीपाश्चैव तथा द्रुमाः॥
त्वया विलोकिताः सर्वे विनश्यन्ति समूलतः।
प्रसादं कुरु हे सौरे। वरदो भव भास्करे॥
एवं स्तुतस्तंदा सौरिर्ग्रहराजो महाबलः।
अब्रबीच्च शनिर्वाक्यं दृष्टरोमा च पार्थिव॥
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र। स्तोत्रेणानेन सुब्रत।
एवं वरं प्रदास्यामि यत्ते मनासि वर्तते॥

अर्थ—"सभी का विनाश करने वाले हे सूर्य पुत्र ! तुम्हें नमस्कार है। देवता, असुर, मनुष्य, पशु-पक्षी, सर्प आदि आपकी दृष्टि मात्र से ही दुःखी हो जाते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि पर तुम्हारी दृष्टि जब पड़ती है तो ये अपने पदों से हट जाते हैं। देश, नगर, ग्राम, द्वीप तथा वृक्षादि तुम्हारी दृष्टि पड़ते ही नष्ट हो जाते हैं। अतः हे सूर्यतनय! हमारे ऊपर प्रसन्न होकर तुम शुभवर दो। इस तरह दशरथ द्वारा स्तुति किये जाने पर महाबली ग्रहों के राजा शनि ने प्रसन्न होकर कहा—हे राजेन्द्र! मैं तुम्हारे इस स्तोत्र से प्रसन्न हूँ अब मैं तुम को ऐसा वर प्रदान करूँगा जो तुम्हारे मन में है।"

तंत्रोक्त शनिमंत्र

तंत्रोक्त शनि मंत्र का जप आरम्भ करने से पूर्व विधिपूर्वक विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास आदि करें—

विनियोग

अस्य श्री शनि मंत्रस्याथर्वण ऋषिः, गायत्री छन्दः, शनैश्चरो देवता, आपो बीजं, शं शक्तिः, अभीष्ट सिध्यये विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

अथर्वण ऋषये नमः — शिरसि
गायत्री छन्दसे नमः — मुखे
शनैश्चर देवतायै नमः — हृदये

आपोबीजाय नमः — गुह्ये
शं शक्तये नमः — पाद्यो

करन्यास

ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ख्रां तर्जनीभ्यां नमः ।
ख्रीं मध्यमाभ्यां नमः।
ख्रूं अनामिकाभ्यां नमः।
सः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ख्रां ख्रीं ख्रू सः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

अथ ध्यानम्

न्यासादि करने के उपरान्त निम्नलिखित मंत्र का पाठ करते हुए शनि देव के स्वरुप का ध्यान करें-

ॐ नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी गृध्र स्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदास्तु मह्यं वरदोल्पगामी॥

ध्यान के उपरान्त निम्न मंत्रों में से किसी एक मंत्र का जाप उसके सम्मुख दी गयी जप संख्या के अनुसार करें—

1. **ॐ शं शनैश्चराय नमः।** न्यूनतम जप संख्या 23 हजार है (तंत्रसार के अनुसार)

2. **ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।** यह तंत्रोक्त बीज मंत्र है। इसकी जप संख्या 19 हजार है

3. **ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं सः।** जप संख्या 19 हजार है।

साढ़ेसाती निवारक शनि यंत्र
(निर्माण विधि सहित)

मंत्रो की भांति यंत्र भी अति महत्त्वपूर्ण एवम् प्रभावी होते हैं। यंत्रों द्वारा भी शनि के साढ़ेसाती की अनिष्टता का निवारण हो सकता है। अशुभ प्रभाव कम हो सकता है। विधि पूर्वक जातक शनि यंत्र का निर्माण करके गले में या दाहिने हाथ के बाजू में धारण करे। चमत्कारिक लाभ हो सकता है—

यंत्र निर्माण विधि

शनिवार के दिन प्रातः काल उठकर दैनिक नित्य क्रिया से निवृत्त होकर

स्नानादि के पश्चात् यंत्र निर्माण का कार्य आरम्भ करें। अधिक उचित तो यह है कि यंत्र निर्माण का कार्य रात्रि काल (रात के समय) किसी एकान्त कमरे अथवा पीपील वृक्ष के नीचे पश्चिम दिशा की ओर शनिदेव की प्रतिमा आम की लकड़ी से बने, काले रंग के सिंहासन या लोहे के सिंहासन पर स्थापित करें। स्वयं पश्चिम की ओर मुख करके बैठें तत्पश्चात अष्टगंध मिश्रित काली स्याही से भोजपात्र पर नीचे बने यंत्र का निर्माण करें। विधिपूर्वक यंत्र स्थापित करके तेल का दीपक जलाये तथा शनिदेव का आवाहन, पूजन करें। पूजन कार्य पूर्ण होने पर यंत्र को प्रणाम करके काले स्वच्छ वस्त्र में लपेट कर ताबीज में भर ले। पुरुष इस महान चमत्कारिक यंत्र को अपने दाहिने हाथ के बाजू में अथवा गले में धारण करें। उपरोक्त यंत्र का प्रतिदिन पूजन करें तो अति उत्तम है।



तैंतीस अंकीय शनि यंत्र

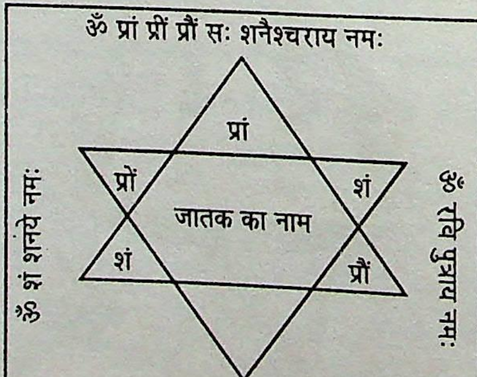
यह तैंतीस अंकीय शनि यंत्र अति विशिष्ठ एवम् प्रभावकारी है। इस यंत्र की रचना लोहे अथवा जस्ते के पत्र अथवा भोजपत्र पर काली स्याही से करें। स्याही को शुद्ध करने हेतु उसमें गंगाजल मिलायें तत्पश्चात् शनिवार के दिन किसी पीपल वृक्ष के नीचे अथवा किसी एकान्त स्थान में रात्रि के समय इस यंत्र का निर्माण करें। पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर दक्षिण-पश्चिम कोण पर शनि यंत्र स्थापित करके सम्मुख शुद्ध सरसों के तेल का दीपक प्रजवलित करें और निम्नलिखित मंत्रों में से किसी एक मंत्र का जाप पूर्व में दी गयी जप संख्या के अनुसार करें—

12	7	14
13	11	9
8	15	10

1. **ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।**
2. **ॐ खां खीं खौं सः शनैश्चराय नमः।**
3. **ॐ नमो भगवते शनैश्चराय सूर्य पुत्राय नमः।**

उपरोक्त मंत्र अति प्रभावकारी हैं। इन मंत्रों का जप करने से शनि देव प्रसन्न होकर सुख शांति प्रदान करते हैं। अनुष्ठान पूर्ण होने के पश्चात् यंत्र को बहते जल में प्रवाहित कर दें।

शनि पीड़ा निवारक अन्य यंत्र



यह यंत्र अति प्रभावकारी है, इसे शनि 'यंत्रराज' भी कहते हैं। साधक

शनिवार की रात्रि लगभग ग्यारह बजे स्नान करके घर के किसी एकान्त कमरे में पश्चिमाभिमुख होकर बैठे और पश्चिम की ओर शनिदेव की प्रतिमा लोहे के सिंहासन पर स्थापित करें। सिंहासन पर काले रंग का नवीन वस्त्र अवश्य बिछायें और स्वयं काले कम्बल पर आसीन होकर प्रतिमा के सम्मुख धूप-दीप जलावें। दीपक के पात्र में थोड़े से काले उड़द डाल दें। सरसों के तेल का ही दीपक जलायें। अथवा किसी विद्वान ब्राह्मण से पूजन करायें।

षोडशोपचार पूजन के पश्चात् भोजपत्र पर काजल की स्याही तथा लोहे की कलम से यंत्र का निर्माण करके यंत्र को लोहे अथवा तांबे के ताबीज में भरकर शनिदेव की प्रतिमा के समक्ष तांबें के प्लेट में रख दें और पूर्ण श्रद्धा विश्वास से देव के स्वरुप का ध्यान करते हुए मन ही मन कहें-

"हे शनिदेव! ब्रह्मा, इन्द्र विष्णु और सप्तर्षिगण तुम्हारी दृष्टि मात्र से अपने पद से पदच्युत हो जाते हैं। देश, नगर, ग्राम, द्वीप वृक्ष आदि तुम्हारी दृष्टि से नष्ट हो जाते हैं। हे सूर्यतनय ! मुझ पर प्रसन्न होकर मुझे साधना में मंगल वर प्रदान करो।"

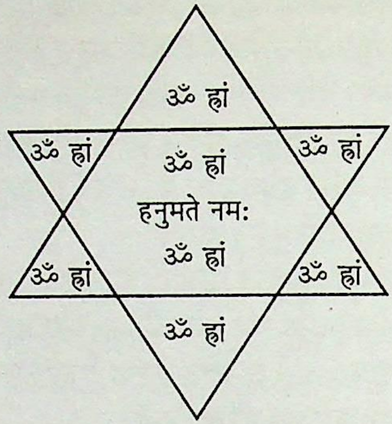
इस प्रकार निवेदन करके 'ॐ शं शनैश्चराय नमः।' का जप करते हुए काले अक्षत, काले पुष्प, दुर्वा आदि अर्पित करें तदुपरान्त शनिदेव की आरती करें। पूजन सम्पन्न होने के उपरान्त यथा शक्ति ब्राह्मणों को भोजन करायें एवम् दान दें। सच्चे मन एवम् पूर्ण श्रद्धा से किया गया पूजन निष्फल नहीं जाता।

हनुमत यंत्र

श्री हनुमान जी की पूजा आराधना से शनि की पीड़ा का हरण हो सकता है। इसी पुस्तक में पूर्व पृष्ठों पर वर्णित हनुमान जी ने शनि को रावण का बन्धन से मुक्त किया था जिस कारण शनिदेव ने स्वयं कहा कि जो तुम्हारी पूजा आराधना करेगा उससे मैं प्रसन्न होऊँगा। और भगवान श्री राम जी के परम भक्त हनुमान जी कहते हैं कि सर्वप्रथम मेरे स्वामी की पूजा हो। श्री हनुमान जी के स्वामी (श्री राम जी) का मंत्र निम्नवत है—

"ॐ नमो भगवते रामाय महापुरुषाय नमः॥"

स्नान आदि से पवित्र होकर उपरोक्त श्री राम मंत्र कम से कम एक माला (108 बार) जप प्रतिदिन करें। शनि पीड़ा का निवारक भगवान श्री राम की कृपा से हो सकता है। तदुपरान्त "ॐ हनुमते नमः।" का जप करते हुए 'हनुमत यंत्र' का निर्माण करें।



हनुमत यंत्र का निर्माण करने के बाद 'ॐ हनुमते नमः' का जप करते हुए गाय के दूध से बने हविष्य से 108 आहुतियां दें। इसके बाद कम से कम एक महीने तक प्रतिदिन प्रातः काल नियमानुसार एक माला 'श्री राम मंत्र' का जप करें। भगवान श्री राम की कृपा से 'हनुमत वीर' आप पर प्रसन्न होकर शनि पीड़ा का निवारण कर सकते हैं।

शनि अनिष्ट निवारक नीलम रत्न

शनि की अशुभता निवारण करने वाला रत्न नीलम है। नीलम रत्न धारण करने से शनि की अशुभता कम हो सकती है अथवा बिल्कुल भी समाप्त हो सकती है किन्तु इस रत्न को यूं ही धारण नहीं करना चाहिए क्योंकि किसी-किसी को यह उल्टा प्रभावित भी करता है। अतः सर्वप्रथम इसका परीक्षण कर लें। रत्न धारण करने से पूर्व शनिवार के दिन "ॐ शं शनैश्चराय नमः" मंत्र का जप करते हुए विधिवत् धूप दीप आदि दिखाकर पूजित करें तत्वश्चात काले वस्त्र में लपेटकर शनिवार की रात्रि को 24 घंटे के लिए दाहिने हाथ (Right Hand) के बाजू में धारण करें। रात्रि को स्वप्न में अथवा 24 घंटे के अन्दर कोई शुभ समाचार प्राप्त हो तो नीलम रत्न को अपने लिए शुभ माने। उसके बाद रत्न को सोने की अंगूठी में जड़वाकर शनिवार को दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली (Middle Finger) में धारण करें। सामान्यतः नीलम रत्न सवा पांच रत्ती से कम नहीं होना चाहिए अथवा किसी विद्वान ज्योतिषी से सलाह लेकर धारण करें।

नीलम किसके लिए भाग्यकारी होता है ?

1. जिन जातकों की कुण्डली में शनि अशुभ स्थान पर विराजित हो अर्थात् जातक को विपरीत फल प्रदान कर रहा हो।
2. शनि, सूर्य की राशि में विराजमान हो।
3. यदि शनि के साथ सूर्य विराजमान हो।
4. कुण्डली में शनि प्रधान ग्रह हो।
5. जातक पर शनि की साढ़ेसाती चल रही हो।
6. यदि शनि अपने भाव से छठे या आठवें स्थान पर विराजमान हो।
7. कुण्डली के चतुर्थ, पंचम, दशम अथवा एकादश भाव में शनि हो।

ऐसे जातकों के लिए 'नीलम-रत्न' धारण करना महान् प्रभावकारी एवम् लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

प्रभाव की अवधि

सामान्यत: नीलम रत्न का जातक पर 5 वर्ष तक प्रभाव रहता है पांच वर्ष के पश्चात् प्रभावकारी क्षमता निष्क्रिय हो जाती है अत: पांच वर्ष के पश्चात् इसे बेचकर नया नीलम धारण करना चाहिए।



श्री शनि चालीसा पाठ

॥ दोहा ॥

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल।
दीनन के दुःख दूरि करि, कीजै नाथ निहाल॥
जय-जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महाराज।
करहु कृपा हे रवि-तनय, राखहु जन की लाज॥

॥ चौपाई ॥

जयति-जयति शनिदेव दयाला।
करत सदा भक्तन प्रतिपाला॥
चारि भुजा तन श्याम बिराजै।
माथे रतन मुकुट छबि छाजै॥
परम विशाल मनोहर भाला।
टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला॥
कुण्डल कर्ण चमाचम चमके।
हिये भाल मुक्तन मणि दमके॥
कर में गदा त्रिशूल कुठारा।
पल विच करैं अरिहिं संहारा॥
पिंगल कृष्णों छाया-नन्दन।
यम कोणस्थ रौद्र दुःख भंजन॥
सौरि मन्न शनि दस नामा।
भानु पुत्र पूजहिं सब कामा।।
जापर प्रभु प्रसन्न होई जाहीं।
रंकहु राऊ करें क्षण माहीं॥
पर्वतहु तृण होई निहारत।
तृणहू को पर्वत करि डारत॥
राज मिलन बन रामहि दीन्हा।
कैकई की मति हरि लीन्हा॥
बनहूं मे मृग कपट दिखाई।
मातु जानकी गई चुराई॥

लषणहि शक्ति विकल करि डारा।
मचि गई दल में हाहाकारा॥
रावण की गति-मति बौराई।
रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई॥
दियो कीट करि कंचन लंका।
बीज बजरंग वीर की डंका॥
नृप विक्रम पर जब पगु धारा।
चित्र मयूर निगल गै हारा॥
हार नौलखा लग्यो चोरी।
हाथ-पैर कटवायो तूं ही॥
भारी दशा निकृष्ट दिखायो।
तेलिहुं घर कोल्हू चलवायौ॥
विनय राग दीपक महं कीन्हो।
तब प्रसन्न प्रभु ह्वैं सुख दीन्हो॥
हरिश्चन्द्र हुं नृप नारि बिकानी।
आपहुं भरे डोम घर पानी॥
वैसे नल पर दशा सिरानी।
भूंजी मीन कूद गई पानी॥
श्री शंकरहि गह्यो जब जाई।
पार्वती को सती कराई॥
तनि बिलोकत ही करि रीसा।
नभ उड़ि गयो गौरी सुत सीसा॥
पाडंव पर ह्वैं दशा तुम्हारी।
बची द्रोपदी होति उघारी॥
कौरव की भी गति-मति मारी।
युद्ध महाभारत करि डारी॥
रवि कँह मुख मँह धरि तत्काला।
लेकर कूदि परयो—पताला॥
शेष देव लीख विनती लाई।
रवि को मुख ते दियो छुड़ाई॥

वाहन प्रभु के सात सुजाना।
गज दिग्गज गदर्भ मृग स्वाना॥
जम्बुक सिंह आदि नखधारी।
सो फल ज्योतिष कहत पुकारी॥
गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं।
हय ते सुख सम्पति उपजावैं॥
गदर्भ हानि करै बहु काजा।
सिंह सिद्धकर राज समाजा॥
जम्बुक बुद्धि नष्ट करि डारै।
मृग दे कष्ट प्राण संहारै॥
जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी।
चोरी आदि होय डर भारी॥
तैसहिं चारि चरण यह नामा।
स्वर्ण लोह चांदी अरू ताम्बा॥
लोह चरण पर जब प्रभु आवैं।
धन सम्पति नष्ट करावैं॥
समता ताम्र रजत सुभकारी।
स्वर्ण सर्व सुख मंगलकारी॥
जो यह शनि चरित्र नित गावै।
कबहुं न दशा निकृष्ट सतावै॥
अद्भुत नाथ दिखावै लीला।
करैं शत्रु के नशि बल ढीला।
जो पंडित सुयोग्य बुलवाई।
विधिवत शनि ग्रह शान्ति कराई॥
पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत।
दीप दान दै बहु सुख पावत॥

॥ दोहा॥

प्रतिमा श्री शनिदेव की, लोह धातु बनवाय।
प्रेम सहित पूजन करे, सकल कष्ट कटि जाय॥
चालीसा नित नेम यह, कहहिं सुनहिं धरि ध्यान।
निश्चय शनि ग्रह सुखद बने, पावहि नर सम्मान॥

शनिदेव की आरती



ॐ जय शनिदेव हरे, प्रभु जय रविपुत्र हरे।
आरती जो तेरी गावे, संकट से उबरे॥
ॐ जय शनिदेव हरे॥ १॥
सूर्य पुत्र बलधारी, यम के हैं भ्राता।
छाया मातु भवानी, वाहन हैं भैंसा॥
ॐ जय शनिदेव हरे॥ २॥
तेरी क्रूर दृष्टि से, शिव ग्रासे घासा।
दशरथ नन्दन भटके, वन-वन में प्यासा॥
ॐ जय शनिदेव हरे॥ ३॥
गणपति पे की दृष्टि, सिर विच्छेद किए।
कुपित हुए रावण पे, लंका दहन किए॥
ॐ जय शनिदेव हरे॥ ४॥
पुत्र व नारी बिकाए, हरिश्चन्द्र राजा।
नल को वन भटकाए, तूने महाराजा॥
ॐ जय शनिदेव हरे॥ ५॥
होत प्रसन्न हैं जिनपे, बना देत राजा।
दृष्टि टेढ़ी करते, मिटते महाराजा॥
ॐ जय शनिदेव हरे॥ ६॥
देव-असुर व मानव, सब तुमसे डरते।
कुपित होत ही सबके सुख-सम्पत्ति हरते॥
ॐ जय शनिदेव हरे॥ ७॥
आरती जो तेरी गावे, विपदा कष्ट टरे।
सुख सम्पत्ति पावे, लक्ष्मी घर में बसे॥
ॐ जय शनिदेव हरे॥ ८॥

शनि के उपाय

शनि एक प्राकृतिक अशुभ ग्रह के रूप में होते हुए भी जब कुंडली में अनुकूल स्थान पर बली व बिना दुष्प्रभावित हुए बैठा हो तो दीर्घ जीवन, न्याय, लोकतांत्रिक आदर्श, मानवीयता, सहानुभूति, दार्शनिक सत्य, संपूर्ण संपन्नता, अच्छी हैसियत व पद, संयत वाणी, ईश्वर के प्रति श्रद्धा, अनुशासन, भक्ति भावना, सादगी, धैर्य, आत्म-नियंत्रण, अर्थव्यवस्था, उद्योग, कूटनीति, सत्य, ध्यान-केंद्रण और स्वास्थ्य आदि विषयों के लिए कारक और शुभ फल देने वाला होता है।



महामाया पब्लिकेशन्स